वैश्विक संवाद

10.2

17 भाषाओं में एक वर्ष में 3 अंक

टॉकिंग सोशियोलोजी एलेन कैले के साथ

साड़ी हनाफी

प्रतिरोध एवं आंदोलन

नगई लिंग सम
मिकालिस लियानोस
जोर्ज रोजस हर्नांडेज
गनहिल्ड हैनसेन–रोजास
रीमा माजेद

डिजीटल पूंजीवाद

मार्लेन वेन डेन इकर
मैरीसोल सैंडोवल
सेबास्टियन सेविग्नानि
मार्क एंड्रेजेविक
जैक लिनचुआन
टैनर मिरलीस
मैंडी ट्रोजर

सैद्धांतिक प्ररिप्रेक्ष्य

फ्रांसिस न्यामजोह

फिलिपिन्स से समाजशास्त्र

लुई बेनेडिक्ट आर. इग्नासियों
जॉन एंड्रयू जी इवेंजेलिस्टा
फिलोमिन सी. गुटिरेज
फोबे जो मारिया यू सांचेज

कोविड–19 : महामारी और संकट

ज्योफ्री प्लेयर्स
क्लॉस डोर्रे
साड़ी हनाफी

खुला अनुभाग

> बांग्लादेश में लैंगिक नगरीय स्थान
> श्रम का अंतराष्ट्रीयकरण एवं पूँजी का मुक्त संचरण
> चरम दक्षिण पंथ का सामना करता हुआ पुर्तगाल

पत्रिका

अंक 10 / क्रमांक 2 / अगॅस्त 2020
https://globaldialogue.isa-sociology.org/

GD

International Sociological Association

> सम्पादकीय

कोविड–19 महामारी और संकट दुनिया भर के कई देशों के विमर्श और विकास में हावी है। तथाकथित हॉटस्पाट या वैश्विक उत्तर और दक्षिण के देशों के मध्य की खाई दर्शाती है कि सामाजिक असमानताएँ कितनी महत्वपूर्ण होती हैं। आने वाले वर्षों में न सिर्फ स्वास्थ्य देखभाल बल्कि उत्तरगामी आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक विकास भी चिंता के विषय होगे। कुछ देशों मे आर्थिक संकट का अर्थ एक गहन चल रहा सामाजिक संकट है, और/या लोकतंत्र जो प्रतिबन्धात्मक राजनीति द्वारा खतरे में डाल दिया गया है। इस मुद्दे के साथ वैश्विक संवाद महामारी और समाज एवं समाजशास्त्र के लिए इसके अर्थ पर एक श्रृंखला प्रारभ करता है और विभिन्न देशों और क्षेत्रों से लेखकों को अपनी अंतर्दृष्टि का योगदान देने के लिए आंमत्रित करता है। इस श्रृंखला को प्रारम्भ करने के लिए, तीन लेखक कोविड–19 और उसके प्रभावों पर अपना चिंतन साझा करते हैं।

''टॉकिंग सोशियोलोजी'' के हमारे अनुभाग में साड़ी हनाफी, कन्विवियलिस्ट आंदोलन और घोषणा पत्र के सह–संस्थापक एलेन कैले के साथ एक साक्षात्कार आयोजित करते हैं। कैले नवउदारवादी दृष्टिकोण की आलोचना करते हैं, ''कन्विवियल्जिम'' की जड़ों का वर्णन करते हैं और यह दिखाते हैं कि यह एक ''रिक्त सिग्निफायर'' जो ऐसे लोगों को एक साथ लाता है जो एक ''उत्तर–नवउदार दुनिया'' को बनाने की आशा एव प्रयास करते हैं, के रूप में क्यों और कैसे कार्य करता हैं।

पिछले वर्षो में हमने लोकतंत्र–विरोधी प्रवृतियों, नवउदार विकास और बाजार संचालित आर्थिक एवं सामाजिक असमानताओं के खिलाफ बहुत सारे विरोध प्रदर्शनों को देखा है। सामाजिक आंदोलन और प्रतिरोधों के नये स्वरूप उभरे हैं और इन्होंने दुनिया के कई क्षेत्रों में संस्थापन की राजनीति को चुनौती है। हमारा पहला परिसंवाद नर्गई–लिंग सम, माइकलिस लियानोस, जार्ज रोजास हर्नांडेज, गुनहिल्ड हैनसन–रोजास और रीमा माजेद के साथ – हांगकांग, फ्रॅांस, चिली, लेबनान और इराक में स्थिति पर प्रकाश डालता है।

दूसरा परिसंवाद, लाभ की मुहिम के साथ मीडिया और संचार एक साथ किस प्रकार हमारे समाज को आकारित करते हैं, पर प्रकाश डालता है। मारलेन वैन डेन ईकर और सेबस्टियन सेविगनी द्वारा एकत्रित किये आलेख संचार के डिजीटीकरण और विपणन के विभिन्न पक्षों और प्रभाव पर प्रकाश डालते हैं। सोशल मीडिया के उपयोगकर्त्ताओं द्वारा अवैतनिक श्रमिकों की तरह कार्य करने और पूंजीवादी स्वामित्व के डेटा की भूमिका से लेकर चीन मे नये डिजिटलकर्मी और मीडिया प्रणालियों का पुनर्गठन इन पहलुओं में शामिल हैं और ये दर्शाते हैं कि ये प्रकियाएँ कैसे दुनिया के विभिन्न हिस्सों में पूंजीवाद के रूपांतरण के साथ–साथ चलती हैं।

'सैद्धान्तिक परिपेक्ष्य' का अनुभाग भी सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों के विषय को उठाता है। फ्रांसिस न्यामजोह पश्चिमी और मध्य अफ्रीका के ''मानव होने की अपूर्णता एवं समग्रता'' के पद्धतीय मीमांसा में जड़े मानवों के के विचारों पर चिंतन करते है और दर्शाते हैं कि यह प्रौद्योगिकियों के उपयोग से कैसे प्रभावित होता है।

एक विशेष देश या क्षेत्र के समाजशास्त्र पर केन्द्रित हमारे अनुभाग के लिए फिलोमिन गुटिरेज फिलीपींस से सहयोगियों को महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय मुद्दों और निष्कर्षों को प्रस्तुत करने के लिए आंमत्रित करते हैं। इसका परिणाम नगरीय अध्ययन, जन समाजशास्त्र और कई अन्य का एक प्रभावशाली संग्रह है।

हमारे खुले अनुभाग में शामिल आलेख महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय विषयों जैसे खुली जगह का लैगिकीकरण, श्रम अंतर्राष्ट्रीयता, वित्त पूंजीवाद और दक्षिणपंथी लोकलुभावनवाद की तरफ प्रतिक्रिया को संबोधित करते हैं।■

ब्रिजित ऑलनबैकर और **क्लॉस डोरे**
वैश्विक संवाद के संपादक

> वैश्विक संवाद आई.एस.ए. वेबसाइट पर 17 भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियाँ <globaldialogue.isa@gmail.com> पर भेजी जा सकती हैं।

International Sociological Association

GLOBAL DIALOGUE

> संपादक मण्डल

संपादक : ब्रिजिट ऑलनबॉकर, क्लॉस डोरे

सह–सम्पादक : जोहाना ग्रबनर, क्रिस्टीन शिकर्ट

सहयोगी सम्पादक : अर्पणा सुन्दर

प्रबंधन संपादक : लोला बुसुतिल, अगस्त बागा

सलाहकार : माइकल बुरावे

मीडिया सलाहकार : जुआन लेजाररगा

पराम र्श संपादक :
साडी हनाफी, ज्योफी प्लीयर्स, फिलोमिन गुतिरेज, एलोइजा मार्टिन, सावाको शिराहेस, इजाबेला बरलिंस्का, तोबा बेन्सकी, चिह–जुए जेचेन, जेन फ्रित्ज, कोइची हासेगावा, हिरोशी इशिदा, ग्रेस खुनो, एलिसन लोकोन्तो, सुसन मेकडेनियल, एलिना ओइनास, लोरा ओसो कैसास, बंडाना पुर्कायस्था, रोहड़ा रेडॉक, मौनीर सैदानी, आयसे सकतांबर, सेली स्कालोन, नाजानीन शाहरोकनी।

क्षेत्रीय संपादक

अरब दुनिया : *(ट्यूनिशिया)* मौनीर सैदानी, फातिमा रधौनी, हबीब हज सलेम; *(अलजीरिया)* सोराया मौलोदजी गराउदजी; *(मोरक्को)* अब्देलहादी एल हालहोली, सालिदा जाइन; *(लेबनान)* साड़ी हनाफी।

अर्जेन्टीना : एलेक्जेंड्रा ओतामेंडी, जुआन इग्नासिया पियोवानी, मार्टिन दी मार्को, पिलर पी पुइग, मार्टिन उर्टुसन।

बंग्लादे श : हबीबुल हक खोंडकर, हसन महमूद, यूएस रोकेय अख्तर, जुवेल राणा, तूफिका सुल्ताना, असिफ बिन अली, खैरून नाहर, काजी फदिया एशा, मुहिमिन चौधरी, हेलल उदीन, मोहम्मद यूनस अली, मुस्ताफीजुर रहमान, झिलिक साहा, मारिया सरदार, तहमीद उल इस्लाम।

ब्राजील : गुस्तावो तानिगुती, एंजेलो मार्टिन्स जूनियर, लुकास अमरल ओलिविरा, एंड्रेजा गली, दिमित्रि सर्बोन्सीनी फर्नाडीस, गुस्तावो डायस।

फ्रॉस/स्पेन : लोला बुसुतिल

भारत : रश्मि जैन, निधी बंसल, प्रज्ञा शर्मा, मनीश यादव, संदीप मील।

इंडोने शिया : कमांतो सुनार्तो, हरि नुग्रोहो, लूसिया रतीह, कुसुमादेवी, फिना इट्रियती, इंदेरा रत्ना इरावती पट्टिनसारानी, बेनेडिक्टस हरि जूलियावान, मोहम्मद शोहीबुद्दीन, डोमिंगगस एलसीडली, एंटोनियस एरियो सेतो हार्डजाना, डायना तेरेसा पाकासी, नुरूल ऐनी, गेगेर रियांतो, आदित्य प्रदान सेतियादी।

ईरान : नियाश डॉलाती, अब्बास शाहरबी, सैयद मोहम्मद मुतालेबी, फाजेह खाजेहजदे।

जापान : सतोमी यामामोता।

कजाकस्तान : अइगुल जाबिरोवा, बायन स्मागमबेट, आदिल रोदियोनोव, अल्माश त्लेसपयेवा, कुआनिश टेल, अलमागुल मुस्सीना, अकनूर ईमानकुल।

पौलैंड : एडम मुलर, जोनाथन स्कोविल, एलेक्सांड्रा बियरनाका, जेकब बारस्जेवस्की, एलेक्सांड्रा वेगनर, सारा हरस्जींस्का, मोनिका हेलक, एलेक्सांड्रा सेन्न, वेरोनिका पीक, एना वेन्दजल, जोफिया पेन्जा–गेबलर, जुस्तिना कोसिंस्का, इवोना बोजादज्जेवा।

रोमानिया : रालूकॉ पोपस्कू, रेइसा–गेब्रियला जेमफायरस्कू, डायना एलेक्सेंड्रा डुमित्रोस्कू, लुलिआन गेबर, बियांका मिहायला, एलेक्सांड्रा मॉसर, मिओरा पारासिव, मारिया स्तोइसेस्कू।

रूस : ऐलेना ज्द्रावोम्यस्लोवा, अनास्तासिया दौर, वेलेंटीना इसाऐवा।

ताईवान : वॉन–जू ली, बुन–की लिन, ताओ–यूंग ली, पो–सेंग होंग, यू–मिन हॉंग।

तुर्की : गुल कोरबासियोग्लू, इरमक एवरेन।

*गत कई वर्षों में, दुनिया भर के कई देशों ने सामाजिक आंदोलनों एवं जन प्रदर्शनों के उभार को देखा है। ये विरोध **प्रदर्शन और आंदोलन**, जो सबसे अधिक सड़कों पर व्यक्त किये गए, विभिन्न मुद्दों, लोकतांत्रिक– विरोधी प्रवृतियों, नवउदार विकास और बाजार संचालित आर्थिक एवं सामाजिक असमानताओं के प्रभावों के खिलाफ मांगों से निपटे। इस परिसंवाद में लेबनान, इराक, फ्रांस, चिली, एवं हांगकांग में होने वाले सामाजिक आंदोलनों एवं विरोधों पर चिंतन करने वाले चार आलेख सम्मिलित हैं।*

*यह खंड **फिलीपीन्स से समाजशास्त्र** के बारे में अंतदृष्टि प्रदान करता है। फिलीपीनी समाजशास्त्र संघ (पीएसएस) के सदस्य नगरीकरण एवं शासन, एलजीबीटी आंदोलन, नशीली दवाओं पर युद्ध में हिंसा, निर्धनों के मध्य जन समाजशास्त्र करना, और मिण्डानाओ क्षेत्र के हाशियेकरण जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए अपने समाजशास्त्रीय शोध पर चर्चा करता है।*

*इस अंक के साथ वैश्विक संवाद **कोविड –19** पर एक श्रंखला प्रारम्भ करता है। इसमें विभिन्न देशों एवं क्षेत्रों के लिए, पूर्ण समाज के लिए और समाजशास्त्र के लिए महामारी का अर्थ और परिणामों पर चर्चा होगी।*

GD

सेज प्रकाशन की उदार ग्रांट से ***वैश्विक संवाद*** का प्रकाशन संभव है।

> इस अंक में

सम्पादकीय 2

> टॉकिंग सोशियोलोजी

द कन्विवियलिस्ट मेनिफेस्टो : एक नई राजनैतिक विचारधारा
एलेन कैले के साथ एक साक्षात्कार
साड़ी हनाफी, लेबनान द्वारा 5

> प्रतिरोध एवं आंदोलन

वैश्विक घटनाक्रम एवं स्थानीय आंदोलन
जोहाना ग्रबनर, आस्ट्रिया द्वारा 8

हांगकांग प्रतिरोध 2019–20 : एक नव–फूकोवादी दृष्टिकोण
नगई लिंग सम, यूनाईटेड किंगडम द्वारा 9

अनुभवजन्य राजनीति और येलो वेस्टस
मिकालिस लियानोस, फ्रांस द्वारा 12

नव उदार असमानताओं के खिलाफ सामाजिक जागरूकता
जोर्ज रोजस हर्नांडेज एवं गनहिल्ड हैनसेन–रोजास, चिली द्वारा 15

इराक और लेबनान में अक्टूबर बगावतों को समझना
रीमा माजेद, लेबनान द्वारा 18

> डिजीटल पूंजीवाद

डिजीटल पूंजीवाद में मीडिया एवं संचार : आलोचनात्मक परिपेक्ष्य
मार्लेन वेन डेन इकर और सेबास्टियन सेविग्नानि,
जर्मनी द्वारा 20

डिजिटल शोषणः संचार और श्रम को जोडते हुये
मैरीसोल सैंडोवल, यूके और सेबास्टियन सेविग्नानि,
जर्मनी द्वारा 22

स्वचालित पूंजीवाद
मार्क एंड्रेजेविक, ऑस्ट्रेलिया द्वारा 25

सामयिकता और चीनी डिजिटल कामकाजी वर्ग का निर्माण
जैक लिनचुआन की, हांगकांग द्वारा 27

एक अमेरिका–चीन की प्रतिद्वंदिता? डिजिटल प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक उद्योग
टैनर मिरलीस, कनाडा द्वारा 29

मुक्त उत्तर–समाजवादी प्रेस के लिए एक मुक्त बाजार?
मैंडी ट्रोजर, लुडविग मैक्सिमिलन यूनिवर्सिटी ऑफ म्यूनिख,
जर्मनी द्वारा। 31

> सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

जूजू के रूप में आईसीटी : अफ्रीकी प्रेरणाएँ
फ्रांसिस न्यामजोह, दक्षिण अफ्रीका द्वारा 33

> फिलिपिन्स से समाजशास्त्र

फिलिपिन्स में समाजशास्त्र कार्य
फिलोमिन सी. गुटिरेज, फिलिपीन्स द्वारा 36

फिलीपींस में नगरीय अध्ययन : एक लंगर के रूप में समाजशास्त्र
लुई बेनेडिक्ट आर. इग्नासियों, फिलीपींस द्वारा 37

क्वीर लेंस के माध्यम से संघर्षों का मार्गनिर्देशन
जॉन एंड्रयू जी इवेंजेलिस्टा, फिलीपींस द्वारा 39

ड्रग्स पर फिलीपीनी युद्व के असंगत विवरण
फिलोमिन सी. गुटिरेज, फिलीपींस द्वारा 41

फिलीपींस में जन समाजशास्त्र को कार्य बनाना
फीबी जो मारिया यू. सांचेज, फिलीपींस द्वारा 43

फिलीपीनी समाजशास्त्र में मिंडनाओं का मुख्यधाराकरण
मारियो जॉयो अगुजा, फिलीपींस द्वारा 45

> कोविड–19 : महामारी और संकट

महामारी में वैश्विक समाजशास्त्र
ज्योफ्री प्लेयर्स, बेल्जियम द्वारा 47

कोविड–19 : वर्तमान महामारी से पहले सबक
क्लॉस डोर्रे, जर्मनी द्वारा 49

कोविड–पश्चात् विश्व में समाजशास्त्र
साड़ी हनाफी, लेबनान द्वारा 51

> खुला अनुभाग

बांग्लादेश में लैंगिक नगरीय स्थान
लुटफन नाहर लाटा, ऑस्ट्रेलिया द्वारा 53

श्रम का अंतर्राष्ट्रीयकरण एवं पूंजी का मुक्त संचरण
रैक्वेल वरेला, पुर्तगाल द्वारा 55

चरम दक्षिण पंथ का सामना करता हुआ पुर्तगाल
ईलीसीयो इसतानक्यू, पुर्तगाल द्वारा 57

“युवा लोग अधिकाधिक पारिस्थितिकीय खतरों की सन्निकटता के बारे में जागरूक हैं लेकिन वे स्पष्ट रूप से समझ नहीं पा रहे हैं कि नवउदारवाद के अधिपत्य के प्रश्न को उठाये बिना और लोकतान्त्रिक कल्पना को नया जीवन दिए बिना हम उनका सामना करने में सक्षम नहीं होंगे।”

एलैन कैले

> द कन्विवियलिस्ट मेनिफेस्टो

एक नई राजनैतिक विचारधारा

एलेन कैले के साथ साक्षात्कार

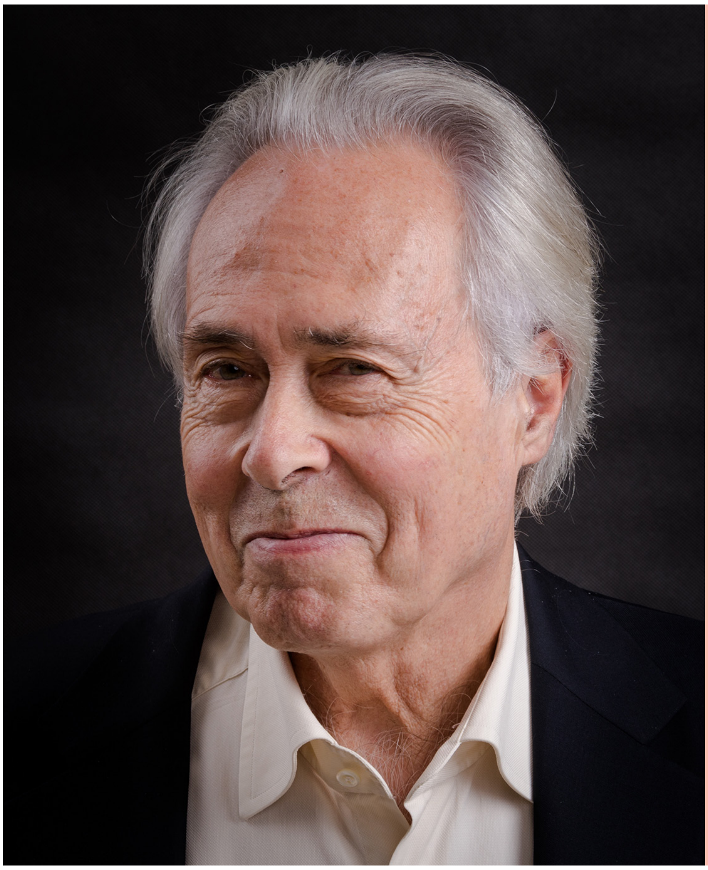

एलेन कैले पेरिस आस्ते नान्तर ला डिफेन्स विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के एमेरिटस प्रोफेसर हैं और *ला रूएवे टु एमएयूएसएस* (समाजविज्ञान में उपयोगितावादी–विरोधी आंदोलन) के संपादक है। वे समकालीन अर्थशास्त्र और समाजविज्ञानों में उपयोगितावाद की कट्टर आलोचना के लिए जाने जाते हैं। वे कन्विवियलिस्ट मेनिफेस्टो के प्रवर्तक है। इस घोषणापत्र के दूसरे संस्करण (इंटरनेशनल कन्विवियलिस्टे, *सेकेंड मेनिफेस्ते कन्विवियलिस्ते, पोर उन मोंडे पोस्ट नियोलिबरल,* फरवरी 2020) के विमोचन के अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र संघ (आईएसए) के अध्यक्ष, **साड़ी हनाफी** ने उनके साथ यह साक्षात्कार आयोजित किया।

एलैन कैले, साभारः एलैन कैले

एसएच : क्या आप हमारे पाठकों को कन्विवियलिस्ट मेनिफेस्टो से परिचित करा सकते हैं?

एसी : इसकी अन्तर्वस्तु के बारे में बात करने से पहले, कन्विवियलिस्ट मेनिफेस्टो 33 भिन्न देशों से लगभग 300 बुद्विजीवियों (अर्थशास्त्रियों, दार्शनिकों, समाजशास्त्रियों, सामुदायिक कार्यकर्ताओं) और कलाकर शख्सियतों द्वारा सह–हस्ताक्षरित है। वे एक प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय कन्विवियलिस्ट (इस नाम को मेनिफेस्टो के सामुहिक लेखन को चित्रित करने के लिए चुना गया है) के भ्रूण का निर्माण करते हैं। यह एक अंतर्राष्ट्रीय, पूर्णतः अनौपचारिक, जिसका कोई कार्यालय नहीं है, कोई संगठन नहीं (सिर्फ कुछ गुडविल) और फंडिग नहीं, लेकिन जो 300 प्रारम्भिक हस्ताक्षरों से कहीं अधिक, अन्य बुद्विजीवियों, कार्यकर्ताओं एवं कलाकारों, तक मेनिफेस्टो को प्रसारित करने में और उससे अधिक, विश्व जनमत में एक निर्णायक बदलाव परिवर्तन को उकसाने में सक्रिय रहा है। कई दशकों से, जैसा ग्राम्शी कहते हैं, हम नवउदार विचारधारा के प्रभाव के कारण आधिपत्य के तहत जी रहे हैं जो हमें अपने अलावा किसी ओर दुनिया की कल्पना करने से रोकती है और यह पूरी तरह से एक किरायाजीवी और सटटेबाज पूंजीवाद के व्यादेश को समर्पित है। इसकी प्रकृति के कारण, यह घुमावदार असमानताओं को उत्पन्न करता है जो दिन प्रतिदिन लोकतांत्रिक आदर्शों को अपनी अंतर्वस्तु से खाली करता है। तानाशाहों से छुटकारा पाने का प्रयास कर रहे हैं देशों को छोड़कर, इन आदर्शों में कम और कमतर 'विश्वास' है, विशेष कर युवा लोगों में। यह स्पष्ट रूप से विनाशकारी है। लोकतंत्र अब दुनिया में सब तरफ खतरे में है, जैसा वह 1930 के दशक में यूरोप में था। इसके साथ, समाजशास्त्र से प्रारम्भ हो, वह सब कुछ जो विवेचनात्मक सोच का हिस्सा है, गायब होने के खतरे में हैं।

>>

एसएच : नवउदार विचारधारा इतनी शक्तिशाली क्यों हैं?

एसी : बेशक, यह महाकाय सामग्री, आर्थिक, वित्तीय, सैन्य, पुलिस मीडिया और कभी–कभी आपराधिक संसाधनों द्वारा समर्थित है। लेकिन एक कम ज्ञात लेकिन आवश्यक अन्य कारक भी है जो कन्विवियलिस्म का उद्देश्य है : अब तक, कोई वैकल्पिक विचारधारा नहीं है, विचारों, अवधारणाओं, सिद्वांतों और मूल्यों का कमोबेश सुसंगत सेट नहीं है जिसके नाम पर उन सब अनगिनत को एकत्रित किया जा सकता है जो पूरी तरह से वित्तीय एवं विचार योग्य तर्क के द्वारा शासित दुनिया के अलावा अन्य की आकांक्षा करते हैं। जैसा कि हम जानते है, दुनिया असाध्य जलवायु एवं पर्यावरणीय आपदाओं में गिरने के कगार पर है। धनी देशों में, युवा लोगों में इन पारिस्थतिक खतरों के सन्निकटता के बारे में जागरूकता है, लेकिन वे यह नहीं देखते हैं, या स्पष्ट रूप से यह बूझते नहीं हैं कि हम नवउदारवाद के आधिपत्य पर प्रश्न किये बिना उनका सामना करने में सक्षम नहीं होंगें और लोकतांत्रिक कल्पना को नया जीवन दिये बिना ऐसा करना संभव नहीं होगा।

एक आदर्श–विशिष्ट तरीके से, चलिए कहते हैं कि नवउदार विचारधारा छः निम्न प्रस्थापनाओं के आस–पास आयोजित होती हैः 1) कोई समाज नहीं हैं, सिर्फ व्यक्ति हैं। 2) लोभ अच्छा है। 3) समाज जितना समृद्व है उतना अच्छा है क्योंकि हर कोई को ट्रिकल–डाउन प्रभाव से लाभान्वित होगा। 4) मानवों के मध्य समन्वय का एकमात्र वांछनीय उपाय मुक्त बाजार है, जिसमें स्व–नियमित वित्तीय एवं सट्टा बाजार सम्मिलित है। 5) कोई सीमा नहीं है। अधिक का आवश्यक रूप से अर्थ बेहतर है। 6) कोई विकल्प नहीं है। आश्चर्यजनक बात यह है कि इन प्रस्थापनाओं में से किसी की भी कोई वास्तविक सैद्वान्तिक या आनुभाविक संगति नहीं है। और फिर भी हम आश्वस्त नहीं है कि उनका क्यों विरोध करना है।

एसएच : आप इसकी व्याख्या कैसे करते हैं?

एसी : यदि हम नवउदारवाद के सामने नपुसंक बने रहते हैं तो ऐसा इसलिए है क्योंकि महान आधुनिक राजनैतिक विचारधाराएं, जिन्हे हमने विरासत में पाया है : उदारवाद, समाजवाद, साम्यवाद, अराजकतावाद (और हम इन्हें अपनी सुविधानुसार जोड़ देते है), आज जिन समस्याओं का सामना हमें करना पड़ रहा है, से अब निपटने में सक्षम नहीं है। इसके कम से कम तीन कारण हैं : (1) ये सभी विचारधाराएं, कम से कम इनके मुख्य प्रकार, इस मान्यता पर आधारित हैं कि मनुष्य सर्वप्रथम आवश्यकताओं वाला प्राणी है और उनके बीच संघर्ष संसाधनों के अभाव के कारण होता है जिससे यह परिणाम निकलता है कि प्रथम अनिवार्यता और अधिक उत्पादन करने की है। (2) यह ''समाधान'' तब तक मान्य है जब तक प्रकृति अक्षय और अनंत तक उपयोज्य प्रतीत होती है (जब तक कि हम धर्म निरपेक्ष ठहराव के खतरे में नहीं हैं [एक ऐसी स्थिति जब बाजार आधारित अर्थव्यवस्था में नगण्य वृद्वि हो, जिसका कई अर्थशास्त्री निदान कर सकते हैं]। हम जानते हैं कि ऐसा मामला नहीं है। (3) हमें जरूरतमंद प्राणी समझने में, ये विचारधाराएं संघर्ष के अन्य स्रोत, कम से कम संसाधन अभाव के समान महत्वपूर्ण, सम्मान की इच्छा को नजरअंदाज करते हैं। परिणामस्वरूप, ये हमें उन संभावित तरीकों के बारे में कुछ नहीं बताते जिनमें संस्कृति और धर्म देशों के मध्य या तो उनके भीतर और यहां पुरूष और महिला के मध्य संबंधों में सह–अस्तित्व में रह सकते हैं।

कन्विवियलिज्म शब्द को इस प्रकार कम से कम एक रिक्त सिगनिफाइर (लेवी–स्ट्रास के अनुसार *माना* के बराबर...) के रूप में देखा जा सकता है, जो एक नई राजनैतिक विचारधारा की उम्मीद का प्रतीक है जिसमें वे सब जो एक उत्तर–नवउदार दुनिया का निर्माण करने की अभिलाषा रखते हैं स्वयं को पहचान सकते हैं। इस शब्द के तहत प्रत्येक अपनी आंकाक्षाओं और हितों को रख सकते हैं।

एसएच : लेकिन एक नई राजनैतिक विचारधारा को नाम देने के लिए क्या ''कन्विवियलिज्म'' सम्बोध सबसे अच्छा चयन हैं?

एसी : क्या यही सही शब्द हैं? और क्या वास्तव में नवउदारवाद समस्या है? क्या यह सही शब्द है? अंग्रेजी और फेंच में कन्विवियलिटी दोस्तों के साथ खाने और एक साथ अच्छा समय बिताने की कला है। इस तरह कन्विवियलिटी शब्द में थोड़ा ''अच्छा'' अर्थबोध है जो हमारे कुछ संभावित समर्थकों को विकर्षित करता है। हालांकि, हम एक साथ रहने के दर्शन (कन्विवियलिटी के) के लिए एक बेहतर सम्बोध नहीं सोच सके जो हमें यह पूछने में मदद करता है कि लोग कैसे ''एक दूसरे का संहार किये बिना विरोध'' कर सकते हैं (जैसा मार्सेल मॉस ने कहा था) और सहयोग कर सकते है। क्या यह सही समस्या है? हमारे द्वारा सम्पर्क किये गए कुछ विद्वानों ने यह कहकर हस्ताक्षर नहीं किये कि आज की महत्वपूर्ण समस्या नवउदारवाद का आधिपत्य नहीं है बल्कि लोकलुभावनवाद का उभार है। यह परवर्ती वास्तव में नवउदार आधिपत्य का परिणाम है, एक तरह से उसका दूसरा रूप। इसके बारे में सन्देह दूर करने के लिए हमें कार्ल पोलान्यी की *द ग्रेट ट्रांस्फोंमेशन* को फिर से पढना होगा।

एसएच : कन्विवियलिज्म के मूल सिद्वांत क्या हैं?

एससी : ''कन्विवियलिज्म'' सिर्फ एक रिक्त सिग्निफाइर, आशा का प्रतीक नहीं है। मेरी तरफ से, मैं इस तथ्य से प्रसन्न हूँ कि अत्यंत विविध बौद्विक शख्सियतें – कुछ के लिए उदार या समाजवादी प्रेरणा वाली, अन्य के लिए साम्यवादी या निरंकुशवादी – जिसमें भिन्न धार्मिक परम्पराओं को नहीं भूलना चाहिए – पांच आधारभूत मूल्यों या सिद्वांतों पर, जिनका मैं यहां विस्तार नहीं कर सकता – सहमति बना पाये हैं : सामूहिक प्रकृति, सामूहिक मानवता, सामूहिक समाजिकता, वैध व्यष्टियवन और रचनात्मक विरोध (एक दूसरे का संहार किये बिना विरोध कर सहयोग करना)। ये पांच सिद्वांत एक सामान्य स्वसिद्व क्षेत्र का निर्माण करते हैं जो संभावित वैध राजनैतिक विकल्पों को सीमित करता है। वे एक दूसरे को मिलाते हैं। लेकिन वे सभी एक अनिवार्यता के अधीन रहते हैं जिसे सुस्पष्ट रूप से कहा जा सकता है : अधिकता और हेकड़ी के खिलाफ आवश्यक निपुणता। मानवता के पास हेकड़ी की प्रवृत्ति को कैसे नियन्त्रित किया जाए सीखने के लिए बहुत कम ही समय बचा है। शायद समाजशास्त्र का प्राथमिक कार्य ऐसा करने में मदद करना है।

एसएच : क्या आपका सामजशास्त्र नैतिक दर्शन के साथ समाजशास्त्र को जोड़ने का आह्वान करता हैं?

एसी : अन्य बातों के मध्य, हॉ। मैं समाजशास्त्र के महान क्लासिक्स, मार्क्स, टोकेविले, वेबर, दुर्खीम इत्यादि को, यद्यपि एक विशिष्ट प्रकार के, नैतिक और राजनैतिक दार्शनिकों के अलावा किसी रूप में नहीं पढ सकता हूँ। हॉब्स और रूसो (जिन्होंने कहा : ''सभी तथ्यों को एक तरफ रखते है'') के विपरीत, दार्शनिक तथ्यों और इनकी ऐतिहासिकता के बारे में चिंतित हैं। वे मानवशास्त्र के बारे में भी चिंतित हैं। हम अपने वर्तमान को बिना यह देखें समझ सकते हैं कि पूर्व सामाजिक स्वरूपों में से इसमें क्या बचा है? इसलिए मार्सेल मॉस में मेरी रूचि है जो दिखाते हैं कि प्रारम्भिक समाजों ने अपने सदस्यों को उनकी भेंट के या फिर जिसे प्रघटनाशास्त्र परम्परा दान कहती है, में भागीदारी के अनुपात में सम्मान प्रदान

>>

करने के लिए स्वयं को कैसे संगठित किया। इस क्षेत्र की सबसे अच्छी ज्ञात अभिव्यक्ति *माना* है। नैतिक दर्शन के इस आयाम के बिना, क्लासिक्स हमसे बात नहीं करेंगे और हमें रूचिकर नहीं लगेंगे। एक समाजशास्त्र जो स्वयं को तथ्य स्थापित करने तक सीमित करेगा—एक अपरिमित कार्य (कौन से तथ्य, कैसे? क्यों?)—शुष्क हो जायेगा और स्वयं को निरर्थक घोषित कर देगा।

एसएच : नैतिक उद्यमियों में धार्मिक प्राधिकारी हैं। क्या आपकी उनके साथ चर्चा/सहयोग की योजना है?

एसी : मेरा दृढ विश्वास है कि हमें धमकाने वाली आपदाओं – पारिस्थितिक, आर्थिक, वित्तीय, सामाजिक, राजनैतिक और नैतिक—से बचने का एकमात्र मौका दांव पर लगे मुद्दों की तीव्रता और तात्कालिकता के बारे में वैश्विक जागरूकता है। अभी हावी वित्तीय और सट्टा पूंजीवाद द्वारा उत्पन्न नुकसान के खिलाफ (आप यह देखेंगे कि मैं सामान्य रूप से पूंजीवाद के बारे में कुछ नहीं कह रहा हूँ ...) हमें जितना संभव हो अधिक से अधिक देशों में बहुसंख्यकों का जनमत जुटाने में सफल होना पड़ेगा। मैं यह नहीं कह रहा कि यह आसान होगा या हमारे पास सफलता का एक बड़ा मौका है, लेकिन यह स्पष्ट है कि धार्मिक प्राधिकारियों के समर्थन के बिना सफलता संभव नहीं है। यही कारण है कि द्वितीय घोषणापत्र *ह्यूमन फ्रेटरनिटी फार वर्ल्ड पीस एण्ड लिविंग टूगेदर* के घोषणापत्र में से काफी लंबे अवतरण उद्वरित करता है। इस घोषणापत्र पर 4 फरवरी 2019 को ईसाइयों के नाम पर पोप फ्रांसिस ने और मुस्लिमों के नाम पर अल—अजहर (मिस्र) के ग्रांड ईमाम अहमद—अल—तैयब ने सह—हस्ताक्षर किये। और मैं यह नहीं देख पता हूँ कि प्रोटेस्टेंट, बौद्व, यहूदी आदि धार्मिक प्राधिकारी इसके साथ क्यों नहीं जुड़े। शायद हमें तुरन्त ही वर्ल्ड एसेम्बली ऑफ कॉमन हयूमेनिटी जैसा कुछ बनाना चाहिए जिसमें विश्व नागरिक समाज के, दर्शनशास्त्र के और तथा—कथित ''शुद्व'' विज्ञानों के, मानवीय एवं सामाजिक विज्ञानों के और विभिन्न नैतिक, आध्यात्मिक और धार्मिक धाराओं के प्रतिनिधियों को सम्मिलित करना चाहिए जो कन्विवियलिज्म के सिद्वांतों में स्वयं को पहचानेगें। मुझे ऐसा लगता है कि आईएसए (अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र संघ) इसमें प्रभावी भूमिका निभा सकता है।

एसएच : क्या इस घोषणापत्र पर चिंतन को वैश्विक दक्षिण के लिए इसकी उपयोगिता/वैधता के लिए सत्यापित किया गया है? क्या इन देशों में कोई शोध किया गया है?

एसी : मैं हॉ और नहीं में इसका उत्तर दूंगा। हॉ, क्योकि हस्ताक्षरकों की एक महत्वपूर्ण संख्या, जिसे आप वैश्विक दक्षिण कहते है, से आती है और क्योंकि दक्षिण से कई मित्र कन्विवियलिज्म पहल से इसके प्रथम घोषणापत्र (2013) से जुड़े हुए हैं। और, दुर्भाग्य से नहीं, क्योंकि अधिकांश लेखन और आलेखन का कार्य उत्तर में हुआ। अब एक महत्वपूर्ण कदम दक्षिण के द्वारा कन्विवियलिस्ट चिंतन के विनियोजन एंव संवर्धन का है। पुर्तगाली एवं स्पेनिश (अंग्रेजी, जर्मन, इतावली एवं जापानी के अतिरिक्ति) में इसका अनुवाद किया जा रहा है और मित्रों से इसे अर्जन्टीना, ब्राजील, मेक्सिको ले जाने की अपेक्षा है और साथ ही भारत, अफ्रीका इत्यादि में भी। अरबी में इसका अनुवाद कई कारणों से विशेष रूप से महत्वपूर्ण होगा। लेकिन चलिए मुद्दे पर आते हैं। मैं कहूँगा कि यह *द्वितीय घोषणापत्र* महत्वपूर्ण पारिस्थितिकीय, आर्थिक और राजनैतिक मुद्दों पर एक उत्तर—नवउदावरवादी मतैक्य की नींव रखता है। यह पहले से काफी अच्छा है। लेकिन अभी भी उत्तर—उपनिवेशी, लैंगिक, सबाल्र्टन, सांस्कृतिक परिपेक्ष्यों द्वारा चलाई गई सभी बहसों को एकीकृत करने के लिए काफी काम करना बाकी है। यह एक *तृतीय कन्विवियलिस्ट घोषणापत्र* होगा (जिसमें भी अंत में नवीनीकरण की आवश्यकता होगी), या कम से कम जिसे हम कन्विवियलिस्ट घोषणापत्रों का पूरक कह सकते हैं। और यहां दक्षिण का योगदान पूरी तरह से अपरिहार्य होगा।

एसएच : क्या आप कन्विवियलिज्म के प्रसार के बारे में आशावादी हैं?

एसी : मुझे लगता है कि द्वितीय कन्विवियलिस्ट घोषणापत्र राजनैतिक दर्शन की नींव रखता है जिसकी हमें अविलम्ब आवश्यकता है। लेकिन एक राजनैतिक दर्शन नीति का निर्माण नहीं करता है। आगे बढ़ने के लिए, अब ''राजनैतिक उद्यमियों'' द्वारा इसे हाथ में लेना, और मूर्त रूप से प्रत्येक देश में यह दिखाना कि लगभग सभी (सामान्य कर्मचारी, अनिश्चित श्रमिक, लघु व्यापारी या उद्यमी, अलग—अलग आबादी आदि) कन्विवियलिज्म से क्या लाभ प्राप्त कर सकते है, आवश्यक है। इन सभी सामाजिक श्रेणियों में, यदि, अधिक लोग स्वयं यह सोचने लगें और एक दूसरे को कहे, ''मैं एक कन्विवियलिस्ट हूँ'', तब हमारे पास ऐसी आपदाएं जो हमारी राह देख रही हैं, से बचने का एक मौका होगा।

एसएच : धन्यवाद एलेन, मैं आपके कन्विवियलिस्ट घोषणापत्र के लिए आपको शुभकामनाएं देता हूँ। ■

सभी पत्राचार एलेन केले को <alaincaille90@gmail.com> पर साड़ी हनाफी को <sh41@aub.edu.lb> पर प्रेषित करें।

> वैश्विक विकासक्रम एवं स्थानीय आंदोलन

जोहाना ग्रबनर, जोहान्स केप्लर विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रिया एवं वैश्विक संवाद की सहायक सम्पादक द्वारा

कोविड–19 के विस्फोट लोगों की गतिविधियों एवं एकत्रित होने के अधिकार पर प्रतिबंधों के लागू होने के पूर्व, दुनियाभर के कई देशों ने मार्च और प्रदर्शनों में व्यक्त होते हुए सामाजिक प्रतिरोधों का उभार देखा। इन से प्रतिरोधों ने, जो सर्वाधिक रूप से सड़कों पर व्यक्त हुए, विभिन्न मुद्दो एवं माँगों को उठाया। इस परिसंवाद में लेबनान, इराक, फ्राँस, चिली, और हांगकांग में होने वाले इन सामाजिक आंदोलनों और प्रतिरोधों के विशिष्ट स्वरूपों पर चिंतन करने वाले पाँच आलेख सम्मिलित हैं।

यह परिसंवाद नगई–लिग सम के आलेख के साथ प्रारम्भ होता है जो जून 2019 में हांगकांग की सड़को पर होने वाले प्रदर्शनों की जाँच करते हैं। सम इन प्रदर्शनों की नव–फूकोवादी परिपेक्ष्य से व्याख्या करती हैं और दिखाती है कि अनुदार अधिनायकवादी परिस्थितियों में ये कैसे एक सामाजिक आंदोलन में फैल गये, यह संघर्ष किस प्रकार संप्रभुता के नियन्त्रण पर बढ़ते जोर के माध्यम से असंगत पुलिस हिंसा के द्वारा व्यक्त हुआ और फ्रंटलाइन विद्रोहियों की सकारात्मक जैव राजनीति कैसे (निकट) मृत्यु से जीवन की रक्षा में परिणत हुई।

नवम्बर 2018 में, येलो वेस्टस के द्वारा विरोध प्रदर्शन पूरे फ्राँस में उभरे और इन्होंने सामाजिक आदोलन का एक नया ढाँचा और प्रथा प्रारम्भ की। अपने आलेख में, माइकलिस लियानोस हमें इस आंदोलन के सहज और गैर–पक्षपातपूर्ण स्वरूप की अन्तर्दृष्टि प्रदान करते हैं जो सामूहिक राजनैतिक कार्यवाही और चिन्तनशीलता के संगठन, वास्तुकला और सफलता की हमारी समाजशास्त्रीय समझ को चुनौती देता है।

चिली में 40 वर्ष की नवउदार राजनीति और चल रहे विरोध प्रदर्शनों के बाद, चिली निवासियों में एक नई मुक्तिवादी चेतना विकसित हुई जिसने अक्टूबर 2019 में विशाल और रचनात्मक प्रतिरोधों को ट्रिगर किया। जार्ज रोजस हर्नांडेज और गनहिल्ड हैनसन–रोजस ने नवउदारवाद से उभरे देश के सामाजिक संकट, अनूठा ऐतिहासिक अवसर, जिसका सामना चिली कर रहा है और एक नये संविधान के निर्माण पर एक जनमत संग्रह से समाह्वान के नेतृत्व करने वाले सामाजिक प्रतिरोधों का वर्णन किया है।

हम इस परिसंवाद को रीमा माजेद द्वारा अक्टूबर 2019 में इराक और लेबनान में होने वाली बगावतों की जाँच के साथ समाप्त करते हैं। माजेद इन बगावतों को सहवर्तनिक लोकतंत्र रूप में जाने वाली राजनैतिक व्यवस्था में उभरने वाली क्रांतिकारी प्रकिया के सदंर्भ में विश्लेषण करते हैं। खोये हुए ''हम'' की तलाश में, सामाजिक कर्त्ताओं को, सांप्रदायिक शक्ति–बँटवारे की प्रणाली को खारिज करते हुए, सामाजिक–आर्थिक न्याय की माँग पर अपना सामाजिक एवं राजनैतिक केन्द्र बिन्दु रखना पड़ता है।■

> हांगकांग के विरोध प्रदर्शन 2019–20

एक नव फूकोवादी दृष्टिकोण

नगई–लिंग सम, लंकास्टर विश्वविद्यालय, यूनाईटेड किंगडम द्वारा

हांगकांग में पुलिस की अश्रु गैस से छातों से स्वयं की रक्षा करते हुए प्रदर्शनकारी, 2019। जे ली द्वारा चित्र

वर्ष 2019 जून, हांगकांग के विरोध प्रदर्शन एक प्रत्यार्पण विधेयक, जो यदि पारित हो जाता है तो हांगकांग के नागरिकों/आंगुतकों को चीन में उसकी कानूनी व्यवस्था के अंदर (और नियम के नहीं) आपराधिक मुकदमा चलाने के लिए देश– प्रत्यार्पण की अनुमति देगा, द्वारा ट्रिगर हुए थे। यह एक देश–दो प्रणाली ढांचे के तहत हांग कांग में उसकी ''उच्च स्तर की स्वायत्तता'' खोने के स्थानीय भय को प्रज्जवलित करता है। 1984 के चीन–ब्रिटिश संयुक्त घोषणा पत्र और चीन के 1990 के बुनियादी कानून द्वारा जब हांगकांग को 1997 में विशेष प्रशासकीय क्षेत्र (एसएआर) के रूप में चीन को लौटाया गया था, तब इसकी गारण्टी दी गई थी। इस ढांचे के तहत, हांग कांग में कार्यकारी और विधायी शक्तियां, एक स्वतंत्र न्यायपालिका के साथ–साथ स्थानीय स्तर पर आयोजित चुनाव या परामर्श के आधार पर केन्द्र सरकार द्वार मुख्य कार्यकारिणी की नियुक्ति का अधिकार निहित है।

2003 से, स्वायत्तता खोने का यह डर चीन के संप्रभु एक–देश जीवन के और अधिक प्रभावी बनने से तीव्र हो रहा है। उदाहरणों में चीन–समर्थक कानूनों जिसमें 2003 के अनुच्छेद 23 के उन्मूलन–विरोधी विधेयक से लेकर 2019 का राष्ट्रीय (चीनी) गान अधिनियम को रोल आउट करना सम्मिलित हैं। ये उपाय हांगकांग के लोकतान्त्रिक तत्वों जैसे 2015 में मुख्य कार्यकारिणी के प्रत्यक्ष चुनाव की अस्वीकृति और 2017 में छः लोकतंत्र–समर्थक विधायकों को पद से अयोग्य ठहराने के रोल आउट होने के साथ आये। एक–देश जीवन के द्वारा इस तरह का अतिक्रमण 2019 के प्रत्यार्पण अधिनियम के फास्ट ट्रेक होने से और गहरा गये। चीनी केन्द्रीय सरकार के समर्थन से एसएआर सरकार ने समिति स्तर पर सामान्य विधायी जांच को भी लांघ दिया और वह बिल को सीधे ही चीन समर्थक विधायिका के पास मंजूरी के लिए ले गई। ऐसी अत्यावश्यकता के सामने, पहले एक, और फिर दो मिलियन लोगों ने जून 9 और 16 को क्रमशः शांतिपूर्ण मार्च में भाग लिया। विलम्बित आधिकारिक प्रत्युत्तर और पुलिस क्रूरता के साथ, विरोध प्रदर्शन नियमित रूप से होते हैं। प्रदर्शनकारियों की 5 मांगें हैं : प्रत्यपर्ण विधेयक को वापिस लो; प्रदर्शनकारियों को ''दंगाई'' के रूप में वर्णित करना बंद करो; सभी गिरफ्तार प्रदर्शकारियों के लिए क्षमादान जारी करना; पुलिस की बर्बरता की स्वतंत्र जांच करना; और हांग कांग की मुख्य कार्यकारिणी एवं विधान परिषद के चुनावों के लिए सार्वभौमिक मताधिकार प्रदान करना। आखिरकार 4 सितम्बर 2019 को विधेयक को वापस ले लिया गया। हालांकि, आवर्ती पुलिस क्रूरता/बर्बरता और मुख्य कार्यकारिणी की प्रदर्शनकारियों की चार अन्य मांगों को पूरा करने से इंकार के कारण (देखें तालिका 1) >>

प्रतिरोध एक सामाजिक आंदोलन में उत्तरोत्तर बढ गया।

इस विरोध का एक सामाजिक आंदोलन के रूप में विश्लेषण करने में, यह आलेख नव–फूकोवादी दृष्टिकोण को प्रयोग में लेता है जो जीवन/मृत्यु के संप्रभु जैव–राजनीति पर ध्यान केन्द्रित करता है। फूको के लिए, संप्रभुता खुद को एक क्षेत्र पर शासन करने के अधिकार के रूप में देखती हैं और अपनी सुरक्षा/हिफाजत को बनाये रखने के लिए जीवन/मृत्यु की जैव–राजनीति में संलग्न होती है। आधुनिक समाजों में संप्रभुता की डिग्री अलग–अलग होती है और ये लोकतांत्रिक के बजाय अनुदार अधिनायकवादी संदर्भों में अधिक दृष्टिगोचर होती है। हांगकांग में एक–देश जीवन के प्रारम्भ से, एसएआर सरकार हांगकांग की स्थिरता/सुरक्षा को बनाये रखने के लिए चीन के एक–पार्टी शासन के साथ सह–संप्रभु शासन में संलग्न होती है। हांगकांग के प्रदर्शनकारी इस अधिनायकवादी सह–शासन के हाशिये पर रहते हैं और उनके पास पैतरेबाजी करने के लिए बहुत कम जगह है। प्रतिरोध की उनकी जैव राजनीति में इस प्रकार अपने जीवन से (निकट) मृत्यु को हथियार बनाने वाले फ्रंटलाइन विद्रोही; और विद्रोहियों के जीवन को (निकट) मृत्यु के बचाने का अनुमोदन करने वाले पार्श्व समर्थक सम्मिलित हैं।

> विद्रोही जैव–राजनीति : जीवन से (निकट) मृत्य को हथियार बनाना

चीन के संप्रभु एक–देश जीवन के तेज होने और इसके द्वारा 2019 के प्रतिरोध के ट्रिगर होने के समक्ष, पुलिस (कानून) इन के जैव–राजनीति में संप्रभु भूमिका निभाती है : अ) सड़क स्तर के प्रदर्शन के जीवन को दुर्बल करना ब) गिरफ्तारी, अभियोजन एवं मुकदमों के माध्यम से डर को भड़काना और स) असंगत हिंसा से शारीरिक हानि पहुंचाना। चीनी केन्द्र सरकार द्वारा प्रदर्शनकारियों को ''आतंकवादी बनने के करीब'' के रूप में निंदित करना और हांगकांग मुख्य कार्यकारिणी द्वारा उनकी पांच मांगों (तालिका 1 देखें) पर कोई जवाब नहीं देने के कारण प्रदर्शन शांतिपूर्ण से अधिक बलपूर्वक/हिंसक तरीकों में बदल गए (तालिका 2 देखें)। मुख्य कार्यकारिणी के समर्थन से दंगा पुलिस ने आंसू गैस, मनमानी/बलपूवर्क गिरफ्तारी, क्रूर पिटाई, रासायनिक पानी की तोपों और यहां तक गोलाबारी के साथ अधिक हिंसक रूप से प्रतिक्रिया की है। उन्होंने गुप्तचर भेजे और प्रदर्शनकारियों को ''तिलचटटों'' के रूप में लेबल किया जिन्हें सुरक्षा को बनाये रखने के लिए मिटाया जा सकता है। इसने परिदृश्य को ''हिंसा से अधिक हिंसा होती है'' के रूप में विकृत किया है और प्रदर्शनकारियों ने निजी और सार्वजनिक रूप से भय/निराशा को अनुभव करना शुरू कर दिया है।

फ्रंटलाइन प्रदर्शनकारी असंगत पुलिस हिंसा और उनके और हांगकांग के भविष्य के बारे में भय के प्रत्युत्तर में अपने जीवन को हथियार बनाकर प्रतिरोध करते हैं। विस्पाथित होने से उनका इंकार करना हांगकांग पहचान के विकास के लिए उर्वर आधार प्रदान करता है। कुछ विद्रोही अपने जीवन का बलिदान करने के लिए तैयार है चूंकि वे दो–प्रणाली में स्थापित हांगकांग के स्वायत्त जीवन की रक्षा/बचाव करना चाहते हैं। पुलिस के साथ युद्व–क्षेत्र प्रकार की लड़ाई में, कुछ ने अपनी वसीयत (और गैर–आत्महत्या नोट) को भी अपने झोले में रखा हैं। निजी चिंतनों में ''हांगकांग समाज के लिए जान दे दो'', ''अपने खून से हांगकांग की रक्षा करों'', और ''स्वतंत्रता के बदले मृत्यु का उपयोग करें'' सम्मिलित हैं। हांगकांग की विद्रोही जैव राजनीति में जीवन को हथियार बनाने के ये तरीके उम्मीद, भय, सदमे, क्रोध, आसूं, खून और (निकट) मृत्यु के संदर्भ में भाव प्रवणता से तैयार किये गये हैं। प्रतिरोध में मनोवैज्ञानिक आघात, आत्म–बलिदान, शारीरिक चोटों का भय, गिरफ्तारी, नजरबंदी, अभियोजन, कारावास, लोप होना और आत्महत्या की जैव राजनीति सम्मिलित है।

तालिका 1: हांगकांग में प्रदर्शनकारियों की पांच मांगे

प्रत्यावर्तन विधेयक वापिस लो
प्रदर्शनकारियों को ''दंगाई'' कहना बंद करो
सभी गिरफ्तार प्रदर्शनकारियों को के लिए क्षमादान दो
पुलिस हिंसा की स्वतंत्र जांच करवायें
हांगकांग की मुख्या कार्यकारिणी और विधान परिषद् के चुनावों के लिए सार्वभौमिक मताधिकार प्रदान करें

तालिका 2: प्रतिरोध के शांतिपूर्ण एवं उग्र स्वरुप

प्रतिरोध की प्रकृति	उदाहरण
शांतिपूर्ण साधन	प्रदर्शन, मानव श्रंखला, गाने गाना, सार्वजनिक स्थानों पर सभाएं, पोस्टर/मूर्तियां बनाना, लेनन वाल्स/सुरंगे, अंतर्राष्ट्रीय हिमायतें इत्यादि
उग्र साधन	स्प्रे कैन्स, लेजर टॉर्चेस, सड़क के स्तर पर लड़ाई, मोर्चाबंदी, निजी, सार्वजनिक दुर्वचन, ईटें फेंकना, चीन समर्थक दुकानों की आगजनी, विश्वविद्यालयों का घेराव इत्यादि

> सकारात्मक जैव–राजनीतिः (निकट) मृत्यु से जीवन की रक्षा

प्रदर्शनकारियों की विद्रोही जैव–राजनीति जीवन की रक्षा करने के लिए सकारात्मक प्रयासों को आमंत्रित कर रही है। पूर्व के 2014 अम्ब्रेला आंदोलन के अग्रणीयों/समर्थकों ने सीखा कि नेताओं पर अभियोग चलाया जा सकता है और उन्हें कारावास हो सकता है। इस अनुभव ने वर्तमान आंदोलन के बिना किसी औपचारिक नेता के कार्य करने में योगदान दिया। यह नेतृत्व–विहीन रणनीति को अपनाता है और ''बी वाटर'' एवं आपसी मदद की छितरी रणनीतियों को काम में लेता है। सूचनाओं को साझा करने और आपस में क्रियाओं/निर्णयों को समन्वित करने के लिए टेलिग्राम और एयरड्राप जैसी इंटरनेट अनुप्रयोगों के द्वारा इन्हें सुविधा प्रदान की जाती है।

आंदोलन को क्राउड–फंडिग से धन प्राप्त हुआ है और यह पारस्परिक–सहायता समूहों जो व्यावसायिक, पीढीगत, लैंगिक और नस्लीय रेखाओं को पार करते हैं से प्रबलित होता है। ये समर्थक विद्रोहियों के जीवन को (निकट) मृत्यु से बचाने के लिए एकत्रित होते हैं। ''सिल्वर हेयरस'' (वरिष्ठ नागरिकों) समूह द्वारा अग्रणी युवाओं पर चौकसी रखने और उनकी रक्षा करने हेतु चलाया प्रोटेक्ट द चिल्ड्रन अभियान इसका एक उदाहरण है। कुछ दंगा पुलिस और फ्रंटलाइनरस के मध्य खड़े होने का चयन करते हैं; जबकि अन्य ''हमारे बच्चों को गोली मत मारों'' जैसे कथनों वाली तख्तियां पकड़ कर खड़े होते हैं। ये जीवन–रक्षक क्रियाएं, जैव–राजनैतिक आपूर्ति चेन जो दान, भोजन, पानी, फेस–मास्क (पहचान/सुरक्षा के लिए), छाते, डाटा सुरक्षा, मुफ्त परिवहन, चिकित्सा सहायता, सामाजिक देखभाल, विधिक सलाह प्रदान करती हैं और फ्रंटलाइनरस के लिए

>>

हांगकांग में 2019 में जन प्रदर्शन। वर्जिनिआ पाक द्वारा फोटो

अपने घर खोलती हैं, के द्वारा भी मजबूत होती हैं।

अन्य सकारात्मक जैव–राजनीति में शामिल हैं : अ) आजादी की चाह की इच्छा के प्रतीक के रूप में हांगकांग बंदरगाह के दोनों तरफ तीस मील की मानव श्रंखला का निर्माण; ब) मृत व्यक्तियों के लिए सार्वजनकि शोक का आयोजन ताकि सामुदायिक आत्मा की सेहत और प्रतिबद्वताओं के नवीकरण को आगे बढाया जा सके; स) मनोबल को बढाने और आंदोलन को एकजुट करने के लिए पांच दिनों के भीतर ग्लोरी टृ हांग कांग जैसे गीतों को अंतिम रूप देना एवं रिकार्ड करना; और द) नये ट्रेड यूनियनों की स्थापना और सड़क स्तरीय विरोध की ऊर्जा को संघटित करने हेतु चुनावी समर्थन को जुटाना। इसी प्रकार की जीवन–वर्धक प्रथाएं (ट्रांस) स्थानीय ओर (ट्रांस) वैश्विक स्तर पर पायी जा सकती है। हांगकांग समर्थक प्रवासियों/समर्थकों के साथ इस संघर्ष में ''स्टैंड विद हांग कांग'' के लिए स्थानीय समुदायों, राष्ट्रीय विधायिकाओं, वैश्विक मीडिया और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को लक्षित करने वाली अंतर्राष्ट्रीय समर्थन/वकालत और व्यक्ति से व्यक्ति कूटनीति का प्रारम्भ करने के लिए हाथ मिलाते हैं।

> समापन टिप्पणीयां

यह आलेख हांगकांग के 2019–20 के प्रदर्शनों के लिए नव–फूकोवादी उपागम अपनाता है। यह देखते हुए कि यह हांगकांग एसएआर सरकार और चीन के एक पार्टी शासन के सह–संप्रभु शासन की असंगत अधिनायकवादी स्थितियों के तहत होता है, संप्रभु जैव–राजनीति दृष्टिकोण इस प्रतिरोध को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। यह 2019 के संयोग को आलोकित करता है जब हांगकांग में एक–देश जीवन के पूर्ण रूप से हटने के साथ कुछ दो–प्रणाली नागरिकों के द्वारा उनकी ''उच्च डिग्री की स्वायत्तता'' को त्याग देने से अस्वीकार किया गया। यह एक देश–दो प्रणाली व्यवस्था के संघर्ष को असंगत पुलिस हिंसा के प्रयोग द्वारा संप्रभु के नियंत्रण के बढते जोर के माध्यम से व्यक्त किया गया है। यह विद्रोहियों की जीवन/मृत्यु की विद्रोही जैव राजनीति, जो हांग कांग के विस्थापन की राजनीति पर इस संघर्ष में समर्थकों की सकारात्मक जैव राजनीति कृत्यों के साथ सह–अस्तित्व में है, के द्वारा पूरा होता है।■

सभी पत्राचार नगई–लिंग सम को <n.sum@lancaster.ac.uk> पर प्रेषित करें।

आभारोक्ति

मैं इस आलेख को लिखने और तस्वीरों की आपूर्ति में सहयोग के लिए ब्रिजिट आलनबॉकर, बाब जेसप, वर्जिनिया पाक, जो ली और लंकास्टर स्टैंड्स विद हांगकांग ग्रुप को धन्यवाद देना चाहूंगी।

> अनुभवात्मक राजनीति
और येलो वेस्टस[1]

माइकलिस लियोनस, रॉयन विश्वविद्यालय, फ्रांस द्वारा

2019 में पेरिस में प्रदर्शन में पुलिस की भारी उपस्थिति। मिकालिस लियानोस द्वारा फोटो

येलो वेस्टस अप्रत्याशित रूप से आये। फ्रांसीसी समाज इस तरह के आंदोलन की क्षमताओं से गहन रूप से अनभिज्ञ था। यह सर्वविदित है कि स्थापित राजनैतिक संस्थाओं और मीडिया ने इस आंदोलन को कलंकित किया। यह आश्चर्यजनक नहीं था चूंकि श्वेत निम्न वर्ग को पृथक प्रजातीय अल्पसंख्यकों और मध्यम वर्ग के विभिन्न परतों के मध्य एक निष्क्रिय, कुंठित बफर के रूप में देखा जाता था। आश्चर्यजनक बात यह है कि एक स्व–स्फूर्त, गैर–पक्षपाती आंदोलन उभरा और उसने उत्तर–औद्योगिक समाज में राजनैतिक स्तरीकरण की स्थापित संरचना को तोड़ दिया। यह निश्चित तौर पर एक नये राजनैतिक दल (ला रेपुब्लिकीन एन मार्चे) के फ्रांस में राष्ट्रपति एवं संसदीय चुनावों दोनों के जीतने और एक राष्ट्रपति जो पहले किसी भी पद पर चुना नहीं गया था के दुर्लभ संयोजन से संबंधित है। सुधार की आशा बहुत अधिक थी और इसी तरह परिणामी निराशा भी उच्च थी।

यह आंदोलन राष्ट्रीय सार्वजनिक क्षेत्र में 17 नवम्बर 2018 को प्रस्फुटित हुआ। दो सप्ताह पश्चात इसने वैश्विक सुर्खिया बटोरी। उस दौरान एक शानदार परिवर्तन जारी था। ईंधन पर कर से जुड़ी प्रारंभिक चिंगारी से येलो वेस्टस तेजी से समकालीन समाज के सम्पूर्ण राजनैतिक वास्तुकला पर सवाल उठाने की दिशा में अग्रसर हुए। वे अब शासन के सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण निर्णयों पर लोगों को पूर्ण नियंत्रण देने के यंत्र के रूप में नागरिक.पहल वाले जनमत संग्रह की स्थापना की मांग कर रहे थें। उसी समय उन्होंने जोर दे कर कहा कि वे ''लोग'' थे और वे अपमानित हुए थे और फ्रेंच समाज के ह्दय में अवतीर्ण होने बावजूद, उनसे ''अभिजनो'' से उपेक्षित, निकट–निर्धनता के चुपचाप रहना अपेक्षित था। सामाजिक वैधता की भावना को विशेष रूप से उनके ''अ–राजनैतिक'' एवं ''अमनपसंद'' के रूप में स्व–चित्रण से प्रबलित किया गया था, चूंकि इनमें से अधिकांश ने पहले किसी प्रदर्शन में भाग नहीं लिया था

>>

एक प्रदर्शनकारी अपनी स्थिति का एलान करते हुए, पेरिस, 2019।

और वे राजनैतिक दलों के प्रति उदासीन या बैरी थे। इसी कारण से वे पुलिस के हिंसक दमन से अचम्भित और कुपित थे चूंकि वे स्वयं को विधि–पालक नागरिकों के रूप में मानते थे जो पहली बार विरोध करने के अपने अधिकार का प्रयोग कर रहे थे।

विरोध के आंदोलन के रूप में उनके महत्व के अलावा येलो वेस्टस ने सामाजिक आंदोलनों की संरचना एवं व्यवहार में एक नया चरण प्रारम्भ किया है। उनके कई मौलिक पक्ष सामूहिक राजनैतिक कार्यवाही की प्रकति, संगठन और सफलता की मान्यताओं की श्रंखला को चुनौती देते हैं। मैं इन नवाचारों की समाजशास्त्रीय रूचियों को स्पष्ट करने के लिए पांच सोपानी अवसर्पण बिन्दुओं पर संक्षेप में बात करूंगा :

1. राजनैतिक दलों एवं गठित आंदोलनों के सभी लिंकों को अस्वीकार करना।

इस प्रघटना का सबसे प्रभावशाली भाग इसकी सहजता है। येलो वेस्टस एक विशिष्ट राजनैतिक उपागम या सिद्वांत के अन्तर्गत एक साथ नहीं आये। वे किसी प्रकार का अबद्व राजनैतिक दृष्टिकोण भी साझा नहीं करते थे। हालांकि उन्होंने सहज रूप से महसूस किया कि राजनैतिक ''स्वरूपण'' की सभी संरचनाओं पर विश्वास नहीं करना चाहिए। उनकी दृष्टि में शक्ति को धारण करने वाला और चाहने वाला प्रत्येक व्यक्ति भ्रष्ट था, या ज्यादा से ज्यादा प्राथमिक रूप से लोगों के नहीं बल्कि स्वयं के हितों को आगे बढाने में रूचि रखता है। इसका यह अर्थ नहीं है कि वे 'लोकलुभावनवाद' की तरफ मुड़े। इसके विपरीत, उन्होंने आंदोलन के अन्तर्गत न सिर्फ अधिनायकवाद को बल्कि पदानुक्रम को भी अस्वीकार किया। वे लगभग तुरंत ही व्यक्तियों को एक प्रगाढ़ समुदाय बन गये, ऐसे लोगों का ''परिवार'', जैसा वे अक्सर स्वयं को कहते थे, जो उनके सहमत या असहमत होने पर प्रत्येक मुददे पर अलग ने निर्णय लेने के अधिकार की सतर्क हो कर रक्षा करता है। वे किसी भी दिये गये सामाजिक राजनैतिक फेमवर्क या मंच से स्वतः ही भाग पाते थे।

2. वैचारिक बहुलता

सामाजिक आंदोलन वैचारिक समरूपता के प्रति झुकाव के लिए सुविख्यात हैं। तनाव और बैर–भाव जहां हमेशा एक आंदोलन में विकसित होते हैं, यह इसे हमेशा माना जाता हैं कि ये तनाव विचारध ाारा और उसके अनुगामी परिणामों के एकीकृत ढांचे के नियंत्रण के इर्द–गिर्द घूमते हैं। येलो वेस्टस एक बार पुनः समरूपता के इस कानून का ज्वलंत अपवाद है। वे न सिर्फ एक विशिष्ट राजनैतिक विचारधारा की तरफ अभिमुखित नहीं हुए बल्कि उसी समय अपनी मांगों के लिए एक बहुलवादी नींव बनाने में कामयाब रहे। यह दोनों इसलिए संभव हो पाया क्योंकि उन्होंने निर्णायक रूप से दलगत राजनीति को अपने आंदोलन से दूर रखा और क्योंकि उन्होंने सहज रूप से एक दूसरे के साथ सह–अस्तित्व को स्वीकारा जबकि वे विशिष्ट मुददों पर अक्सर बड़ा असहमत होते थे। उनकी व्याख्या अनुभावत्मक थी। वे ''एक ही प्रकार की समस्या'' में थे और जो मायने रखता था वह था उनके उद्देश्यों की समानता और परिस्थितियों को बदलने की इच्छाशक्ति। उस स्थिति के लिए उनकी व्याख्या भिन्न हो सकती थी लेकिन वे हमेशा एक ऐसी व्यवस्था के साथ काम करते थे जहां शक्तिशाली ''लोगों'' का इतना सम्मान नहीं करते थे कि वे उनके लिए एक सभ्य जीवन सुरक्षित कर सकें।

3. तंत्रिका सम्बंधी वास्तुकला एवं स्वायत्तता

यह आंदोलन आनलाइन या स्थानिक रूप से उभरने वाले आंशिक रूप से अतिव्यापी समूहों के इर्द गिर्द संगठित हुआ। प्रत्येक प्रतिभागी एक या एक से अधिक आनलाइन समूहों या एक या अधिक गोलमेज के माध्यम से चर्चा, बहस, सभाओं और प्रतिरोधी क्रियाओं में शामिल था। तंत्रिका संरचना का यह विकास जिसने फ्रांस को पूरी तरह से कवर कर लिया था (इसके सुदूर औपनिवेशिक क्षेत्रों सहित) येलो वेस्टस का एक महत्वपूर्ण गुण था। इंटरनेट द्वारा पेश वैयक्तिक स्वायत्तता की उनकी चेतना सामुदायिक अभिप्रेरणा के बिन्दु के रूप में उनके द्वारा गोलमेज के चयन की पंसद के प्रकार के रूप में परिलक्षित किया गया। दोनों मामलों में वैचारिक आधार यह है कि परस्परछेदन के स्वायत्त बिंदु गारंटी देते हैं कि केवल नेटवर्क ही ऐसी शक्ति रखता है। इसमें न कोई प्रशासकीय शीर्ष है न ही अधिशासी तल है।

4. प्रत्यक्ष लोकतंत्र

स्वाभाविक रूप से इन विशेषताओं ने एक प्रतीकात्मक नींव का निर्माण किया जो एक ऐसी राजनीति की तरफ प्रेरित थी जहां निरंतर और समान भागीदारी को एक आदर्शवादी उद्देश्य के बजाय एक पूर्व–शर्त के रूप में देखा गया। प्रभावशाली रूप से, सामान्य शिक्षित, निम्न–वर्ग, पहली बार प्रदर्शनकारियों ने शीघ्र ही दावा किया

>>

कि भागीदारी और निर्णय लेने के प्रतिनिधि प्रणालियां अप्रचलित और खतरनाक हैं। इस दावे को व्यक्त करने के लिए उन्होंने दो शक्तिशाली तरीकों को प्रयोग में लिया। पहला, उन्होंने किसी भी स्तर पर किसी के द्वारा आंदोलन के प्रतिनिधित्व को अस्वीकृत किया। सभी राजनैतिक संस्थाओं द्वारा उन्हें स्थायी प्रतिनिधियों के रूप में चुनने के भारी दबाव के बावजूद उन्होंने मामले दर मामले के आधार पर गोलमेज ''प्रवक्ता'' चुनें। ऐसा कोई भी नहीं था जो येलो वेस्टस के नाम पर बोल सकता था और ऐसी कोई भी कोशिश करने का अर्थ आंदोलन को धोखा देना था। दूसरा, उन्होंने निर्णय लिया कि समकालीन समाज की सम्पूर्ण कार्यक्षेत्र में राजनैतिक संरचना बदलनी चाहिए। उन्होंने प्रत्येक क्षेत्र में नागरिक.पहल वाले जनमत संग्रह शुरू कराने की मांग की। वे तय करेंगे और 'अभिजन' केवल उनके निर्णयों को निष्पादित करेंगे।

5. अनिश्तिता का धैर्य

आज हम (23 फरवरी 2020) येलो वेस्टस आंदोलन के 67 वें सप्ताह में हैं। निःसंदेह रूप से यह हाल के इतिहास में सबसे लंबा चलने वाला व्यापक राजनैतिक प्रतिरोध आंदोलन है। येलो वेस्टस का कोई विशिष्ट आदर्श नहीं था जिसे वे बढा रहे थे और लागू करने का कोई विशिष्ट राजनैतिक योजना नहीं थी। इसके विपरीत वे अपनी बहुल प्राथमिकताओं एवं विचारों के बारे में पारस्परिक रूप से खुले थे। इसने उन्हें सामूहिक स्वतुल्यता के अप्रत्याशित स्तर प्राप्त करने की अनुमति दी। उन्होंने स्थापित व्यवस्था में शक्ति में हिस्सेदारी जब्त करने की बजाय समग्र राजनैतिक परिवर्तन की तरफ बढने पर ध्यान केन्द्रित किया। ऐसा करने में, उन्होंने परिणाम की अनिश्चितता की परवाह नहीं की। मेरे द्वारा किये गए साक्षात्कारों में वे आम तौर पर कहते थे, हमें जारी रहना चाहिए। हम देखेंगे कि इससे क्या परिणाम निकलता है।

यद्यपि बहुत अधिक नहीं, पूरे फ्रांस में विभिन्न स्थानों पर येलो वेस्टस की कुछ सभाएं, मार्च और विरोध प्रदर्शन जारी हैं। हर कोई सोचता है कि आंदोलन का स्थायी प्रभाव क्या होगा। किसी भी दर पर, एक निष्कर्ष निकालना ठीक है। येलो वेस्टस ने यह साबित कर दिया कि एक नये स्तर की सामूहिक राजनैतिक–संवेदनशीलता संभव है। उन्होंने बड़े पैमाने पर प्रत्यक्ष लोकतंत्र के पूर्व गठन के लिए वैयक्तिक अनुभव, समुदाय और राजनीति के मध्य एक नई कड़ी स्थापित की है। ■

1. यह लेख येलो वेस्टस आंदोलन के प्रारम्भ से व्यावक आनुभाविक शोध पर आधारित है। विस्तृत विश्लेषण हेतु देखे, यहां वहां या यहां

सभी पत्राचार माइकलिस लियानोस को <michalis.lianos@univ-rouen.fr> पर प्रेषित करें।

> सामाजिक जागृति

नवउदार असमानताओं के विरोध में

जोर्ज रोजस हर्नांडेज़, वाटर रिसर्च सेंटर फॉर एग्रीकल्चर एंड माइनिंग (सीआरएचआईएम), चिली और **गनहिल्ड हैनसेन–रोजास**, यूनिवर्सिडैड डी कॉन्सेपियोन, चिली द्वारा

चिली में बर्तनों को बजाकर ध्यान आकर्षित करना विरोध का एक हिस्सा था। डिएगो कोरिया/फ्लकर.कॉम। कुछ अधिकार सुरक्षित।

चिली में मौजूदा सामाजिक विरोध प्रदर्शन (ऐस्टॉलिडो सोशल) ग्राफिटी, भित्ति चित्रों, संगीत, कविता, गीत, बैठकों, और सामूहिक बहस के रचनात्मक रूपों से सुसज्जित है। चिली निवासियों के ऐतिहासिक दृष्टि से संचित असंतोष को इस प्रकार एक नए सौंदर्यबोध से अभिव्यक्ति दी गयी है। दशकों का असंतोष, सामाजिक दुर्व्यवहार, भेदभाव और सामाजिक अन्याय को ऐसे नारों में निन्दित किया गया है : "चिली जाग गया है!", "जब तक मानव गरिमा एक रोजमर्रा की आदत नहीं बन जाती", "चिली नवउदारवाद को दफना कर देगा !", "मैंने अपना डर खो दिया है!", "और अब कोई दुर्व्यवहार नहीं!, "निजी पेंशन फंड को

>>

हटाओ!", "बाजार सामाजिक अधिकारों की रक्षा नहीं करता है!", "हम युद्ध में नहीं हैं!", "नया संविधान!", "सब के लिए निशुल्क शिक्षा!", "निःशुल्क और सार्वजनिक जल अधिकार!", "मेरा सबसे बड़ा डर है कि सब कुछ ऐसा ही रहेगा!", "सामान्य स्थिति समस्या है!", "शांति से जीने के अधिकार के लिए!"

> एक दर्दनाक जाग्रति

18 अक्टूबर 2019 को चिली बदल गया। दबा हुआ गुस्सा इस तरह फूटा जो महाकाय एवं रचनात्मक दोनों है। चार महीनों के लगातार विरोध के बाद, अब एक नई गणतंत्रीय की भावना को महसूस किया जा सकता है, जो अपरिवर्तनीय है। 40 वर्षों के बाद, चिली नागरिक प्रचलित वाणिज्यिक एवं अनियंत्रित नवउदार मॉडल के नकारात्मक प्रभावों से अवगत हो रहे हैं: सामाजिक असमानता, बुनियादी सेवाओं के निजीकरण, पेंशन, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, और प्राकृतिक संसाधन। सरकार ने इसका प्रत्युत्तर पुलिस हिंसा से दिया है। आग्नेयास्त्रों के प्रयोग के कारण 400 से अधिक लोगों की आखों की रोशनी चली गयी है, महिलाओं का बलात्कार हुआ है। यातनाएं और हज़ारों मनमानी गिरफ्तारियां हुईं। संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार उच्चायुक्त और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने पुष्टि की है कि मानवाधिकारों का बड़े पैमाने पर उल्लंघन किया जा रहा है और उन्होंने चिली सरकार से सक्रियता से काम करने को कहा है।

चिली समाज की यह जाग्रति सहज नहीं है, बल्कि यह नकारात्मक अनुभवों और सामाजिक असंतोष की लम्बे समय से निर्मित जटिल प्रक्रियाओं का परिणाम है। 40 वर्षों बाद, नवउदारवादी व्यवस्था क्षीण हो गयी है और संकट में पलट गयी है जिसने अपरिवर्तनीय क्षति का खुलासा किया है जिससे देश को उबरने में कठिन समय लगेगा। विरोध प्रदर्शन और सूचना की एक नई बाढ़ के माध्यम से, चिली निवासियों में एक नवीन मुक्तिवादी चेतना विकसित हो रही है।

> सामाजिक एवं पारिस्थितिक असमानताएं एवं सामाजिक आंदोलन

चिली में सामाजिक एवं संरचनात्मक असमानताएं बाजार के वादों की तुलना में तेजी से बढ़ीं: कम मजदूरी, अमानवीय पेंशन, स्वास्थ्य और शिक्षा प्रणाली का निजीकरण और फीस में अनुवर्ती वृद्धि, काम की अनिश्चितता, अधिक महँगी एवं निजीकृत बुनियादी सेवाएं, आश्चर्यजनक रूप से उच्च आजीविका लागत और धन का अत्यधिक संकेन्द्रण। इसके अतिरिक्त युवाओं को श्रम बाजार में प्रवेश करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है, महिलाओं के खिलाफ भेदभाव अभी भी विद्यमान है, और स्वदेशी लोगों के अधिकारों को अभी भी मान्यता नहीं दी जा रही है। न्यून सार्वजनिक भागीदारी, पर्यावरणीय समस्याएं और जलवायु परिवर्तन की नाजुकता के साथ जल एवं संसाधनों की कमी से बुनियादी सेवाओं के प्रावधान में अतिरिक्त समस्याएं पैदा हो रही हैं।

निजीकरण एवं वैयक्तिकरण की ये नीतियां आवश्यक रूप से अर्थ के नुकसान के साथ भविष्य के बारे में अनिश्चितता पैदा करती हैं। विरोध प्रदर्शन और नए सामाजिक आंदोलनों का उभार इसका परिणाम हैं: 2006 का "पेंगुइन प्रदर्शन" उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों द्वारा बेहतर सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली की मांग के लिए प्रदर्शन था। 2011 में निशुल्क विश्वविद्यालय शिक्षा की मांग के साथ एक प्रभावी और विशालकाय छात्र आंदोलन हुआ। दोनों आंदोलन जनता के साथ व्यापक रूप से प्रतिध्वनित हुए। 2018 में, निजीकृत पेंशन प्रणाली के खिलाफ "नो+एपीएफ" (No+APF) आंदोलन उभरा। नृजातीय आंदोलनों और विशेष रूप से मापुचे समुदाय के प्रतिनिधि संविधान में अपनी मान्यता की, उनकी भूमि लौटने की और नृजातीय अल्पसंख्यकों के रूप में कुछ स्वायत्तता की मांग कर रहे हैं। पारिस्थितिक तंत्र एवं प्राकृतिक वास को नुकसान पहुँचाने वाले मेगा–प्रोजेक्ट्स के निर्माण के खिलाफ नए पर्यावरण और प्रतिरोध आंदोलन हैं। पेंटागोनिया में हाइड्रो–आयसेन मेगा–प्रोजेक्ट इस आंदोलन का सबसे महत्वपूर्ण प्रतीक बन गया। इसके अतिरिक्त, पर्यावरणीय नीतियों के खिलाफ नागरिक प्रतिरोध को क्विंटेरो, पुचुनकावी और कोरोनल की नगरपालिकाओं के तथाकथित परित्यक्त क्षेत्रों (zonas de sacrificio) में देखा गया है, जो उच्च औद्योगिक घनत्व से चरम रूप से ग्रसित हैं और इनमें बीमारियों की व्यापक दर है। 2019 यौन शोषण के खिलाफ और लैंगिक समानता के लिए महिला आंदोलन आंदोलनों का भी वर्ष था। ये उदाहरण दर्शाते हैं कि चिली समाज प्रतिष्ठित मॉडल के स्याह हिस्से को जान कर धीरे धीरे हिल गया है और यह नीचे से सक्रिय रूप से संगठित होने लगा है।

> सामाजिक सुधार और एक सामाजिक अनुबंध/संधि

इस परिस्थिति में, चिली को एक कल्याणकारी राज्य के लिए गहन सामाजिक सुधारों की आवश्यकता है जो मौजूदा कमियों की भरपाई करते हैं और प्रदर्शनकारियों की मांगों को पूरा करते हैं। विभिन्न सामाजिक संगठनों के एक संघ, मेसा डे यूनीडेड सोशल ने "सामाजिक न्याय के बिना शांति नहीं होगी" के नारे के साथ नागरिक समाज की सक्रिय भागीदारी के साथ एक सामाजिक संधि की मांग की है। 22 दिसंबर 2019 को अधिकांश चिली नगरपालिकाओं ने आबादी की तत्काल समस्यायों के बारे में एक सफल सर्वेक्षण का संयोजन किया जिसमें 2.5 मिलियन से अधिक चिली निवासियों ने सक्रिय रूप से निम्नलिखित परिणामों के साथ भाग लिया: 91.3 फ़ीसदी एक नया संविधान चाहतें हैं, 89.9 फ़ीसदी अप्रैल 2020 में एक जनमत संग्रह में भाग लेने के लिए तैयार हैं; अधिकांश लोग एक लोकतान्त्रिक रूप से निर्वाचित विधानसभा के पक्ष में हैं। जनमत संग्रह ने तीन महत्वपूर्ण प्राथमिकताएं भी दिखाईं: बेहतर पेंशन, एक बेहतर स्वास्थ्य सेवा प्रणाली, और एक बेहतर सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली तक पहुंच की गारंटी। इस प्रकार सामाजिक समझौता एक नवउदारवादी मॉडल के वर्तमान संकट को हल करने के लिए एक आवश्यक योगदान होगा।

ये सामाजिक मांगें बीसवीं शताब्दी के लोकतंत्रों का पहले से ही हिस्सा थीं, लेकिन इन्हें आंशिक रूप से वैश्विक नवउदारवादी रणनीतियों द्वारा विघटित कर दिया गया था। वर्तमान वैश्विक घटनाक्रम और चर्चाएं घटनाक्रम और चर्चाएं घटनाक्रम और चर्चाएं दिखाती हैं कि कल्याणकारी राज्य की इन ऐतिहासिक उपलब्धियों को इक्कीसवी सदी में पुनः लिया जाना चाहिए और लोगों को जीवन स्तर की गारंटी, दक्षिणपंथी लोकलुभानवाद के विरोध और देशों के विकास को सुनिश्चित करने के लिए वर्तमान नीतियों में पुनः समाकलित करना चाहिए।

> राज्य एवं राजनैतिक दलों का वैध संकट

सामाजिक संकट ने नवउदारवाद द्वारा निर्मित राज्य की कमजोरियों का खुलासा किया। नवउदारवाद ने हमेशा एक न्यूनतम राज्य और समाज के निजीकरण और वैयक्तिकरण का आह्वान किया था। इस सिद्धांत के विनाशकारी परिणाम आज महसूस किए जा रहे हैं। चिली की रूढ़िवादी सरकार अभिलुप्त है और इसने हिंसा के साथ प्रतिक्रिया की। स्पष्ट रूप से व्यापक लोकतांत्रिक शांतिपूर्ण नागरिक विरोध प्रदर्शन और लूटपाट, आगजनी और छोटे पृथक समूहों की विनाशकारी हिंसा के मध्य स्पष्ट अंतर किये बिना आपातकाल और उत्पीड़न की घोषणा करना।

इस संदर्भ में, सेंट्रो दे`स्टुडिओस पुब्लिकोस ने दिसंबर 2019 में

>>

चिली नागरिकों का अपनी संस्थाओं पर विश्वास जानने के लिए हुए सर्वेक्षण के निम्नलिखित परिणाम प्रकाशित किये : केवल 5 फ़ीसदी सरकार पर, 3 फ़ीसदी संसद पर, 2 फ़ीसदी राजनीतिक दलों पर, और 8 फ़ीसदी न्यायपालिका पर भरोसा करतें हैं। अधिकांश लोग हिंसा को विरोध के साथ–साथ पुलिस हिंसा के रूप में भी खारिज करते हैं। 67 फ़ीसदी लोग नए संविधान का आह्वान करते हैं, 56 फ़ीसदी का मानना है कि यह नया संविधान वर्तमान समस्याओं को हल करने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है। 87 फ़ीसदी ऐसे नेताओं के पक्ष में हैं जो सामाजिक और राजनीतिक संवाद और आम सहमति को प्रोत्साहित करने में सक्षम हैं। उत्तरदाताओं के अनुसार, सरकार द्वारा निम्न तीन मुद्दों को तत्काल सम्बोधित करने की आवश्यकता हैः 64 फ़ीसदी ने पेंशन कहा, 46 फ़ीसदी ने स्वास्थ्य, और 38 फ़ीसदी ने शिक्षा। यह सर्वेक्षण एक राजनीतिक प्रणाली के रूप में लोकतंत्र की वैधता पर प्रकाश डालता है।

> एक नए संविधान और नवीनीकृत लोकतंत्र के लिए

15 नवंबर, 2019 को, मजबूत और स्थायी सामाजिक विरोधों ने सरकार और विपक्ष को एक नए संविधान के निर्माण के लिए 25 अक्टूबर, 2020 को एक जनमत संग्रह करने के लिए सहमत कराया। इस नए संविधान का निर्माण करने वाले प्रतिनिधियों को 11 अप्रैल 2021 को निर्वाचित किया जायेगा और उन्हें तीन महत्वपूर्ण मापदंडों को पूरा करना होगाः पुरुषों और महिलाओं के मध्य संतुलन, राजनैतिक दलों से गैर–सम्बद्धता और स्वदेशी अल्पसंख्यंकों का प्रतिनिधित्व।

जनमत संग्रह और भविष्य के लिए संबद्ध रणनीतियों के साथ, चिली के पास सभी सामाजिक अभिनेताओं की भागीदारी के साथ मौजूदा राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं को शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक रूप से हल करने का एक अनूठा अवसर है। फिर भी, रूढ़िवादी क्षेत्र द्वारा इस प्रक्रिया को समर्थन देने से इंकार करना एक संभावित बाधा है। उनका उद्देश्य नए संविधान को, संस्थानों और पेंशन, स्वास्थ्य एवं शिक्षण प्रणालियों के आधुनिकीकरण को रोकना है और इस प्रकार वे मौजूदा शक्ति और बाजार सरंचनाओं को बनाये रखेंगे। यह आशा की जानी चाहिए कि नागरिक आंदोलनों की मांगे अंततः एक शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में और सभी क्षेत्रों द्वारा व्यापक भागीदारी के साथ एक सफल जनमत संग्रह में परिलक्षित होगी। ■

सभी पत्राचार जोर्ज रोजास हर्नांडेज को <jrojas@udec.cl> पर
गुनहिल्ड हैनसेन–रोजास को <hansen-rojas@udec.cl> पर प्रेषित करें।

> इराक एवं लेबनान में
अक्टूबर बगावतों को समझना

रीमा माजेद, अमेरिकन यूनिवर्सिटी ऑफ बेरूत, लेबनान, और सशस्त्र सेनाओं और संघर्ष निराकरण (आरसी 01), नस्लवाद, राष्ट्रवाद, स्वदेशीयता और नृजातीयता (आरसी 05), राजनीतिक समाजशास्त्र (आरसी 18), महिलाओं, लिंग और समाज (आरसी 32), सामाजिक वर्गों और सामाजिक आंदोलनों (आरसी 47), सामाजिक आंदोलनों, सामूहिक कार्यवाही और सामाजिक परिवर्तन (आरसी 48) पर आईएसए की अनुसंधान समिति के सदस्य द्वारा

इराक में अक्टूबर विद्रोह के दौरान बेरुत में एक प्रदर्शन, 2019। स्त्रोतः विकीमीडिया क्रिएटिव कॉमन्स।

अक्टूबर 2019 में इराक और लेबनान दोनों ही अप्रत्याशित जनसमूह के विस्फोट के साक्षी बने। जंगली आग की तरह, ये विरोध प्रदर्शन दोनों देशों में तेजी से फैल गए और इन्होंने कुछ ही दिनों में लाखों नहीं तो हजारों सैकड़ों प्रदर्शनकारियों को आकर्षित किया। उनकी मांगों के मूल में बेरोजगारी, अनुचित कराधान, व्यापक भ्रष्टाचार, पानी और बिजली जैसी बुनियादी सेवाओं की कमी और कुशासन के प्रश्न थे। हालांकि यह पहली बार नहीं था जब सड़कों से इस तरह की मांगों को उठाया गया था, अक्टूबर 2019 का विरोध किसी भी पूर्व आंदोलनों से विस्तार और आकार में स्पष्ट रूप से भिन्न था। इराक की तरह लेबनान में, इन विद्रोहों को जल्दी से "क्रांति" की उपाधि दे दी गई थी – जिसने दोनों देशों के 2011 और 2015 के विरोध प्रदर्शनों जैसी लामबन्दियों के पूर्व लहरों से इसे स्पष्ट रूप से अलग कर दिया।

जहाँ ये बगावत पारंपरिक सामाजिक आंदोलन साहित्य की "क्रांति" की परिभाषा के अंतर्गत आ नहीं सकते हैं – चूँकि उन्होंने पूर्ण रूप से शासन का तख्तापलट नहीं किया है, इनको क्रांति की ऐसी घटनाएं जो या तो सफल होती है या असफल के बजाय एक क्रन्तिकारी प्रक्रिया के रूप में देखना महत्वपूर्ण है। असल में, इराक और लेबनान की अक्टूबर बगावतें दोनों देशों के एक दशक से भी ऊपर चक्रीय लामबंदी के सन्दर्भ में आईं, जिसमें वर्ष 2015 पहचान की राजनीति के अतिरंजित लेंस के परे सामाजिक– आर्थिक मांगों पर आधारित शासन–विरोधी लामबन्दियों के साथ एक आवश्यक मोड़ के रूप में आया। इसके अलावा, ये क्रांतिकारी ''सामाजिक विस्फोट'' स्पष्ट '' अरब बगावत की दूसरी लहर'' के संदर्भ में भड़के, जो सूडान और अल्जीरिया में 2018 के अंत में शुरू हुए और दो तानाशाहों को गिराने में कामयाब रहे।

हालांकि, इराकी और लेबनान के मामलों को जो तुलनीय बनता है, और 2011 से अरब क्षेत्र में हुए अन्य से अलग करता है, वह वो राजनीतिक व्यवस्था है जिनका इन दो देशों में प्रदर्शनकारी तख्ता पलट करने की कोशिश कर रहे हैं। अरब दुनिया में जहाँ ये क्रांतियों सभी उन देशों में हुई है जहाँ राजशाही या सत्तावादी शासन रहा है, वहीं लेबनान और इराक एकमात्र ऐसे मामलें है जहाँ बगावत एक ऐसी राजनैतिक व्यवस्था में हुई जिसे सहवर्तिन लोकतंत्र कहा जाता है–एक पहचान–आधारित (सांप्रदायिक और नृजातीय) सत्ता–साझाकरण व्यवस्था जहां शासन में स्पष्ट शीर्ष नहीं है जिसे गिराया जा सके। नवउदारवाद, सांप्रदायिक ग्राहकवाद (जिसे मुहासा के रूप में जाना जाता है) और ग्रह युद्ध एवं हिंसा की विरासत के साथ इसने इन बगावतों का मार्ग पहचानना अधिक कठिन बना दिया है।

> सम्प्रदायवाद बनाम राष्ट्रवादः

अक्टूबर 2019 से, लेबनान और इराक के मुख्य इलाके राष्ट्रीय ध्वज लहराते हुए और राष्ट्रगान गाते हुए प्रदर्शनकारियों से भर गए हैं। यह एक ऐसा कदम है जो इन देशों के प्रदर्शनकारियों द्वारा संप्रदाय और नृजातीय विभाजनों को खारिज करने और विविधता के बावजूद ''सह–अस्तित्व'' एवं ''राष्ट्रीय एकता'' को उजागर करने के लिए अक्सर अपनाया जाता रहा है। हालांकि, क्या राष्ट्रवाद आवश्यक रूप से सम्प्रदयवाद का विपरीत हैं?

संप्रदायवाद और राष्ट्रवाद पर दशकों का साहित्य दर्शाता है कि

>>

ये दो घटनाएं आवश्यक रूप से विपरीत नहीं हैं क्योंकि राष्ट्रवाद को अक्सर एक संप्रदायवादी धारणा के साथ इस्तेमाल किया गया है। उदाहरण के लिए, अरब राष्ट्रवाद को अक्सर सुन्नी आयाम के साथ जोड़ा गया है, जबकि लेबनानी राष्ट्रवाद को ऐतिहासिक रूप से एक ईसाई अर्थ के साथ जोड़ा गया है। हालांकि, अभी भी व्यापक रूप से सामाजिक स्तर पर राष्ट्रवाद को संप्रदायवाद की अस्वीकृति के संकेत के रूप में तैनात किया जाता है। इराक और लेबनान दोनों में होने वाली बगावतें स्पष्ट रूप से एक ''कल्पित राष्ट्र'' को समाधान मानने की लालसा के माध्यम से सम्प्रदायवाद के प्रश्न से जूझ रही हैं।

इराक में *नाजिल ए खोद हक्की* (मैं अपना अधिकार लेने के लिए संघटित हो रहा हूँ) नामक समूह द्वारा लामबंदी के आह्वान बाद अक्टूबर के प्रारम्भ में आंदोलन शुरू हुआ। इराक के चौकों में 2011 से प्रसिद्ध मन्त्रों की गूंज के साथ "लोग शासन का तख्ता पलटना चाहतें हैं" और "हमें एक मातृभूमि चाहिए" के मुख्य नारे थे। ''मातृभूमि'' या ''देश'' या ''राष्ट्र'' की मांग कर प्रदर्शनकारी एक ऐसे राज्य की इच्छा की तरफ संकेत कर रहे थे जो अपने नागरिकों की सेवा करने में सक्षम है और सांप्रदायिक और नृजातीय विखंडन से परे एकजुटता की भावना प्रदान कर सकता है।

लेबनान में, ''राष्ट्र'' की पुनः कल्पना करने की एक समान प्रक्रिया देखी गई। जहाँ नए कर लगाने के एक सरकारी निर्णय – जिसमें व्हाट्सप्प कॉल पर कर सम्मिलित था – के बाद बगावत प्रारम्भ हुई – चौक शीघ्र ही राष्ट्रीय ध्वज से भर गए और लेबनान का राष्ट्रीय गान बार बार सुना गया। जहाँ मुख्य नारों में प्रसिद्ध नारा ''लोग शासन तख्ता पलटना चाहतें हैं'' भी शामिल था, एक अधिक कस्टम–निर्मित नारा जोड़ा गयाः ''सब का मतलब सब'' – जो संप्रदाय सत्ता – साझाकरण व्यवस्था और सांप्रदायिक सम्बन्धो के बावजूद सभी नेताओं की निंदा करते हुए अस्वीकार/खारिज किया गया। इराक की तरह, संप्रदायवाद की अस्वीकृति को सभी सांप्रदायिक नेताओं से छुटकारा पाने और एक ऐसे ''एक देश'', ''एक राज्य'' और'' एक राष्ट्र'' का निर्माण करना जो अपने नागरिकों की रक्षा करता है और उनके साथ समान एवं न्यायपूर्ण व्यवहार करता हो, की इच्छा के माध्यम से व्यक्त की गई थी।

जहाँ कई यह लोग मानते हैं कि दोनों देशों में भ्रष्टाचार और असमानता का स्तर सांप्रदायिक व्यवस्था का परिणाम है, यह दृष्टिकोण इन बगावतों को पैदा करने वाले संकट के निर्माण में आर्थिक प्रणाली (नवउदारवाद) की महत्वपूर्ण भूमिका को नजरअंदाज करता है। आज इराक और लेबनान में आंदोलनों के लिए एक बड़ी चुनौती अपने सांप्रदायिक–नवउदारवादी शासन के दो स्तंभों से एक साथ लड़ना है : सामाजिक–आर्थिक न्याय और कल्याणकारी राज्य की मांग पर ध्यान केंद्रित रखते हुए, सांप्रदायिक सत्ता–साझाकरण की प्रणाली को भी खारिज करना।

> नवउदारवाद और असंतोषः खोये हुए ''हम'' की तलाश में

युद्ध के बाद लेबनान (1990 के बाद) और आक्रमण – पश्चात् इराक (2003 के बाद) में नवउदारवाद फला फूला। राज्य का पीछे हटना और सांप्रदायिक ग्राहकवाद में वृद्धि एक नवउदार राजनैतिक संस्कृति जो सबसे पहले और सर्वाधिक रूप से व्यक्तिवाद पर केंद्रित थी, एक साथ आये। इस राजनीतिक संस्कृति ने मोटे तौर पर न सिर्फ राज्य और समाज को आकारित किया, बल्कि यह उभरती सक्रियतावाद की प्रकृति एवं असंतोष में भी परिलक्षित हुआ।

हालांकि कई कार्यकर्ता पिछले दशकों में सामाजिक आंदोलनों और अभियानों में सक्रिय रहे हैं, यह ध्यान देने योग्य है कि सबसे बड़ी और सबसे प्रभावी पहल में से कुछ बड़े पैमाने पर व्यक्ति के आसपास विकसित हुई थीं। उदाहरण के लिए, एक मुख्य चुनावी अभियान जो लेबनान में 2015 की लामबंदी से विकसित हुआ, वह *बेरुत मदिनोति* (बेरुत, *मेरा शहर*) था। एक सामूहिक "हम" जो शहर को सभी के लिए साझा स्थान के रूप में पुनर्विचार करता है और नउदारवाद के व्यक्तिवादी तर्क को खारिज करता है, पर जोर देने के बजाय इस नाम ने शहर के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध पर जोर दिया। इसी तरह, 2019 में वित्तीय पतन के बाद, लेबनानी विद्रोहियों ने बैंकों की खिड़कियों पर *''हमारा पैसा वापस करो''* के बजाय *''मेरा पैसा वापस दो''* की ग्राफिटी स्प्रे करी। बैंकों के खिलाफ जहाँ सामूहिक क्रोध स्पष्ट था, सक्रियता को आकार देने वाली राजनीतिक संस्कृति अभी भी उसी प्रणाली का उत्पाद है जिसके खिलाफ वह लड़ रही है।

कई अभियानों ने एक कानूनी और अधिकार– आधारित दृष्टिकोण पर भी जोर दिया है जो लेबनान और इराक दोनों की वास्तविकताओं से असम्बद्ध प्रतीत होता है। दोनों देशों में, कानूनी और न्यायिक प्रणाली बहुत कमजोर और भ्रष्ट हैं, और लोगों को उन पर बहुत कम भरोसा है। इसलिए, ''अधिकारों'' और ''दायित्वों'' की भाषा उन देशों के लोगों की राजनीतिक कल्पनाओं में केंद्रीय स्थान पर स्थित नहीं है। हालांकि, कई प्रमुख राजनीतिक आंदोलनों और अभियानों ने व्यक्तिगत ''अधिकारों'' को अपनी सक्रियता के स्थान के रूप में केंद्रित किया है। कुछ उदाहरणों में इराक में पहले से उल्लेखित अभियान *'मैं अपना अधिकार लेने के लिए लामबंद हो रहा हूं''* या लेबनानी विद्रोह में काफी सक्रिय राजनीतिक समूह जिसे *''ली हकी''* (मेरे अधिकार के लिए) कहा जाता है, सम्मिलित हैं। व्यक्तिगत अधिकारों पर यह जोर एक काल्पनिक आधुनिक राष्ट्र–राज्य की लालसा के बारे में बताता है जहाँ सरकारी संस्थान भ्रष्टाचार और सांप्रदायिक ग्राहकवाद के परे जा कर समान रूप से व्यक्तिगत अधिकारों को संरक्षित कर सकते हैं।

इराक और लेबनान दोनों में संप्रदाय–नवउदारवादी प्रणाली का एक और परिणाम राजनीतिक संगठनों या यूनियनों की अनुपस्थिति रहा है जो एक ऐसे राजनीतिक विकल्प का प्रतिनिधित्व करते हैं जो विद्रोह को एक नयी राजनैतिक प्रणाली में परिवर्तित होने का सहारा प्रदान कर सके। दोनों देशों में कोविड –19 के हाल के प्रसार के साथ, एक खोए हुए ''हम'' का उभार और संगठन एक ऐसी प्रणाली को हराने के लिए, प्राथमिकता है जो स्पष्ट रूप से आर्थिक आपदाओं या स्वास्थ्य महामरियों से समाज की रक्षा करने में असमर्थ है। ■

सभी पत्राचार रीमा माजेद को <rm138@aub.edu.lb> पर प्रेषित करें।

> डिजिटल पूंजीवाद में मीडिया और संचार

आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य

मार्लेन वेन डेन इकर, फ्रेडरिक शिलर यूनिवर्सिटी ऑफ जेना, जर्मनी और सेबास्टियन सेविग्नानि, फ्रेडरिक शिलर यूनिवर्सिटी ऑफ जेना और यूनिवर्सिटी ऑफ पेडरबोर्न, जर्मनी द्वारा

डिजिटल पूंजीवाद में प्रयोक्ता अक्सर अवैतनिक कामगार की तरह कार्य करते हैं। कोटलियार्स्की द्वारा फोटो/अनस्प्लैश.कॉम।

समकालीन मीडिया तकनीक विकसित होती है और इसका उपयोग सामाजिक स्थितियों में संचार के लिये किया जाता है जिसे अक्सर "डिजिटल पूंजीवाद" के रूप में इंगित किया जाता है। "उत्तर–औद्योगिक", "सूचनात्मक" और यहां तक कि "वैश्विक नॉलेज समाज" के रूप में निदान से अलग, डिजिटल पूंजीवाद यह व्यक्त करता है कि आर्थिक शोषण, सांस्कृतिक अलगाववाद, और राजनीतिक प्रभुता के आधारभूत सामाजिक संबंधों के संदर्भ में साथ–साथ सामाजिक परिवर्तन महत्वपूर्ण निरंतरता को दर्शाता है। डिजिटल पूंजीवाद दुनिया भर में अलग अलग तरह से चलता है: जहाँ दुनिया के इस ओर डिजिटल पूंजीवाद रचनात्मक और ज्ञान वर्गों के गठन को पोषित और उपभोक्तावाद को बढावा देता है, दूसरी ओर लाखों लोग प्रतिकूल परिस्थितियों में आवश्यक कच्चे माल का निष्कर्षण कर या घटकों का कोडांतरण कर के अपनी आजीविका कमाते हैं। परंतु यहां विविधता में एकता भी है: सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों और डिजिटल मीडिया निर्माताओं के लिये उपयोगकर्ता एक नये शोषित वर्ग की तरह काम करते हैं। निगरानी तकनीकें नागरिकों के निजी अधिकारों के लिये खतरा पैदा कर रहीं हैं। पूंजी–चालित हित जमीनी स्तर पर लोकतांत्रिक और स्वगठित मीडिया की विनाशकारी संभावनाओं को रोकते हैं।

डिजिटल मीडिया तकनीक की बढती प्रासंगिकता के साथ, आलोचनात्मक मीडिया और संचार समाजशास्त्र व्यापक स्तर पर सामाजिक परिवर्तन की हमारी समझ के लिये अर्तदृष्टि प्रदान करते हैं और यहां तक कि हमारे विषय के लिये अग्रणी भूमिका भी निभाते

>>

हैं। जब यह तार्किकीकरण की नयी तरंगों, (गैर)योग्यता, और श्रमिक गतिविधियों के पुर्नगठन और मूल्य श्रंखलाओं की व्याख्या करते हैं, ये श्रम और औद्योगिक समाजशास्त्र में योगदान देते है। जब यह बिग डेटा, एल्गोरिदम्स, लक्षित विज्ञापन, और नये बाजारों के रूप में डिजिटल प्लेटफॉर्मों की महत्वपूर्ण भूमिका की जांच करता है तो यह आर्थिक और उपभोक्ता समाजशास्त्र के साथ अंतक्रिया करता है। डिजिटल संस्कृति उद्योगों और सार्वजनिक क्षेत्रों के वर्तमान बदलाव के साथ आते हुये यह सांस्कृतिक और राजनीतिक समाजशास्त्र के साथ सहयोग करता है। और जब यह "प्रोस्यूमिंग" जैसी डिजिटल प्रघटना के अंतर्गत में संचार और श्रम के बीच के संबंधों के झमेंलों की ओर इंगित करता है तो यह सामाजिक सिद्धांत को प्रोत्साहित करता है।

आशा है कि इस परिसंवाद के लेखों में दी गयी आलोचनात्मक अंतर्दृष्टियां इन मुद्दों की जड़ों को खोजने की नयी पहलों के लिये मार्ग प्रशस्त करती है।

चूंकि मौजूदा आलोचनात्मक सामाजिक अनुसंधान के पास मीडिया और संचार के बारे में कहने के लिये बहुत कम है, और दूसरी ओर संचार अनुसंधान अक्सर डिजिटल कार्य के माध्यम से शोषण की समस्या को दरकिनार कर देते हैं, मैरीसाल सेंडोवल और सेबास्टियन सेविग्नानि "डिजिटल शोषण" के माध्यम से सोचते हुये संचार और श्रम की कडी को जोड देते हैं। इसे अक्सर अनदेखा किया जाता है कि समकालीन वैश्विक मीडिया संस्कृति का उत्पादन बिग टैक के द्वारा नियंत्रित और प्रबंधित संचार और सहयोग पर निर्भर करता है। हम इन कंपनियों के लिये, जब ये लोंगों के डेटा निशानियों पर पलती हैं, सोशल मीडिया प्लेटफोर्मों के उपयोगकर्ताओं के रूप में अवैतनिक डिजिटल श्रमिकों की तरह कार्य करते हैं।

ऑस्ट्रेलियन विद्वान मार्क एंड्रेजेविक भी डेटा–चालित व्यापार मॉडल के तर्कों को मानते हैं। उनका लेख स्वचालित रूप से उत्पन्न डेटा की बढती प्रवृति और इसके पूंजीवादी स्वामित्व और संचयन की भूमिका के बारे में है। यह पूछने की जगह कि क्या स्वचालित प्रणालियां इस्तेमाल की जानी चाहिये, एंड्रेजेविक प्रश्न करते हैं कि वे इस प्रकार अब तक कैसे डिजायन की गयी हैं।

हांगकांग से लिखते हुये, जैक लिनचुआन की नये डिजिटल श्रमिक वर्ग के गठन की संभावना पर चर्चा करते हैं। चीन का उदाहरण यह सुझाता है कि सरकारी निगरानी तकनीकें स्थानियता के संदर्भ में सामाजिक नियंत्रण करने में वास्तव में शक्तिशाली हैं।यद्यपि की इंगित करते हैं कि विभिन्न सामयिक प्रतिमानों पर ध्यान देते समय डिजिटल श्रमिक वर्ग, जब वह सामूहिक विघटनकारी कार्यों जैसे कार्य मंदी, तोड़फोड़ या हड़तालों में संलग्न होता हैं, अपनी विनाशक क्षमता को दिखा सकता है। डिजिटल श्रमिकों का वर्ग संघर्ष सामयिक संप्रभुता को हासिल करने के नये तरीकों पर जोर देने के बारे में है।

चाहे यह आमतौर पर इस तरह से फ्रेम किया जाये, हमारे कनाडाई साथी टेनर मिरलीस संदेह करते हैं कि चीन संयुक्त राज्य अमेरिका का गंभीर प्रतिद्वंदी है। वे रेखांकित करते हैं कि संयुक्त राज्य अमेरिका ना केवल सबसे बडी आर्थिक और सैन्य शक्ति का मालिक हैः इसकी डिजिटल तकनीकें और सांस्कृतिक उद्योग वर्तमान समय में अपने आकार, पहुंच, और मुनाफे के संदर्भ में अपने चीनी प्रतिद्वंदियों से कहीं आगे हैं।

अंतिम लेख, हमारे प्रिय साथी मैंडी ट्रोजर के द्वारा लिखा गया है, जो हमें जर्मन एकीकरण के बाद के मीडिया व्यवस्था के उत्तर–समाजवादी परिवर्तनों पर इतिहास का एक पाठ पढ़ाता है। 1990 के वसंत में, जर्मन डेमोक्रेटिक रिपब्लिक की एक स्वतंत्र और लोकतांत्रिक ईस्ट जर्मन प्रेस की ओर अनगिनत पहलें जल्दी ही मुठ्ठीभर वैस्ट जर्मन राजनीतिक और आर्थिक समूहों के द्वारा कुचल दी गयी जिन्होंने अपने हितों के लिये बाजार संरचनाओं का निर्माण किया था। यह इसका एक प्रमुख उदाहरण है कि कैसे इतिहास में लोकतांत्रिक क्षमता वाली मीडिया आधारभूत संरचनायें निजी आर्थिक हितों के द्वारा बार बार कमजोर की जाती रही हैं। ■

सभी पत्राचार
मार्लेन वेन डेन इकर को <marlen.van.den.ecker@uni-jena.de> पर और
सेबास्टियन सेविग्नानि को <sebastian.sevignani@uni-jena.de> पर प्रेषित करें।

> डिजिटल शोषण

संचार और श्रम को जोडते हुये

मैरीसोल सैंडोवल, सिटी, यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन, यूके और सेबास्टियन सेविग्नानि, पेडरबोर्न विश्वविद्यालय एवं जेना विश्वविद्यालय, जर्मनी द्वारा

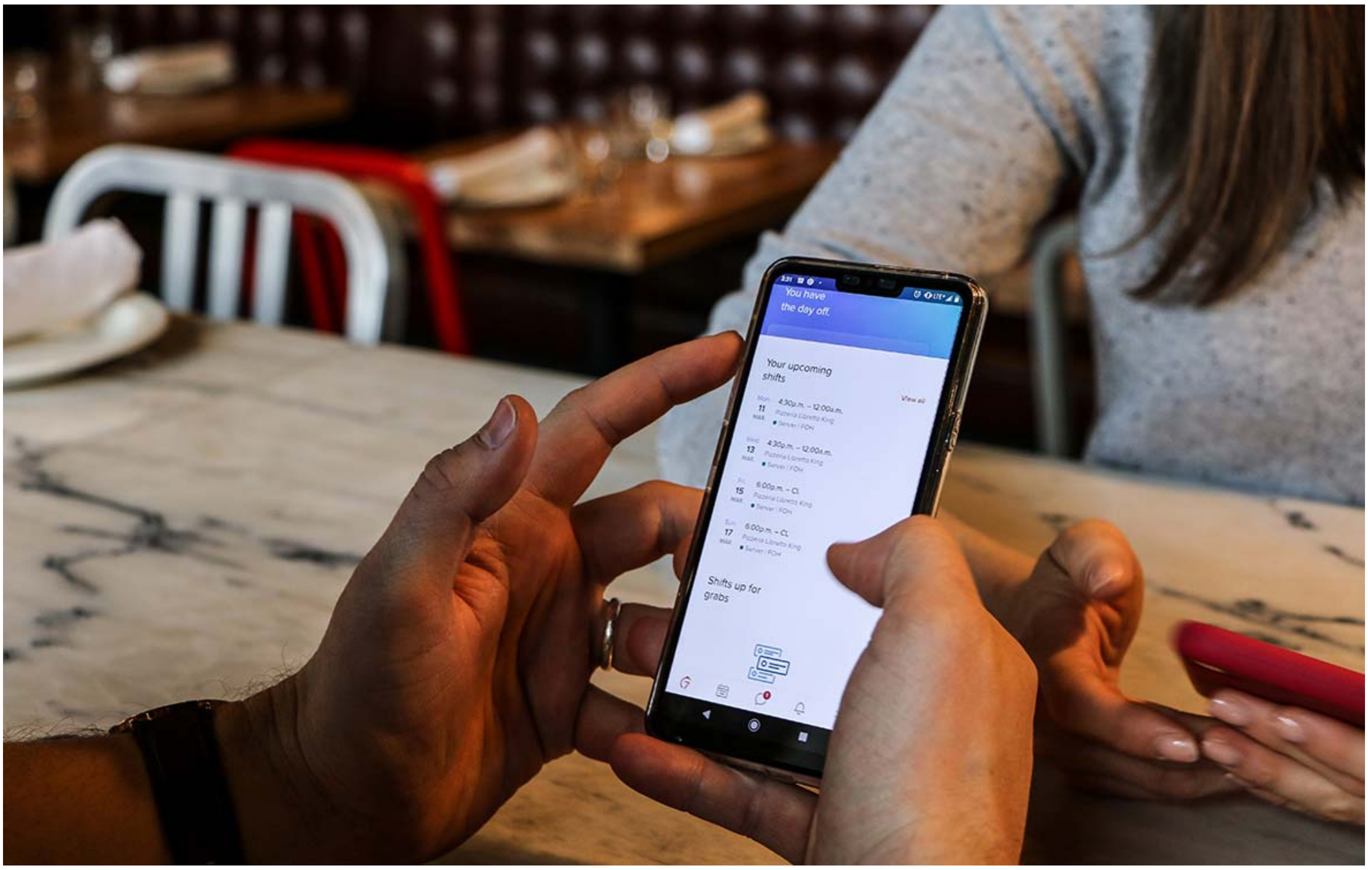

मीडिया और संचार का विश्लेषण करते समय श्रम की भूमिका को अक्सर नजरअंदाज किया जाता है। 7 शिफ्स द्वारा फोटो /अनस्प्लैश.कॉम। क्रिएटिव कॉमन्स।

समालोचनात्मक मीडिया और संचार समाजशास्त्र एक सैद्धांतिक और व्यवहारिक दुविधा का सामना कर रहा है: जहाँ मार्क्सवाद और मार्क्सवादी सोच से प्रेरित आलोचनात्मक सामाजिक सिद्धांत के लिये, उत्पादक गतिविधि सामाजिक परिवर्तन की गति को समझने की कुंजी है, संचार और मीडिया हाशिये के मुददे बने रहते हैं। वहीं दूसरी ओर, आलोचनात्मक संचार अनुसंधान, विचारधाराओं और मीडिया के प्रभावों का विश्लेषण करते हैं परंतु श्रम की अक्सर उपेक्षा करते हैं। ऐसा लगता है कि सामाजिक जीवन के दो अलग क्षेत्रों के रूप में जुर्गेन हेबरमास का साधक और संचार क्रिया के बीच प्रभावशाली विभेदन न सिर्फ मुख्यधारा

>>

मीडिया समाजशास्त्र और संचार अध्ययनों का पीछा करता है बल्कि यह आलोचनात्मक परंपरा को भी सीमित करता है। डिजिटलीकरण के युग में मीडिया और संचार को समझने के लिये इसकी गंभीर सीमायें हैं। इसलिये हम एक एकीकृत दृष्टिकोण के लिये तर्क देते हैं जो एक आलोचनात्मक मानवतावादी अनुसंधान परंपरा पर आधारित है। हम तीन तरीकों का प्रस्ताव रखते हैं जिसमें संचार और श्रम व्यवहारिक तौर पर और सैद्धांतिक तौर पर परस्पर जुडे हुयें हैं।

> मीडिया में काम की परिस्थितियां

संचार और श्रम को जोडने का एक पहला और शायद सबसे स्पष्ट तरीका वैश्विक स्तर पर समकालीन मीडिया संस्कृति को रेखांकित करने वाले कार्य करने की परिस्थितियों को गंभीरता से लेने का होगा। आलोचकों के द्वारा मीडिया और संचार अनुसंधान में कार्य को एक अंधबिंदु के रूप में सही से वर्णन किये जाने के बाद, पिछले दशक में अनेक अध्ययनों ने पत्रकारिता, डिजायन, फैशन, मीडिया और कला सहित विविध मीडिया और सांस्कृतिक क्षेत्र के पेशों सहित में काम करने की परिस्थितियों का विवेचन किया। ये अध्ययन यह दिखाते हैं कि योग्यता, यौवन, खुलेपन, रचनात्मकता, स्वायत्तता, और आत्मप्राप्ति, जो इन उद्योंगों को घेरे हुये है, की नैतिकता के पीछे नस्ल, वर्ग, और लिंग, अनिश्चित अनुबंधों, अवैतनिक श्रम, और काम की लंबी अवधि की संस्कृति, कार्य के तनाव, चिंता, आत्मदोष, प्रतिस्पर्धा, और व्यक्तिवादिता की एक संस्कृति की संरचनात्मक असमानताएँ हैं।

वैश्विक सांस्कृतिक उत्पादन की आपूर्ति श्रृंखला के साथ आगे देखने से एक दूसरी, गहरी परत का खुलासा होता है कि कैसे मीडिया संस्कृति भौतिक उत्पादन से संरचनात्मक रूप से जुडी हुयी है। समकालीन मीडिया संस्कृति दुनिया भर के निर्माण संयंत्रों में कम्प्यूटर और इलेक्ट्रोनिक उत्पादों को संकलित करते हजारों श्रमिकों के बिना अकल्पनीय होगी। इलेक्ट्रोनिक निर्माण में कार्य पर अनुसंधान मजबूती से दिखाते हैं कि आधुनिक डिजिटल संस्कृति संरचनात्मक रूप से उस उद्योग से पोषित होती है जो औद्योगिक पूंजीवाद के प्रारंभिक दिनों के जैसी कार्य करने की परिस्थितियों से मिलते–जुलते हैं। 2010 में एपल आपूर्तिकर्ता फॉक्सकोन में श्रमिकों की आत्महत्याओं की एक श्रृंखला जैसे कांडों को छोड़ कर इन श्रमिकों की दैनिक वास्तविकताओं को काफी हद तक आधुनिक उपकरणों और विज्ञापन अभियानों, जो हल्केपन और नवाचार पर जोर देते हैं, की चमकती सतहों के पीछे छिपाया जाता है। उदाहरण के लिये, पत्रकारों, डिजाइनरों और कलाकारों को श्रमिकों के रूप में देखने पर, इलेक्ट्रोनिक निर्माणों को भी औद्योगिक और संचार श्रमिकों की तरह दिखाना दर्शाता है कि मीडिया, कला और संचार कभी भी केवल मांग अधिसंरचनात्मक प्रघटना नहीं रहें हैं बल्कि वे पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं और शोषण की संरचनाओं के साथ गहराई से गुथे हुए थे।

> उत्पादन के लिये संचार

दूसरा, यह तर्क दिया जा सकता है कि उत्पादन के लिये, व्यक्ति को संचार और सहयोग करना होता है। प्रत्येक उत्पादन संचार और उत्पादन के मध्यस्थ संबंधों के भीतर होता है। यहां मीडिया और संचार समाजशास्त्र श्रम समाजशास्त्र और "श्रम कैसे संगठित और नियंत्रित होता है" पर अनुसंधान के साथ अंतक्रिया करता है। (नयी) मीडिया और संचार तकनीकें, जैसे कि ईमेल, स्मार्टफोनस्, और डिजिटल प्लेटफॉर्मस् हमेशा एक ऑनलाइन संस्कृति का निर्माण करती हैं और काम के कुल घंटों को बढाने में योगदान करती हैं, और अक्सर मूल्य श्रृखलाओं में श्रम के नये अवैतनिक स्वरूप को एकीकृत करती हैं। ये पूंजीवाद के बदलते हितों के लिये कार्यस्थल के अंदर और निगमों के मध्य अपने विभाजन और पुर्नगठन को अधिक कुशल और लचीला बनाते हुये श्रम को भी तीव्र करती हैं। कुछ विशिष्ट कार्यस्थलों के लिये, स्लैक कार्य जैसी मीडिया एप्लीकेशंस एक अधिकाधिक स्वायत्त, संवाद–उन्मुख कार्य के अन्वेषणात्मक स्वरूपों की ओर परिवर्तन का समर्थन करती हैं जो परंपरागत प्रबंधन कार्यों को परियोजना और ज्ञान श्रमिक पर स्थानांतरित करें। एल्गोरिदमिक फीडबैक एप्लीकंशस और मूल्यांकन उपकरणों के विभिन्न प्रकारों को, यह सुनिश्चित करने के लिये कि ऐसे "स्वायत्त" संचार और सहकारी कार्य को अभी भी उन लोगों द्वारा नियंत्रित और निर्देशित किया जा सके जिनके पास संचार उत्पादन के साधनों का स्वामित्व हो, तब प्रयोग में लिया जाता है।

> उत्पादन के रूप में संचार

श्रम और संचार को जोडने का एक तीसरा विकल्प कुछ अंतर्ज्ञान–विरोधी हैः स्वयं संचार को ही कार्य और उत्पादन के रूप में देखा जा सकता है। यह तब संभव हो जाता है यदि हम श्रम के समान संरचना वाले संचार की कल्पना करें और हम उन दोनों को गतिविधि का वस्तुकरण करने वाले के रूप में एक समान ढांचे में एकीकृत करें। मनुष्य सहयोगी रूप से उपकरणों और (कच्चे) माल का उपयोग वस्तुओं के उत्पादन के लिये करता है कभी कभी भौतिक दुनिया की प्रतिरोधी संप्रभुता का सामना करते हुये वह अपनी व्यक्तिपरकता को विकसित और परिष्कृत करता हैं। यह मार्क्सवादी मानवविज्ञान का एक प्रारंभिक बिंदु है जो मनुष्य को सक्रिय, वस्तुकरण करने वाले, अपनाने वाले और सीखने वाले सामाजिक प्राणी के रूप में मानता है। किसी की क्षमताओं का भौतिक वस्तुओं के रूप में वस्तुकरण करने की बजाय, संचार में संचार के साधनों का उपयोग करते हुये संकेतों और प्रतीकों (रेमंड विलियम्स), यानि कि सूचनाओं के उत्पादन के लिये अन्य संकेतों, प्रतीकों और मीडिया पर श्रम करना सम्मिलित है। इंर्फोमेशन शब्द का लैटिन उद्गव "इनफोर्मेयर" जिसका अर्थ बनाना या प्रभावित करना और किसी को जानकारी देना है इसे अच्छी तरह से व्यक्त करता है। वस्तुकरण किये गये संकेतों या कोड किये गये अर्थों को (स्टुअर्ट हॉल और ब्रिटिश कल्चरल स्टडीज से) अपनाना या डीकोड करना होता है और इसके प्रभाव होते हैः यह भौतिक दुनिया के सरंचित करने की बजाय, संचार संवादक के स्वयं के और अन्य व्यक्तियों के मानसिक नियमन को संरचित करता है। लोग संकेतों और प्रत्येक अंतक्रिया, चाहे वह तात्कालिक हो, पर मेहनत के द्वारा संचार कर सकते हैं, एक ऐसा है जो वास्तव में इस प्रतीकात्मक.भौतिक दुनिया के द्वारा मध्यस्थता किया जाता है।

उदाहरण के लिये उन उपयोगकर्ताओं के बारे में सोचें जो फेसबुक, इंस्टाग्राम, वाइबो, स्नैपचैट, टिकटॉक, और अन्य, जैसे एकाधिकार वाले सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मस के दीवारों वाले बगीचों में खिंचे चले आयें हैं। प्रस्तावित नये ढांचे के अंतर्गत वे सक्रिय रूप से संवाद कर रहें हैं परंतु वे शोषित प्रोस्यूमरस् भी हैं। उनका संचारात्मक वस्तुकरण लगातार डेटा के निशान छोड रहा है जो कि सामाजिक मीडिया पूंजी के द्वारा उनके निगरानी आधारित व्यवसाय मॉडल के भीतर संजोये गये हैं। इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संचारात्मक गतिविधि के बिना और उनके वस्तुकरण की बेदखली के बिना, वहां विज्ञापन उद्योग को बेचे जाने के लिये कोई वस्तु नहीं होगी और व्यवसायिक सोशल मीडिया के लिये कोई मुनाफा नहीं होगा। श्रम/संचार और पूंजी के मध्य इस असमान और शोषणकारी सामाजिक संबंध में परवर्ती हमें डिजिटल मीडिया को अधिक तीव्रता से और अधिक गहनता से उपयोग करने वाला बनाने के लिये प्रयासरत है; यह विज्ञापनों और उपभोक्तावाद की ओर हमारी

>>

संचारात्मक गतिविधि को निर्देशित और प्रवाहित करता है। इस प्रकार उपयोगकर्ता की गतिविधि पूंजी के अंतर्गत होती है; (सोशल मीडिया) पूंजी एक "मृत" संचारात्मक गतिविधि है जो कि आगे अन्य का शोषण करने के लिये अमीर सामाजिक वर्गों के द्वारा नियंत्रित की जाती है।

हालांकि, सोशल मीडिया पूंजी के पीछे के मुनाफे के हित ना सिर्फ संचार का शोषण और असमान सामाजिक संबंधों का अपने पक्ष में पुनरूत्पादन करते हैं; वे डिजिटल अलगाववाद के एक अधिक सामान्य स्वरूप के बाहर भी फैल जाते हैं। बिग डेटा और एल्गोरिदमस् जिन्हें हमारी संचारात्मक गतिविधि द्वारा प्रशिक्षित किया जाता है, के युग में डिजिटल पूंजीवाद की अंतर्निहित राजनीतिक अर्थव्यवस्था को गंभीरतापूर्वक चुनौती दिये बगैर एक मानवीय सूचनात्मक स्वनिर्धारण को जीवित रखना और यहां तक कि कल्पना करना भी मुश्किल है। संचारात्मक वस्तुकरण की बेदखली और संचारात्मक गतिविधि के अलगाववाद ने हमें डिजिटल युग के विषय के बजाय वस्तु बनाना प्रारम्भ कर दिया है।

मीडिया सामग्री और प्रभाव के परे मीडिया संस्कृति का विश्लेषण का विस्तार करके, मानवतावादी एकीकृत दृष्टिकोण जिसका हम प्रस्ताव दे रहें हैं, हमें संचारात्मक पूंजीवाद की जटिलताओं को समझने और वैश्विक सांस्कृतिक श्रम के असमान वितरण की समालोचना करने की एक बेहतर स्थिति में छोडता है। यह हमें एकजुटता के संभावित क्षणों की ओर ध्यान देने की अनुमति देता है जो वैश्विक मीडिया पूंजी के तहत शोषण और अलगाववाद के समान अनुभव से पैदा होता है। उन तरीकों की जांच करना जिनमें संचार और श्रम वैश्विक पूंजीवाद के विरोधाभासों से आकार लेतें हैं और वे कैसे इसे बदलने में योगदान दे सकते हैं, मीडिया और संचार के एक समालोचनात्मक समाजशास्त्र के लिये एक सतत कार्य बना हुआ है। ■

सभी पत्राचार
मैरीसोल सैंडोवल को <marisol.sandoval.1@city.ac.uk> और
सेबास्टियन सेविग्नानि <sebastian.sevignani@uni-jena.de> पर प्रेषित करें।

> स्वचालित पूंजीवाद

मार्क एंड्रेजेविक, मोनाश यूनिवर्सिटी, ऑस्ट्रेलिया द्वारा

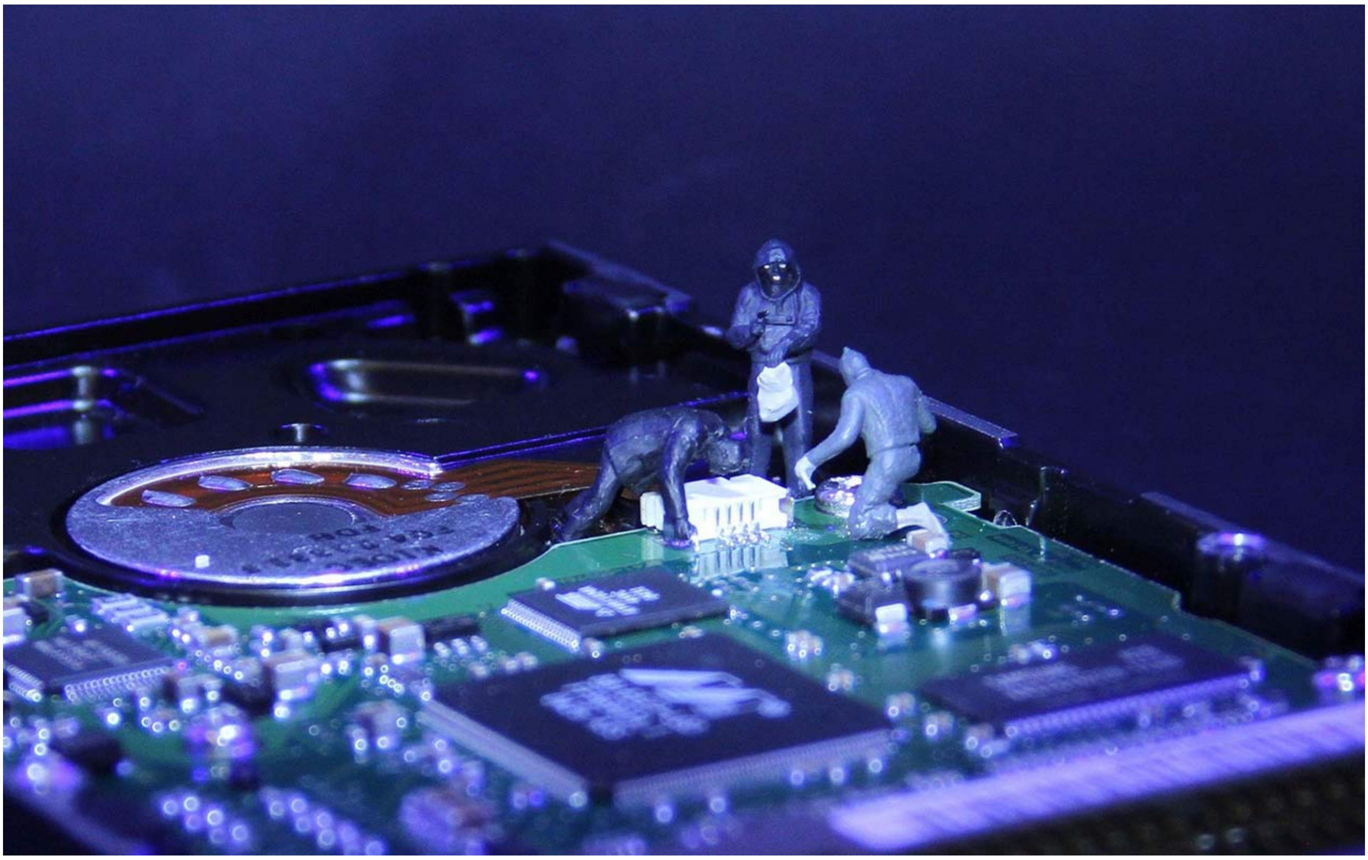

स्वचालन : मानवों की सेवा के लिए समर्पित भौतिक संसार का निर्माण।
फोटो : फ्रैंक वी/अनस्प्लैश.कॉम द्वारा। क्रिएटिव कॉमन्स।

सामाजिक संबंधों से स्वतंत्र, अमूर्तता में "स्वचालित" की धारणा, मानव की सेवा के लिये समर्पित भौतिक दुनिया की कपोल कल्पनाओं को आंमत्रित करती है: घर जो बिन बुलाये हमारी जरूरतों को पूरा करतें हैं, कारखाने जो हमारे लिये काम करते हैं, स्थान जो हमारे लिये दरवाजे खोलकर, संगीत बजाकर और यहां तक कि जब हम गिरते हैं हमें पकडकर प्रतिक्रिया देते हैं। समकालीन सामाजिक संबंधों में स्थित, हालांकि, स्वचालन के मूर्त स्वरूप, अलगाववाद के अवतार की तरफ झुकते हुए, कुछ अधिक मनहूस दिखायी देते हैं। हम जानते है कि स्वाचालित प्रणालियों के माध्यम से फिल्टर होती हमारी स्वयं की गतिविधियां – हमारे सूचना पर्यावरण को आकारित करती हैं – हमारे प्लेटफॉर्मस् से प्रवाहित होने वाला संगीत, हमारी फीडस् पर से प्रपात के रूप में गिरने वाले समाचार, हमारे सर्च पृष्ठों के परिणाम – यद्यपि हम यह नही जानते कि कैसे। हम यह भी जानते हैं कि कई मामलों में स्वचालित प्रणालियां हमारे कार्यस्थल के प्रदर्शन, हमारी साख, और हमारे जीवन के अवसरों का मूल्यांकन करती हैं।

परस्पर संवादात्मक आधारभूत सरंचनाओं के कारण स्वचालन सामाजिक दायरों में तेजी से एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने आ रहा है। ये स्वचालित रूप से इतना डेटा उत्पन्न करते हैं कि इस डेटा को उपयोग करने का एकमात्र तरीका इसे संसाधित करना है वो भी स्वचालित रूप से। जिस प्रकार डिजिटल जानकारी हमारी दुनिया को पुनः आकारित करने आयी है, स्वचालन अनिवार्य रूप से इसके साथ होगा।

इसलिये जो लोग मीडिया का अध्ययन करेंगें उनके सामने महत्वपूर्ण प्रश्न स्वचालन द्वारा लिया गया आकार होगा जो स्वयं को पूंजी की प्राथमिकताओं के अनुसार समायोजित करता है। यह वह

>>

प्रश्न है जिसे अंतक्रियाशीलता के बारे में पूछे जाने की जरूरत होगी जब एक बार, बहुत पहले नहीं, इसे अमूर्तता में लोकतंत्र और जन सशक्तिकरण के अग्रदूत के रूप में घोषित किया गया।

यह वह प्रश्न है जिससे हमें अब स्वचालन के "वादे" को संबोधित करने की आवश्यकता है जिसने, संयोगवश नहीं, अंतर्क्रियाशीलता, एक शब्द जिसका उपयोग सहस्त्राब्दी के मोड के आसपास तेजी से हुआ था परंतु तब से ढलता ही चला गया, को विस्थापित कर दिया है। यह कोई नया प्रश्न नहीं है – यह राजनीतिक अर्थव्यवस्था की आलोचना का आवर्ती विषय है जिसकी दृढ़ता पूंजीवाद को भी ग्रहण लगा देती है। यदि कैम्ब्रिज एनालिटिका का पतन और हाल ही के "निगरानी पूंजीवाद" के खिलाफ प्रतिवाद का कोई रचनात्मक प्रभाव पड़ता है, तो इसे सत्ता की राजनीतिक आर्थिक व्यवस्था पर एक पुनर्जीवित केंद्रबिंदु का रूप लेना होगा और मीडिया संदर्भ में, स्वचालित प्रणालियों का जो हमारे सूचना पर्यावरण को आकार देती हैं। प्रश्न यह नहीं है कि स्वचालन करना है या नहीं, बल्कि कैसे।

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये पूंजीवादी स्वामित्व और संचयन की स्थितियों के तहत स्वचालन के तर्क के साथ संलग्न होने की आवश्यकता है। जिस गति से तकनीक विकसित हो रही है उसे देखते हुये, एक संभावित उत्पादक दृष्टिकोण उन अनगिनत तरीकों को आकार देने वाले तर्कों को पहचानना है जिनमें स्वचालन का उपयोग शक्ति को मजबूत करने और नियंत्रण बढाने के लिये किया जायेगा। इस तरह के एक दृष्टिकोण का लाभ यह होगा कि यह हाल ही के घटनाक्रमों के बीच में संबंधों का पता लगाता है और भविष्य के रूझानों और प्रवृतियों की पहचान करता है। स्पष्ट तौर पर प्रतिक्रिया देने की बजाय अनुमान लगाना हैः जकरबर्गस और बेजोसेस की अगली पीढी को नियंत्रण आत्मसमर्पित करने के बजाय साझा प्राथमिकताओं के अनुसार प्रौद्योगिकी को आकार देने की की संभावना की कल्पना करना।

हम मौजूदा परिस्थितियों में स्वचालन की तीन गुंथी हुई प्रवृतियों की पहचान करते हुये और उनके परिणामों पर विचार करते हुये शुरूआत कर सकते हैंः प्रीएंपशन, फ्रेमलैसनैस, और संक्रियावाद। प्रीएंपशन स्वचालित डेटा संग्रहण और खनन के पूर्वानुमानित वादे पर आधारित जोखिम और अवसर के प्रबंधन की ओर इंगित करता है। यह तर्क एक अधिकाधिक परिचित तर्क हैः अमेजन हमें उन उत्पादों को भेजने की सम्भावना देखता है जिनके बारे में हमें भी पता भी नहीं कि हमें वे चाहिए (इच्छाओं का पूर्वानुमान); पूर्वानुमानित पुलिस व्यवस्था अपराध को उसके उद्भव के पल के से पहले ही विफल करने की आशा करती है। नये स्वचालित सुरक्षा प्रणालियां वादा करती हैं कि वे उसी क्षण पंच का पता लगा सकती है जब वह प्रारम्भ हुए हो लेकिन उसके लगाने से पहले ही इसका पता लगा सकती हैं। इन दोनों क्षणों के बीच का मिलिसेंकड स्वचालित प्रीएंपशन के अंतराल को चिन्हित करता हैः वह क्षण जब सिस्टम किसी दिन पंच के लगने के पहले से ही प्रतिक्रिया कर सकता है। इन सभी संदर्भों में, प्रीएंपशन, सेंसराइजेशन और स्वाचालित डेटा संग्रह पर निर्भर रहता है। उपभोक्ता की इच्छा को और अपराधी के इरादे को उनसे पहले जानने का अर्थ है एम्बेडेड सेंसरों और व्यापक डेटा संग्रह के माध्यम से उनके बारे में अधिक से अधिक जानना। प्रीएंपशन इस तरह सर्वत्रव्यापी, पूर्ण स्पेक्ट्रम निगरानी से अविभाज्य हैः सब कुछ इकठ्ठा करना और हमेशा उसे पकडे रहना।

फ्रेमलैसनेस तुरन्त ही दुनिया को एक बार डिजिटल रूप (यानि कि कुछ भी बाहर और कुछ भी फ्रेम के परे नही छोड़ना) में पुनः दुगुना कर देने के (असंभव) प्रयास को और डेटा के निरंतर पुनरुथान का वर्णन करता है। हम अपने डेटा प्रासंगिकता के पारंपरिक ढाचों को नाकाम पाते हैं जब हमें कहा जाता है कि नौकरी का आवेदन पत्र भरने के लिये इस्तेमाल किये जाने वाला वेब ब्राउजर भावी नौकरी के कार्य संपादन का एक बेहतर भविष्यवक्ता है/या फिर वह आवेदन में भरी गयी किसी भी और जानकारी से बेहतर पूर्वानुमान का चर है, या हमारी लिखावट या अपनी माता को दिन में किये गये कॉल की संख्या से साख पर भरोसा हो सकता है। इस तरह के संदर्भों मे वर्णनात्मक स्पष्टीकरण रास्ते में ही खत्म हो जाते हैं क्योंकि वे, यह वर्णन करके कि एक विशिष्ट चर क्यों प्रासंगिक हो सकता है, फ्रेम को फिर से थोपने को प्रयास करते हैं। परंतु वे सहसंबध वाली मशीन के काफी पीछे रहते हैं, जो यह कल्पना करती है कि यह उन्हें पूर्ण रूप से अनावश्यक बना सकती है। जैसा कि क्रिस एंडरसन ने अपने शोक संदेश में स्पष्टीकरण के लिये रखाः भाषा विज्ञान से लेकर समाजशास्त्र तक "मानव व्यवहार के हर सिद्धांत के साथ। बाहरी वर्गीकरण विज्ञान, पद्धतिशास्त्र और मनोविज्ञान को भूल जाइये। कौन जानता है कि जो लोग करते हैं वे ऐसा क्यों करते हैं? मुद्दा यह है कि वे करते हैं, और हम उसे अभूतपूर्व विश्वसनीयता के साथ ट्रैक और माप सकते हैं। पर्याप्त डेटा के साथ, संख्याएँ अपने लिये खुद बोलती हैं।"

"ऑपरेटिव" छवियों पर हारून फैरॉकी के कार्य को देखते हुये, हम शायद इसे "ऑपरेशनलिज्म" के रूप में वर्णित कर सकते हैंः ऐसी जानकारी जिसकी अब व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह कार्य करती है। यानि कि यह बिना व्याख्या के एक परिणाम देती हैः जो कोई भी सही ब्राउजर या उचित कैपिटलाइजेशन का उपयोग करता है, उसे नौकरी या ऋण मिल जाता है। जो भी पैटर्न पर फिट बैठता है, उसे गिरफ्तार, पदोन्नत या निशाने पर ले लिया जाता है।

प्रीएंपशन, फ्रेमलैसनेस, और ऑपरेशनलिज्म के ये तर्क लक्षित विज्ञापनों से लेकर सिग्नेचर ड्रोन हमलों तक – विक्रय से लेकर हत्या तक स्वचालित प्रक्रियाओं के स्पेक्ट्रमों मे लागू होते हैं। वे सत्ता के स्थान की पहचान उन लोंगों के हाथ में करते है जिनके पास डेटा की पंहुच और प्रसंस्करण की शक्ति है। स्वचालित डेटा संग्रह के लिये स्वचालित प्रसंस्करण की जरूरत होती है और यह स्वचालित प्रत्युत्तर की सुविधा प्रदान करता है। उसी समय, ऐसे तर्क प्रतिरोध के एक स्थान को चिन्हित करते हैंः हमारे अलघुकरणीय फीनिटयूड के द्वारा चुनौती। शक्ति का लक्ष्य इस तथ्य को अस्पष्ट करना है कि फ्रेमलैसनेस की महत्वाकांक्षा भव्य और असंभव दोनों है जिसका अर्थ है कि हम ना ही उत्तम प्रीएंपशन और ना ही स्पष्टीकरण दे सकते हैं। ■

सभी पत्राचार मार्क एंड्रेजेविक को <Mark.Andrejevic@monash.edu> पर प्रेषित करें।

> सामयिकता

और चीनी डिजिटल कामकाजी वर्ग का निर्माण

जैक लिनचुआन की, द चायनीज यूनिवर्सिटी ऑफ हांगकांग के द्वारा

डिजिटल प्रौद्योगिकी सर्वव्यापी हो गई है। उन्हें नियंत्रित करने के लिए काम में लिया जा सकता है लेकिन बगावत करने के लिए भी। ओवेन विंकल द्वारा फोटो/अनस्प्लैश.कॉम। क्रिएटिव कॉमन्स।

डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्मस्, स्थान–आधारित सेवाओं, और कृत्रिम बुद्धिमता (एआई) की मदद से, चीनी सरकार ने अपने लोगों की स्थानिक गतिविधियों पर सामाजिक नियंत्रण और अपने नगरों और गांवों के उभरते भूगोल को नाटकीय रूप से मजबूत किया है। हालांकि यह लेख, बताता है कि यदि हम चीन की डिजिटल कामकाजी वर्ग (डीडबल्यूसी) के बनने और टूटने की जांच करते समय देख सकते हैं कि बीजिंग नियंत्रण खो रहा है, तब हम अपना ध्यान स्थानिकता से हटाकर सामयिकता पर लगाते हैं। वर्ग को यहां पर मार्क्सवादी और वेबेरियन दोनों अर्थों में समझा गया है, जो क्रमशः "क्रांति के समय" और "उपभोग के समय" के अनुरूप है।

क्रांति और उपभोग सामयिकता के दो परस्पर विरोधी तरीके हैं: पहला विघटनकारी, सामूहिक, पूंजीवादी–विरोधी, दूरदर्शी, वीर, और अति–ऐतिहासिक है – जिसे मैं रिचर्ड फ्लोरिडा की "द वर्ल्ड इज स्पाइकी" से उधार लेकर "स्पाइकी समय" कहता हूं; दूसरा निरंतर, व्यक्तिवादी, नवउदारवादी, वर्तमानवादी, अपवित्र, और अऐतिहासिक है जिसे थॉमस फ्रीडमैन की "द वर्ल्ड इज फ्लैट" थीसिस के आधार पर "फ्लैट समय" कहा गया है।

मै चीन के कामकाजी.वर्ग की आबादी पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूं क्योंकि अन्य सामाजिक समूहों से तुलना करने पर, वे अधिक बहुल सामयिकताओं में रहते हैं। इस प्रकार वे सामयिक व्यवस्थाओं का एक अधिक व्यापक संग्रहालय प्रदान करते हैं जो आंतरिक संघर्षों के साथ सह–अस्तित्व में रहते हुए स्पाइकी समय और फ्लैट समय के परस्पर संबंधों की गतिशील जांच की अनुमति देते हैं।

स्पाइकी समय और फ्लैट समय चुबंकीय क्षेत्र के दो सिरों का निर्माण करते है जो विभिन्न सम्बंधित सामयिकताओं से रंगे हुये हैं जो कि रेमंड विलियम के ढांचे के अवशिष्ट, प्रमुख और उभरते हुये से सम्बंधित हैं। जहाँ फ्लैट समय अधिकतर श्रमिकों के लगातार बढते हुई डिजिटाइज्ड दैनिक जीवन में प्रभावशाली है, अपने कम या अधिक खंडित क्षणों में स्पाइकी समय अवशिष्ट में छुपता है और/या उभरते परिवर्तन की ताकतों के रूप, फ्लैट समय की चिकनी सतह में छेद करते हुये उभरता है, जैसा कि मैनुअल कैसल के शब्दों में "टाइमलैस टाइम"। जहाँ स्पाइकी समय सामूहिक संघर्षों में और डीडबल्यूसी को "स्वयं के लिये वर्ग" बनाने में मदद करता है, फ्लैट समय श्रमिकों को परमाणु परिस्थितियों में रहने के लिये, अन्य लोंगों के सपनों के सपने देखने के लिये, और यह भूल जाने के लिए कि उनकी पहचानः कामकाजी–वर्ग एकजुटता कुछ अद्वितीय करवा सकती है, को अग्रेषित कर के वर्ग निर्माण को बाधित करता है।

स्पाइकी समय और फ्लैट समय एक जैसे भी है। चीन में, ये दोनों सामयिक रेखीयता, जो पिछले शासनों की विशेषता रही है, चाहे वह कन्फ्यूशियंस (प्रत्यावर्तन को मूल्य देने वाले), बौद्ध (चक्रीय पुर्नजन्म), या आधुनिकतावादी (प्रगतिशीलय परंतु पूर्वानुमान योग्य) हों, के खिलाफ चलते हैं। जबकि फ्लैट समय ना ही प्रतिगामी है, ना ही प्रगतिशील, और ना ही चक्रीय, स्पाइकी समय को इसकी दांतेदार किनारे से परिभाषित किया जाता है जो कि प्रगति और प्रतिगमन

>>

के बीच टकराव से उत्पन्न होता है। स्टुअर्ट हॉल के शब्दों में यह "बिना गारंटी की राजनीति" से निर्मित होता है।

स्पाइकी समय और फ्लैट दोनों समय अपनी समकालिकता के कारण शक्तिशाली हैं। पश्चिमी शहरों में उबॅर के खिलाफ संघर्षों की तरह, परंतु इस मामले में राष्ट्रीय स्तर पर, 2018 में युनमैन मैन (चीन की लंबी दूरी का ट्रक परिवहन प्लेटफॉर्म) के खिलाफ ट्रक चालकों की देशव्यापी हडताल के बारे में सोचें; या प्रत्येक 11 नवंबर को होने वाले "सिंगल्स डे" वार्षिक ई–कॉमर्स कार्निवल की सोचें, जहाँ विभिन्न सामाजिक वर्गों के चीनी उपभोक्ता एक भव्य ऑनलाइन खरीददारी उत्सव में शामिल होते हैं। श्रमिक साल के 360 दिन फ्लैट समय में रह सकते हैं परंतु वे बाकी के पांच दिन आमतौर पर एजेंसी की क्रिया को बढावा देने वाले संरचनात्मक कारकों की वजह से स्पाइकी समय में बिताते हैं।

ऊपर उल्लेखित समय – स्पाइकी और फ्लैट, कन्फ्यूशियन या बौद्ध या आधुनिकतावादी – को अलग करने वाला मुख्य फेक्टर – वह है जिसे जूडी वैज्कमैन "सामयिक संप्रभुता" कहती हैं, अर्थात किसके पास सामयिकता को परिभाषित करने की चरम शक्ति है। समय की मूल इकाई क्या है? ये इकाईयां एक दूसरे से कैसे संबद्धित हैं/सार्थक सामयिक समग्रता क्या है?

जहां समय की पारंपरिक समझ जैसे कि कनफ्यूशियन उत्कृष्ट संप्रभुता को मानते हैं, आधुनिकतावादी चीनी सामयिकता संदर्भों को राज्यवाद के माध्यम से व्यक्त करते हैं, चाहे वह राज्य–समाजवाद हो या राज्य–पूंजीवाद। चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी (सीसीपी) सबसे अधिक स्पष्ट आधुनिकतावादी सामयिक संप्रभुता है। फिर भी स्पाइकी समय और फ्लैट समय दोनों राज्य–संचालित सामयिक संप्रभुता की अवहेलना करते हुये, एक खालीपन को पैदा करते हैं जो गैर–राज्य कर्ताओं द्वारा भरा जाता हैः फ्लैट समय के लिये निगमों और स्पाइकी समय के लिये कार्यकर्ताओं के द्वारा।

सामयिकतायें, बेशक, कभी भी स्थिर नहीं होती हैं विशेषतः आज के धर्मनिरपेक्ष, वैयक्तिकरण, और बढती गतिशीलता वाले चीन में। जहाँ स्मार्टफोन्स और इंटरनेट कैफे के द्वारा लायी गयी एक निश्चित नवीनता है, वहीं पर, बींसवी सदी के प्रारम्भ से चीनी कामकाजी वर्ग के सामूहिक अनुभवों को ध्यान में रखते हुये, वास्तव में विच्छेद से कहीं अधिक ऐतिहासिक सततता है।

आमतौर पर श्रमिकों को मालिकों द्वारा थोपे गए समय के बहाव के साथ चलना पडता है – उनके कारखाने का औद्योगिक समय; उनके सोशल मीडिया को संचालित वाली कंपनी का फ्लैट समय। लेकिन, कभी–कभार, जब कार्य के दौरान जब चोट लगती है, जब प्रबंधन दुरूपयोग के खिलाफ सामूहिक शिकायत उठती है, जब कोरोनावायरस का प्रकोप अर्थव्यवस्था में ठहराव लाता है, डीबल्यूसी के सामने मौजूद अस्तित्वगत खतरें, समय की वैकल्पिक भावना को उत्पन्न करते हैं, जिसके लिये और कोई नहीं बल्कि श्रमिक स्वयं ही सामयिक संप्रभु बन जाते हैं। काम की मंदी। ठहराव। तोडफोड। वाइल्डकैट हमले। इस डिजिटल युग में वर्ग संघर्ष श्रमिकों के स्वामित्व वाली वैकल्पिक संप्रभुताः स्पाइकी समय– को स्थापित करने के बारे में है।

फ्लैट समय का उदय एक वैश्विक प्रघटना है। एआई प्रेरित सामग्री फर्जी खबरों, वायरल–मार्केट राष्ट्रवादी मीम्स को उत्पन्न करते हैं, जिसे एडम ग्रीनफील्ड "पोस्टह्यूमन एवरीडे" कहते हैं। फ्लैट समय दोहरा हैः उपभोक्ताओं के लिये, यह "प्राकृतिक" माना जाता है, जो डेटा विज्ञान और वॉल स्ट्रीट के नियमों द्वारा तय किया जाता है। उसी समय, आईटी कंपनियों के लिये, एक बार पकडे जाने के बाद, वही समय निजी तौर पर निगमों के स्वामित्व में होता हैं, जो पूंजी संचयन के लिये समय को कच्चे माल की तरह धूर्तता से और मुद्रीकृत रूप से चलाते हैं।

जब वैश्विक रूझान चीन में जड़ पकड लेता है तब कुछ अजीबोगरीब होता है : राज्य का अप्रत्याशित रूप से पीछे हटना। चीन दुनिया सबसे अधिक शक्तिशाली राज्य मशीनरी है जिसने ना केवल विद्यालयों और मास मीडिया के माध्यम से बल्कि माओवादी युग के बाद राजनीतिक लामबंदी के नियमन से समय का राष्ट्रीयकरण किया है। 1992 में देंग जियापिंग के बाजार सुधार के बाद से, सीसीपी मेगा इंफ्रास्ट्रक्चरों के माध्यम से स्थानिक योजना के लिये केंद्र में बना हुआ है जो यूरेशिया, अफ्रीका और अमेरिका के पार पहुंचना शुरू हो गए हैं। हालांकि, शी जिनपिंग के अधीन, प्राधिकारी सामयिकता पर अपनी पकड रखने में दिलचस्प रूप से विफल रहे हैं।

पार्टी–राज्य ने कोशिश अवश्य की। परंतु राज्य के प्रयासों के बावजूद, सामयिकता में हेरफेर करने की चरम शक्ति निश्चित तौर पर सार्वजनिक प्राधिकारों से निजी निगमों में स्थानांतरित हो गयी है। श्रमिकों के लिये, कोई भी सरकार–संचालित अभियान "सिंगल्स डे" के खरीददारी उत्सव के आसपास नहीं आया है। राज्यवाद लगभग अवशिष्ट स्थिति में बना हुआ है। प्रतिदिन प्राइम टाइम टीवी पर, शी जिनपिंग, ईश्वर जैसा व्यक्ति, का आनुष्ठानिक प्रदर्शन अवास्तविक रूप से तुच्छ हो गया है – शी के लिये भीड द्वारा ताली बजाने का एक ही शॉट कई मिनट तक चल सकता है – जो इंगित करता है कि फ्लैट समय के अंतर्गत सम्मिलित हो आधुनिकतावादी राज्यवादी समय खोखला हो गया है।

चीनी श्रमिकों के लिये, 2004 ने इंटरनेट युग में क्रांतिकारी समय की वापसी को चिन्हित किया। शानक्सी, सिचुआन, और ग्वानडोंग के प्रांतों में, तीन संघर्षों ने स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा स्थापित की गयी सूचना नियंत्रण की रेखा का ऑनलाइन फोरम्स और वेबलोग्स का उपयोग करके उल्लंघन किया। तब से, डिजिटल मीडिया से लैस श्रमिक विद्रोहियों के लिये अपने मालिकों और सत्तावादी सेंसरों पर आंशिक या पूर्ण सफलता का दावा करना आम हो गया है। 2010 की होंडा लॉक्स हडताल, 2014 की यू युआन शू फैक्ट्री हडताल, और 2018 के जैसिक संघर्ष के दौरान दिखाई दिया।

मुझे जियोर्जियो एगोम्बेन के "मसीहाई समय" बनाम "कालानुक्रमिक समय" के संदर्भ के साथ समाप्त करने दें। उनकी सामयिकताओं की यह जोडी जो कि स्पाइकी समय और फ्लैट समय के मध्य सन्निधि के सामानांतर हैं। उन्होंने लिखाः "मसीहाई समय" "कालानुक्रमिक समय" के बाह्य नहीं हैः कहने के लिये यह, " कालानुक्रमिक समय" का एक हिस्सा (*उना पोरजियोने*) है, एक हिस्सा जो संकुचन की एक प्रक्रिया से गुजरता है जो इसे पूरे तरीके से बदल देता है।" चीन की डीबल्यूसी के लिये, मसीहाई समय पहले से ही चल रहा है। डिजिटल मीडिया की व्यापकता और फ्लैट समय की प्रबलता के साथ, क्रांतिकारी समय की उत्पत्ति नजरों के लिये अक्सर अदृश्य होती है। परंतु स्पाइकी फ्लैट के अंदर तह किया हुआ है। यह विस्मरण के ठीक ऐसे ही क्षणों में कभी भी क्रांतियां होती हैं।■

सभी पत्राचार जैक लिनचुआन की को <jacklqiu@gmail.com> पर प्रेषित करें।

> अमेरिका–चीन की प्रतिद्वंदिता?

डिजिटल प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक उद्योग

टैनर मिरलीस, ऑन्टेरियो टैक यूनिवर्सिटी, कनाडा द्वारा

क्या संयुक्त राज्य का आर्थिक एवं सामाजिक प्रभुत्व समाप्त हो गया है?
स्त्रोतः विकीमीडिया क्रिएटिव कॉमन्स।

शीत युद्ध के अंत के बाद से लेकर आंतकवाद पर अमेरिका के नेतृत्व वाले वैश्विक युद्ध द्वारा महान मंदी की दीवार पर टकराने तक, अमेरिका दुनिया का सबसे बडा साम्राज्य था, और एक जिसका कोई प्रतिद्वंदी नहीं था। परंतु आजकल, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप, अमेरिकी विदेश नीति रणनीतिकार, और यहां तक कि प्यू रिसर्च सेंटर के द्वारा सार्वजनिक मतदान, चीन को वैश्विक व्यवस्था में अमेरिका की पकड के लिये एक खतरे के रूप में देखते हैं। "अमेरिका बनाम चीनः महान शक्ति प्रतिस्पर्धा का एक नया युग, परंतु बिना सीमाओं के" (*न्यूयोर्क टाइम्स*) और "अमेरिका–चीन प्रतिद्वंदिता के गर्माने के साथ, दक्षिण–पूर्वी एशिया के किसी एक पक्ष को नहीं चुनने के दिन जल्दी ही समाप्त हो सकते हैं" (*साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट*) जैसी समाचारों की सुर्खियां अमेरिका और चीन को प्रतिद्वंदियों के रूप में फ्रेम करती हैं। पर क्या वे हैं? अमेरिकी साम्राज्य लंबे समय तक सरंचनात्मक शक्ति के तीन स्तंभों से पुष्ट हुआ हैः वैश्विक आर्थिक ताकत, सैन्य वर्चस्व, और तकनीकी और सांस्कृतिक लोकप्रियता। जबकि चीन की अर्थव्यवस्था और सैन्यशक्ति तेजी से बढ रही है, और चीनी सोफ्ट पॉवर अभियान उडान भर रहे हैं, चीन अभी भी एक वास्तविक प्रतिद्वंदी नहीं हैं। 2019 में, अमेरीकी साम्राज्य ने चीन को आर्थिक और सैन्य रूप से सहा और मात दी, और विशेष रूप से, इसके तकनीकी और सांस्कृतिक उद्योगों के संदर्भ में।

दुनिया की सबसे बडी फोर्ब्स ग्लोबल 2000 की सार्वजनिक कंपनियों की सूची के अनुसार, इनमें से 575 का मुख्यालय अमेरिका में है, जबकि चीन 309 का घर है। शीर्ष 20 सबसे बडी वैश्विक कंपनियों में 10 अमेरिकी हैं और 5 चीनी है। डॉलर, ना कि रेनमिनबि, दुनिया की आरक्षित और सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली मुद्रा है, और अमेरिका की अनुमानित जीडीपी लगभग 19.39 ट्रिलियन डॉलर है, जो कि चीन की 12.24 ट्रिलियन डॉलर से काफी ज्यादा है। अमेरिका का 684.6 बिलियन डॉलर का रक्षा बजट चीन के 185 बिलियन डॉलर के परिव्यय से कहीं अधिक हैं, और इस युद्ध तिजोरी की धन राशि बोइंग, लॉकहीड मार्टिन, और जनरल डाइनामिक्स, दुनिया के सबसे बडे हथियारों के निर्माताओं और निर्यातकों के कोषों में प्रवाहित होती है। दक्षिण कोरिया में देइगू एयरबेस से जर्मनी के स्पांगडाहलेम एयरबेस तक, कई देशों में सैंकडों अमेरिकी सैन्य ठिकाने गुजरते हैं; हाल ही में, भौगोलिक रूप से चीन को घेरते हुये और रोकने के लिए उन्होंने भारत–प्रशांत क्षेत्र में अपना विस्तार किया। इसकी तुलना में चीन के वैश्विक सैन्य पदचिन्ह, डजीबॉउटी में सिर्फ एक विदेशी ठिकाने के साथ, जो कि अमेरिका से काफी दूर है, बहुत छोटे हैं।

यूएस की वैश्विक आर्थिक एवं सैन्य शक्ति को डिजिटल तकनीक और सांस्कृतिक उद्योग संवर्धित करते हैं जो अमेरिका की वैश्विक आर्थिक और सैन्य शक्ति को बढाते हैं, जिनका आकार, पहुंच, लाभ और शक्ति चीन से बहुत अधिक है। निम्नलिखित पर विचार करें: दुनिया की 154 सबसे बडी वैश्विक प्रोद्योगिकी कंपनियों में से 65

>>

अमेरिकी हैं जबकि 20 चीनी हैं। शीर्ष 10 में से 8 अमेरिकी (एपल, माइक्रोसोफ्ट, एल्फाबेट–गूगल, इंटेल, आई.बी.एम., फेसबुक, सिस्को सिस्टम्स, और ऑरेकल) और सिर्फ 1 चीनी (टेंसेंट होल्डिंग्स) है। दुनिया की दो सबसे बडी दूरसंचार कंपनियां अमेरिका में स्थित एटी एंड टी और वेरीजॉन हैं। तीसरी सबसे बडी चीन मोबाइल है। सिलिकॉन वैली 20 में से 14 सबसे अधिक देखी जाने वाली वेबसाइट्स, जिसमें सर्च ईंजन एकाधिकार वाली गूगल, सोशल नेटवर्किंग सुपरपॉवर फेसबुक, वीडियो शेयरिंग प्लेटफॉर्म्स यू ट्यूब के साथ साथ डिजिटल माइक्रो ब्लॉग्गिंग (टि्वटर) इनसाइक्लोपीडिया (विकिपीडिया), मनोरंजन स्ट्रीमिंग (नेटफ्लिक्स), ईमेल (आउटलुक और याहू), फोटो शेयरिंग (इंस्टाग्राम), डिस्कशन फोरमस् (रेडिडट) और स्मट (पोर्नहब और एक्सविडियोज) का भी घर है। चीन की इंटरनेट फर्में बढ रहीं हैं, परंतु उनके पास दुनिया की सबसे अधिक देखी जाने वाली साइटों में से सिर्फ दो (बायदु और क्यक्यू डॉट कॉम) है।

हॉलीवुड के ''पांच बड़े''–स्टूडियो वॉल्ट डिज्नी स्टूडियो और टवेंटियथ सेंचुरी स्टूडियो (वॉल्ट डिज्नी कंपनी के स्वामित्व वालें), वार्नर ब्रदर्स (एटी एंड टी वार्नर मीडिया के स्वामित्व वाले), यूनिवर्सल पिक्चर्स (कॉमकास्ट एनबीसी यूनिवर्सल के स्वामित्व वाले), और पैरामांउट पिक्चर्स (वायाकॉम सीबीएस के स्वामित्व वाले), – न कि चीनी स्टूडियो, वैश्विक बॉक्स ऑफिस पर राज करते हैं। 2019 में, हॉलीवुड का कुल बॉक्स ऑफिस 42.5 बिलियन डॉलर पर बंद हुआ जो कि सर्वकालिक उच्चतम स्तर था : उत्तरी अमेरिकी बॉक्स ऑफिस ने 11.4 बिलियन डॉलर कमाएं और अंतर्राष्ट्रीय बॉक्स ऑफिस ने 31.1 बिलियन डॉलर कमाएं। चीन की सरकार एक राष्ट्रीय रूप से समृद्ध मनोरंजन उद्योग के विकास को सुरक्षा और बढावा देती है, और चीन में शीर्ष फिल्मों और टेलीविजन कार्यक्रमों में से अधिकतर "मेड इन चाइना" हैं। चीन अमेरिकी सांस्कृतिक साम्राज्यवाद का शिकार नहीं है, परंतु चीन और अमेरिका के बीच सांस्कृतिक व्यापार संबंध अमेरिका के पक्ष में भारित हो असंतुलित हैं। हॉलीवुड फिल्में चीन के बॉक्स ऑफिस पर सालाना बडी कमाई करती हैं जबकि चीनी फिल्में अमेरिकी सिनेमाघरों में बहुत कम दिखाई जाती हैं और तुलनात्मक कमाई का स्त्रोत नहीं हैं। 2019 की शीर्ष की कमाई करने वाली फिल्म – एवेंजर्सः एंड गेम – ने चीन में 30 बॉक्स ऑफिस रिकॉर्ड बनाये जबकि चीन की प्रमुख ब्लॉकबस्टर – द वॉन्डरिंग अर्थ – ने अमेरिका में कोई रिकार्ड नहीं बनाये। सरल शब्दों में कहें, चीन के वैश्विक मनोरंजन का हॉलीवुड की सीमा–पार मुनाफे और सांस्कृतिक अपील से कोई मुकाबला नहीं है।

प्रत्येक वर्ष, सिलिकॉन वैली और हॉलीवुड अमेरिका की जीडीपी में बिलियनों जोडते हैं। साथ ही, डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्मस उपभोक्ताओं को पैदा करने और उन्हें उत्पादों को खरीदते रहने के लिये फुसलाने की पूंजीवाद की आवश्यकता को पूरा करते हैं। गूगल दुनिया का सबसे बडा डिजिटल विज्ञापन विक्रेता है, जो कि दुनियाभर के विज्ञापन पर खर्च का 31.3 प्रतिशत या 103. 73 बिलियन डॉलर हैं। 67.37 बिलियन डॉलर के निवल विज्ञापन राजस्व के साथ फेसबुक दूसरे स्थान पर है, उसके बाद 29.20 बिलियन डॉलर के साथ चीन स्थित अलीबाबा, और उसके बाद लगभग 14.1 बिलियन डॉलर के साथ अमेजन है। हॉलीवुड फिल्में और टेलीविजन कार्यक्रम पूंजीवाद की विज्ञापन अनिवार्यताओं को भी पूरा करते हैं। ये, पहले और प्रधान रूप से, अनुभवात्मक और सांस्कृतिक उत्पाद हैं जो स्टूडियोज द्वारा वितरकों को बेचने के लिये बनाये जाते हैं और सभी प्रकार की स्क्रीनिंग और स्ट्रीमिंग प्रदर्शन बाजारों में प्रदर्शकों को बेचे जाते हैं। हॉलीवुड के द्वारा ऐसे प्रत्येक काम को बाजार में भेजने के लिये 20 से 150 बिलियन डॉलर के बीच खर्च किये जाते हैं। परंतु वैश्विक विज्ञापनकर्ता भी हॉलीवुड को उनकी कहानी में ब्रांडेड उत्पादों को रखने के लिए के लिये भुगतान करते हैं। 288 मिलियन डॉलर के प्रचार सम्बद्ध उत्पाद के साथ, *स्पाइडर–मैनः फार फ्रोम होम* ने ब्रांडेड मनोरंजन के लिये कीर्तिमान स्थापित कियेः स्पाइडर मैन बैटल मिस्टीरियो देखें और ऑडी, पेप्सी, और यूनाईटेड एयरलाइन्स का आनंद लें! *स्ट्रेंजर थिंग्स* के तीसरे सीजन ने कोका–कोला, बर्गर किंग और केएफसी सिनर्जीज के सौजन्य से 15 मिलियन डॉलर की कीमत के उत्पाद प्लेसमेंट को शामिल किया।

अमेरिकी डिजिटल प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक उद्योग पूंजीवादी तर्कों से संचालित हैं, परंतु उनके संचालन अमेरिकी भूराजनीतिक महत्वाकांक्षाओं के साथ भी जुडे हैं। अमेरिकी विदेश मंत्रालय प्रत्येक उस देश में जिसे वे छूते हैं सिलिकॉन वैली और हॉलीवुड लाभ कमाने को प्रोत्साहित करके सांस्कृतिक और डिजिटल मुक्त व्यापार और कडी बौद्धिक संपदा नीतियों को आगे बढाते हैं। अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी (एनएसए) बिग टेक के ''निगरानी पूंजीवाद'' के मॉडल पर उत्पादन करने और फिर डेटा प्रोफाइलों के रूप में वैश्विक आबादी की निगरानी करने पर जोर देती है, और उस खतरे का जो वे अमेरिका पर डालते है, का अनुमानित विश्लेषण करती हैं। अमेरिकी "सोफ्ट पॉवर" को सहारा देने के लिये, पब्लिक डिप्लोमेसी और पब्लिक अफेयर्स के अमेरिकी कार्यालय मीडिया, पुराने और नये सभी प्रकार के मीडिया में पर अमेरिकी समर्थित अभियानों का संचालन करते हैं। अमेरिकी रक्षा विभाग इंटरनेट और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मस का "साइबरवारफेयर" के लिये "हथियारों" और "युद्धस्थलों" की तरह संचालन करते हैं और अमेजन, गूगल, और माइक्रोसोफ्ट जैसी फर्म्स को सैन्य अनुसंधान करने और इंटरनेट ऑफ थिंग्स और कृत्रिम बुद्धिमता (एआई) के विकास पर कार्य करने के लिए अनुबंधित करते हैं। अमेरिकी सुरक्षा राज्य की सभी शाखायें सांस्कृतिक उद्योगों में अंतर्निहित हैं, और वे नियमित रूप से हॉलीवुड के सुरक्षा–थीम वाले टेलीविजन कार्यक्रमों और फिल्मों के निर्माण में सहायता करते हैं। सीआईए ने *द अमेरिकन्स*, एक शीत युद्ध टीवी नाटक के निर्माण में मदद की थी। जो वीसबर्ग, एक पूर्व एजेंट, इसके रचनाकारों में से एक थे। सुरक्षा विभाग ने हॉलीवुड के साथ अनेक "मिलिटेनमेंट उत्पादों" जैसे *टॉम गॅनः मैवरिक, कैप्टेन मारवेल, और ट्रांसफॉर्मर्स* का सह–निर्माण किया है।

बींसवी और इक्कीसवीं सदी के अमेरिकी डिजिटल प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक उद्योगों के पूंजीवादी तर्कों की बीच अभिसरण करती हैं और अमेरिकी सुरक्षा राज्य के भूराजनीतिक कार्यों की मेरी पुस्तक *हॅार्टस एंड माइन्सः द यूएस एम्पायरर्स कल्चरल हिस्ट्री* (2016) और सहसंपादित अंक *मीडिया इंपिरियलिज्मः कॉटिन्यूटि एंड चेंज* (2019) में अधिक विस्तार से जांच की गयी हैं। संक्षेप में, अमेरिकी राज्य एजेंसिंया और डिजिटल प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक उद्योग सिलिकॉन वैली और हॉलीवुड मुनाफा–निर्माण के द्वारा दबाब डाले गए, अमेरिकी सैन्य –सुरक्षा व्यवस्था के द्वारा देखभाल किये जाने वाले, और अमेरिकन पॉपुलर संस्कृति और प्लेटफॉर्मस के द्वारा व्याप्त एकीकृत सहयोगी राज्यों की एक वैश्विक व्यवस्था का निर्माण, सुरक्षा और प्रचार कर रहें हैं। चीन अपने सोफ्ट पॉवर संसाधनों और साइबर–वार शस्त्रगार का विस्तार कर रहा है, और सांस्कृतिक प्रभाव अभियानों में संलग्न हो रहा है। परंतु चीन का अभी भी अमेरिकी साम्राज्य से कोई मुकाबला नहीं है।

सभी पत्राचार टैनर मिरलीस को <tanner.mirrlees@uoit.ca> पर प्रेषित करें।

> मुक्त उत्तर–समाजवादी प्रेस के लिए एक मुक्त बाजार?

मैंडी ट्रोजर, लुडविग मैक्सिमिलन यूनिवर्सिटी ऑफ म्यूनिख, जर्मनी द्वारा

बर्लिन में प्रदर्शन, नवंबर 1989। पीटर जिम्मरमेन द्वारा फोटो। बुन्दरसारचिव।

द वैस्ट जर्मन यूनियन मैगजीन *पब्लिजिस्टिक एंड कुंडस* ने इसे "द गोल्डरश" कहा था, जबकि डेइ टेगजेटुंग समाचार पत्र ने "पूंजीवाद के प्रारंभिक दिनों'' की याद दिला दी। दोनों ने 1990 के वसंत में पूर्व जर्मन डेमोक्रेटिक रिपब्लिक (जीडीआर) में प्रेस बाजार के विकास का उल्लेख किया है। पश्चिमी जर्मन राजनीतिक और आर्थिक समूह एक गहन लोकतांत्रिक मीडिया सुधारों को बाधित करते हुये अपने हितों के लिये बाजार संरचनाओं का निर्माण कर रहे थे।

सिर्फ पांच माह पहले, नवंबर 1989 में, लाखों पूर्वी जर्मन लोग, राज्य दमन का विरोध करते हुये और स्वतंत्र और लोकतांत्रिक मीडिया की मांग करते हुये, सडकों पर आ गये। इन विरोधों ने बर्लिन की दीवार को गिरा दिया और मीडिया में भी सुधारों की एक प्रगतिशील लहर की शुरूआत की। अंत में, 3 अक्तूबर 1990 को, जीडीआर जर्मनी से पुनर्मिलन करते हुये संघीय गणराज्य में शामिल हो गया। जहाँ एकीकरण के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है, अंतरिम अवधि इतिहास के बाहर रह गयी है। यह आलेख दर्शाता है कि मई 1990 तक जर्मन प्रेस बाजार में प्रभावी रूप से एक हो गया था।

> सुधार

नवंबर 1989 में शुरूआती मीडिया सुधार का लक्ष्य सोश्यलिस्ट यूनिटी पार्टी (एसईडी) के सूचना एकाधिकार को तोडना था। एसईडी के पास जीडीआर के कुल समाचार पत्र उत्पादन के लगभग 70 प्रतिशत पर पकड थी। दिसंबर 1989 के शुरूआत से ही, जीडीआर मंत्रीपरिषद ने एक प्रस्ताव पारित किया जिसने मीडिया तक बराबर पहुंच की गारंटी देकर विपक्षी समूहों का समर्थन किया। कुछ समय बाद ही, 5 फरवरी 1990 को, मत, सूचना और मीडिया की स्वतंत्रता पर अधिनियम ने सेंसरशिप को प्रतिबंधित कर दिया और घोषित किया कि प्रेस राजनीतिक और आर्थिक एकाधिकारीकरण से मुक्त है, और इस प्रकार, यह सार्वजनिक बहस के लिये एक खुला मंच है। जी.डी.आर. में प्रत्येक व्यक्ति और कानूनी इकाई को मीडिया के मुद्रण, प्रकाशन और वितरण का अधिकार था।

इसके बाद अखबार स्टार्ट–अप्स का एक विस्फोट हुआः अकेले फरवरी 1990 में ही 16 अखबारों की स्थापना हुई; जुलाई 1990 तक यह करीब 100 हो गये। केवल 17 मिलियन लोगों वाले एक देश में, इस स्टार्टअप लहर का अर्थ संरचनात्मक सुधार और लोकतांत्रिक भागीदारी था। इसी बीच, स्थापित अखबारों ने राजनीतिक स्वतंत्रता का दावा किया और आंतरिक सुधारों को लागू किया; एक प्रेस को वास्तव में क्या स्वतंत्र बनाता है पर न्यूजकक्षों, समाचार पत्रों और संपादक को पत्रों में बहस आयोजित हुईं।

उसी समय, केवल जी.डी.आर. मीडिया में सुधार के लिये कई संस्थानों की स्थापना की गयी। उदाहरण के लिये, अप्रेल 1990 तक गैर पक्षपातपूर्ण जमीनी स्तर की मीडिया कंट्रोल कांउसिल (एम.के.आर.) और मिनिस्ट्री ऑफ मीडिया पॉलिसी (एम.एफ.एम.) का पहले ही गठन हो चुका था। मई 1990 में मीडिया मंत्री गोट्टफ्रीड मुलर के अनुसार, उनका उददेश्य, "मीडिया स्वतंत्रता की तरफ सभ्य पारगमन" सुनिश्चित करना था न कि "सिर्फ पश्चिमी मॉडलों और अवधारणाओं को अपनाना या नकल करना"। स्वतंत्र प्रेस के लिये एक नये मॉडल को ढूंढना इसका लक्ष्य था।

>>

> बाजार का अधिग्रहण

इन राजनीतिक सुधार पहलों के साथ साथ, पश्चिम जर्मन मीडिया निगमों ने ईस्ट पूर्वी जर्मन बाजारों की ओर देखना शुरू कर दिया था। दिसंबर 1989 के शुरूआत में, प्रकाशकों ने अपने प्रकाशनों को जीडीआर में वितरित किया। छिटपुट निर्यात जल्द ही व्यवस्थित हो गये। फरवरी के मध्य तक, द वेस्ट जर्मन मिनिस्ट्री ऑफ द इंटिरियर (बीएमआइ) ने स्वीकार किया कि यहां पहले से ही विनियमन की आवश्यकता थीः करों का भुगतान नहीं किया गया था, कीमतें तय नहीं थी। हांलाकि, बीएमआइ ने प्रकाशकों की इन गतिविधियों" का ''कानूनन अपरिभाषित क्षेत्रों में'' "स्पष्ट रूप से समर्थन" किया। वेस्ट जर्मन पक्षपातपूर्ण हितों के द्वारा भारी रूप से वित्तपोषित इसका उददेश्य मार्च 1990 में पहले स्वतंत्र जीडीआर चुनावों को प्रभावित करने के लिये सूचना के प्रवाह को सुरक्षित करना था। इसने वेस्ट जर्मन बाजार हितों के द्वारा आकारित दिये गये एक मीडिया संक्रमण की राजनीतिक नींव रखी।

5 मार्च 1990 को, प्रमुख प्रकाशन घर स्प्रिंजर, बर्डा, बाउर उंड ग्रुनर प्लस जाहर (जी. जे) ने व्यवस्थित आयात शुरू कर दिये। उन्होंने अकेले ही अपनी स्वामित्व प्रणाली स्थापित कर ली। जीडीआर को चार वितरण क्षेत्रों में विभाजित करते हुये, उन्होंने संयुक्त रूप से मुख्यतः अपने स्वयं के प्रकाशन वितरित किये और उनसे ईस्ट जर्मन बाजार को भर दिया। संघीय कानून के अनुसार गैरकानूनी, इसने सभी जीडीआर राजनीतिक और नागरिक निकायों के बीच भयातंक पैदा कर दिया। चूंकि यह स्कीम चुनावों के सिर्फ दो सप्ताह पहले ही प्रारम्भ हुई थी, जीडीआर सरकार कार्यवाही करने में असमर्थ थी। विनियमन के प्रयास अस्वीकार या नजरअंदाज कर दिये गये।

चुनाव के तुरंत बाद, इन प्रकाशकों का लक्ष्य परभक्षी मूल्य निर्धारण के उपयोग द्वारा एक दूसरे पर प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त करना था। इस धन–हानि वाले व्यापार का लक्ष्य भावी पाठकों को जीतना था। इसने छोटे वेस्ट जर्मन प्रकाशक जो इस तरह की कीमतें वहन नहीं कर सकते थे, को बाहर कर दिया और ईस्ट जर्मन अखबारों पर अतिरिक्त दवाब डालाः अप्रचलित मुद्रण सुविधायें, कागज की कमी, और गैर–जिम्मेदार वितरण आधारभूत सुविधाओं ने प्रतिस्पर्धा करना कठिन बना दिया। इसके अलावा, 1 अप्रैल 1990 को, जीडीआर ने प्रेस अनुदान बंद कर दिया। अधिकांश समाचार पत्रों ने अपनी कीमतें दोगुनी या तिगुनी कर दी और जल्दी से विज्ञापनों की ओर देखने लगे जिसने वेस्ट जर्मन विशेषज्ञता को आवश्यक बना दिया। आवश्यक पूंजी निवेश के साथ साथ इसने ईस्ट जर्मन अखबारों के लिये प्रारंभिक निर्भरतायें पैदा कर दी।

> दो देश, एक बाजार

अप्रैल 1990 तक, सभी ईस्ट जर्मन समाचार पत्र पूर्व में एक प्रतिस्पर्धात्मक लाभ को लक्षित करते हुए वेस्ट जर्मन प्रकाशकों के साथ संयुक्त उपक्रम वार्ताओं में सम्मिलित हुए। अपने अपने क्षेत्रों में आंशिक एकाधिकारों वाले चौदह पूर्व एसइडी क्षेत्रीय अखबार प्रमुख मुद्दे थे। आधिकारिक तौर पर, इन अखबारों ने इरादे के समझौतों पर हस्ताक्षर कर लिये। हालांकि, वास्तव में वेस्ट जर्मन प्रकाशकों ने व्यापारिक संबंधों को सही स्थान पर रखा जिसमें विज्ञापनदाताओं के अधिग्रहण से लेकर समाचार पत्रों के मुद्रण तक और इक्विटी निवेश सम्मिलित थे। हालाँकि ऐसा सिर्फ अप्रैल 1991 में ही था, कि, ये सयुंक्त उपक्रम जर्मन सरकार की ट्रस्ट एजेंसी (ट्रयूहैंडेंस्टल्ट, टीएचए) के द्वारा कानूनी अनुबंधों में बदल गये। टीएचए ने प्रमुख वेस्ट जर्मन प्रकाशकों को अपरिवर्तित, पूर्व राज्य प्रेस एकाधिकार सौंप दिये जिसने जल्दी ही बाजार को आगे समेकित किया।

> एक स्वप्न की मृत्यु

इसका परिणाम प्रेस का संकेद्रण थाः 1990 में स्थापित 120 समाचार पत्रों में से जो कि किये गये थे, दो वर्ष बाद, लगभग 50 प्रकाशकों से सिर्फ लगभग 65 समाचार पत्र ही रह गए। नवंबर 1992 तक, यह संख्या 35 प्रकाशकों से 50 समाचार पत्रों तक गिर गयी। इतिहासकार कोनराड डसैल के लिये, यह "किसी भी प्रयोग के खिलाफ" संघीय सरकार के निर्णय का एक परिणाम था। इसका अर्थ 1989 के लोकतांत्रिक स्वप्न की मृत्यु था। जीडीआर के अनुभवों पर आधारित अनुभव, विचारों और पहलें कि कैसें एक स्वतंत्र प्रेस के बारे में पुनः सोचा, कुचली गई। इसने परिवर्तन काल को एक खोये हुए अवसर और जर्मन एकीकरण को पश्चिमी राजनीतिक आर्थिक व्यवस्था का सिर्फ एक विस्तार बना दिया। एक संप्रभु ईस्ट जर्मन प्रेस कभी विकसित नहीं हुई। ■

सभी पत्राचार मैंडी ट्रोजर को <Mandy.Troeger@ifkw.lmu.de> पर प्रेषित करें।

> जूजू के रूप में आईसीटी : अफ्रीकी प्रेरणाएँ

फ्रांसिस न्यामजोह, केप टाउन विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका द्वारा

| *अर्बु द्वारा चित्रण।*

मैं पश्चिम और मध्य अफ्रीका में बड़ा हुआ, जहाँ हम इस विचार के विश्वास के इर्द गिर्द अपने जीवन को संयोजित करते हैं, आचरण करते हैं कि दुनिया और जीवन में सब अधूरा है : प्रकृति अधूरी है, आलौकिक अधूरा है, मानव अधूरे हैं और इसी तरह मानव कर्म और मानव उपलब्धियां भी अधूरी हैं। हम विश्वास करते हैं कि जितना जल्दी हम इसे पहचान लें और अधूरेपन को अस्तित्व के सामान्य तरीके के रूप में समझ लें उतना हमारे लिए अच्छा होगा। हम यह भी मानते हैं कि अधूरेपन के कारण लोग अपने स्वरुप और विषयवस्तु में एकाकी और एकीकृत नहीं हैं, चाहे उनकी उपस्थिति से यह लगे कि वे हैं। और न ही वस्तुएँ ऐसी

>>

होती हैं। तरलता, होने की समग्रता और संपूर्ण में या अंशों में एक साथ बहुलता में मौजूद होने की क्षमता यथार्थ की मुख्य विशेषतायें हैं और अपूर्णता की पद्धतीय मीमांसा है। इसके अलावा, पश्चिम और मध्य अफ्रीका ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ अंतर्संबंध और अन्योन्याश्रितता को मान्यता दी जाती है एवं मनाया जाता है एवं इन्हे मानवों के मध्य एवं मानव और प्रकृति एवं पारलौकिक दुनिया के मध्य संबंधों को व्यवस्थित करने के लिए प्रमुख एवं वांछित टेम्पलेट के रूप में प्रयोग में लिया जाता है।

> अपूर्णता पर

पश्चिम और मध्य अफ्रीका में मनुष्य इस अपूर्णता की मान्यता के लिए अन्य मनुष्यों के साथ संबंधों के माध्यम से स्वयं को परिष्कृत करने के तरीकों को तलाशने के लिए उत्सुक हैं, और अपनी रचनात्मकता और कल्पना का उपयोग जादुई वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए करते हैं जो उन्हें प्राकृतिक और आलौकिक ताकतों या एजेंटों की मर्जी / इच्छा और लहरों के साथ इन संबंधों के साथ साथ अन्तर्क्रियाओं में विस्तारित कर सकते हैं। ऐसी जादुई वस्तुएं, जिन्हें आधुनिकता की भाषा में प्रौद्योगिकी के रूप में संदर्भित किया जाता है, आमतौर पर पश्चिम और मध्य अफ्रीका में स्थानीय नामों के तहत जाना जाता है, जिसे मैंने *जुजु* के रूप में अनुवादित किया है। इस तरह की मान्यताओं और प्रथाओं पर विश्वास करने वाले विश्वविज्ञान एवं पद्धतिशास्त्र को पूर्व में, और व्यापक तौर पर अभी भी, आधुनिक युग के छात्रों और पर्यवेक्षकों और कुछ अफ्रीकी लोगों द्वारा भी जादू टोना, इंद्रजाल, बुतपरस्ती, अंधविश्वास और आदिमवाद के रूप में गलत रूप से चित्रित एवं निन्दित किया गया हैं। विरोधाभासी रूप से, डिजिटल क्रांति द्वारा समर्थित नई सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों की लोकप्रियता को भी इस तरह के विश्वविज्ञान एवं पद्धातिशास्त्र को आधुनिकीकरण एवं विकास को शुन्य–योग उद्यम के रूप में देखने के लिए जोर देने वालों की मान्यताओं और तर्क के द्वारा एक उद्धार कारक की तरह देखतें हैं।

फिर भी, विजय के माध्यम से प्रभुत्व और श्रेष्ठता की महत्वकांक्षाओं और ऋण और ऋणग्रस्तता को स्वीकार करने से इनकार को एक तरफ करते हुए, यह स्पष्ट हो जाता है कि भविष्य इस तरह की उपेक्षित लोकप्रिय मान्यताओं और प्रथाओं का है जो अपूर्णता के यथार्थ से सूचित होता है। प्राकृतिक अवस्था में यदि आम मनुष्य अपूर्ण है, तो साथी मनुष्यों की साथ संबंधों और उधार एवं प्रौद्योगिकियों की माध्यम से स्वयं को उन्नत करने के सभी प्रयास, उन्हें पूर्ण बनाने बनाने से कहीं दूर, अंगभूत होने की विनम्रता और अन्य जैसे मानव, प्रकृति और आलौकिक के प्रति आभार की तरफ इशारा करते हैं। अपूर्णता एक स्थायी स्थिति है, जिसमे स्वयं की अपूर्णता की स्थिति को सुधारने के लिए विस्तार की खोज खुद की अपूर्णता का अहसास कराती है। ऐसा तब होता है जब विस्तार के उन सभी आयामों से सामना होता है जिसमे अभी महारत हासिल नहीं हुई है। इसके अतिरिक्त, विस्तार आंशिक रूप से और थोड़े समय की लिए ही काम करते हैं और उनमें से कुछ पूर्णता की उस डिग्री को, जिसे हम सोचते हैं प्राप्त किया है, वास्तव में कामतर कर देते हैं। यह तथ्य कि पूर्णता एक ऐसा भ्रम है जो केवल विजय की निष्फल महत्वाकांक्षाओं और श्रेष्ठता की शुन्य–योग खेलों को खोल सकता है, एक खुली, अन्तर्सम्बन्धित, तरल और विश्वास की दुनिया की खोज करने, उस पर चिंतन करने का आमंत्रण है। यह वह दुनिया होगी जिसमे किसी की पास शक्ति या शक्तिहीनता का एकाधिकार नहीं है, एक दुनिया जिसमें मानव और वस्तुएं एक दूसरे की पूरक हैं।

अन्तर्सम्बन्धों और अन्योन्याश्रितता पर जोर, श्रेष्ठता की शून्य–योग आकांक्षाओं से खुद तो व्यवस्थित रूप से हटा कर, हमें अपूर्णता को जीवन की सामान्य स्थिति की रूप में गले लगाने का आमंत्रण देता है।

> *जुजु* की रूप में डिजिटल प्रौद्योगिकियां

चिनुआ अचेबे की अदृश्य शक्ति पर पुस्तक एरो ऑफ गॉड में एक कहावत है, "जब हमे बीच रास्ते में एक छोटा पक्षी नाचते हुए दिखता है, हमे पता होना चाहिए कि उसका ढिंढोरची पास की झाड़ी में ही है"। सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमानता और सर्वव्यापकता के ईश्वरीय गुणों का दावा करने में सक्षम होने के लिए मनुष्यों को अपने साधारण स्वयं को *जुजु* जैसे असाधारण उत्प्रेरकों से बढ़ाने का प्रयास करना होगा। इसलिए, पश्चिम और मध्य अफ्रीका में व्यापक धारणा है कि यद्यपि हम मनुष्य हैं, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान होने की हमारी क्षमता को *जुजु* (जिसमें ताबीज, मंत्र, तंत्र, औषधि इत्यादि शामिल हैं, लेकिन इन्हीं तक सीमित नहीं) से बढ़ाया जा सकता है। इस तरह के जूजू आमतौर पर अतीन्द्रियदर्शी या आध्यात्मिक विशेषज्ञों द्वारा विशेष रूप से तैयार किए जाते हैं, जिन्हें अलग–अलग संदर्भों में भिन्न नामों से जाना जाता है।

इस प्रकार, मैं आईसीटी या डिजिटल प्रौद्योगिकियों को, जिसे पश्चिम और मध्य अफ्रीका में हमारी *जुजु* के रूप में संदर्भित करने की आदत है, के समान मानता हूँ। डिजिटल मानविकी के विद्वान के रूप में में, मैं आपको इस क्षेत्र की अपूर्णता और मानव होने की रचनशीलता के साथ साथ एक समय में हर जगह मौजूद रहने की क्षमता में विश्वास को देखने की लिए आमंत्रित करता हूँ। यह एक संकेत है कि हमें आईसीटी की तथाकथित अभिनव प्रगति को कैसे बेहतर समझे और उसे कैसे काम में लें के बारे में अतीत से बहुत कुछ सीखना है। डिजिटल तकनीकों का यह विचार कि वे मनुष्य और वस्तुओं के लिए अनुपस्थिति में भी उपस्थित रहना संभव बनाती हैं, बड़ी हद तक उस विश्वास से भिन्न नहीं है जिसे अक्सर जादू टोना और जादू के रूप में नामित कर खारिज कर दिया जाता है। यह विश्वास खुद को अनंत संभावनाओं की दुनिया मे ले जाता है – समकालिक बहुलता में उपस्थिति की और यथार्थ को पुनःपरिभाषित करने की अनंत शक्तियों वाली दुनिया। पश्चिम और मध्य अफ्रीका की लोकप्रिय दुनिया–लचीलेपन, तरलता और अपूर्णता की एक दुनिया, जो औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा खारिज और आधुनिकतावादियों द्वारा लगातार तुच्छ समझी जाती है – ऐसी है जहाँ समय और स्थान को सत्य और उसकी जटिलताओं के मार्ग में खड़े होने की अनुमति नहीं है। यह एक ऐसी दुनिया है जिसे हम हाल ही में इंटरनेट, सेलफोन और स्मार्टफोन जैसी नवीन आईसीटी के आगमन, उनकी तत्काल उपलब्धता एवं गम्यता के "जादू" और "जादूटोना" के साथ साथ आत्मकामिका, आत्मा–आसक्ति और दिखावे को बनाये रखने की उनकी प्रवर्ति द्वारा सुविधाजनक बनाये जाने के कारण बहुत अच्छी तरह समझ पाए हैं। द्विभाजन में सोचने की बजाय, रचनात्मक कल्पना के माध्यम से आत्म विस्तार के की पश्चिम और मध्य अफ्रीकी परंपरा अंतःसंबंधों के एक पद्धतिशास्त्र अपनाती है जो मनुष्य और आईसीटी के मध्य परस्परछेदन के सैंद्धांतिकरण के लिए फलकारी दृष्टिकोण हो सकता है।

मैं *जुजु* को आत्म–सक्रियता और आत्म–विस्तार की एक तकनीक के रूप में देखता हूं–कुछ ऐसा जो हमें अपने होने की साधारण अवस्था से उठने में सक्षम बनाता है। ये हमें उन चीजों को प्राप्त करने का सामर्थ्य प्रदान करता है जिन्हें यदि हम अपनी प्राकृतिक क्षमताओं या शक्तियों पर निर्भर रहते तो हम प्राप्त करने में असमर्थ होते। यह सच है कि यदि हमारे शरीर को अच्छी तरह से काम में लिया जाये तो ये असाधारण *जुजु* बन सकते हैं और हमें असाधारण कर्म करने में सक्षम बना सकते हैं। लेकिन इस तरह की तकनीकी रूप से प्रशिक्षित, प्रोग्राम किये गए या अनुशासित शरीर ऐसी

>>

चुनौतियों का सामना करने की संभावना रखते हैं जिन्हे अतिरिक्त सामर्थ्य की आवश्यकता होती है। दूसरे शब्दों में, जहाँ हमारे शरीर में हमारे प्रथम *जुजु* होने की क्षमता है, उन्हें अंततः हमारे कार्यों में प्रभावशाली होने के लिए अतिरिक्त *जुजु* की आवश्यकता होती है।

सुचारु रूप से कार्य करने के लिए *जुजु* अक्सर अन्तर्सम्बन्धों के जटिल नेटवर्क पर अक्सर भरोसा करतें हैं, यह तथ्य एक अतिरिक्त और विनम्र जटिलता है और अक्खड़पन की किसी प्रवृति के लिए एक बाधा है। अपने आप को कथित रूप से अधिक वैज्ञानिक और तकनीकि *जुजु* जैसे कंप्यूटर (डेस्कटॉप या लैपटॉप), सेलफोन (बेसिक या स्मार्ट) और अन्य मोबाइल उपकरणों (टेबलेट, आईपैड) से लैस करना भी इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि जब इनकी सबसे अधिक जरुरत होगी ये विफल नहीं होंगे।

संभवतः यही कारण है कि पश्चिम और मध्य अफ्रीका के जूजू पुरुष और महिलाएं, जिसे कुछ उनके " अफ्रीकी इलेक्ट्रॉनिक्स" कहना पसंद करते हैं के साथ आधुनिक/वैज्ञानिक तकनीकें (स्मार्टफोन्स, टेबलेट्स, आईपैड्स आदि) को काम में लेने से संकोच नहीं करते हैं। वे पारंपरिक और आधुनिक जूजू के इन सम्मिश्रणों का उपयोग आत्म–सक्रियण और विस्तार के लिए और अपने गावों के बाहर कस्बों में और यहाँ तक की अन्य महाद्वीपों में एक साथ कई स्थानों पर ग्राहकों से मिलने और सेवा प्रदान करने में सक्षम बनाते हैं।

जुजु, तंत्र, मंत्र और अतीन्द्रिय दृष्टि पर भरोसा आदिम और अतार्किक प्रतीत हो सकता है लेकिन ये सामर्थ्य– खजाने का एक भाग है जहाँ से हम अपने अपूर्णता के तथ्य के दृष्टिगत एजेंसी का चयन करतें हैं। उपरोक्त दिए गए तर्क के अनुसार इस संबंध में, *जुजु* आत्म–विस्तार के तथाकथित अधिक वैज्ञानिक, तार्किक और आधुनिक तरीकों जिनसे हम परिचित हैं (फोटोज, कम्प्यूटर्स, इंटरनेट, सेलफोन्स, स्मार्टफोन्स, जान संचार, सामाजिक मीडिया, पुस्तकें, बिजली, वाशिंग मशीन्स, कृत्रिम बुद्धि, परमाणु हथियार आदि), से बहुत अलग नहीं हैं। उदहारण के लिए, फ्रांस, कनाडा या बेल्जियम में फकीर जैसे शब्दों के लिए साधारण गूगल खोज आपको न केवल सेनेगल, माली या नाइजर के फकीरों की वेबसाइट्स और संपर्क विवरणों पर बल्कि उनके कार्यालयों, एजेंटों, फोन नंबरों और विदेशों में उनके कार्यालयों पर ले जाएगी। उदाहरण के लिए, कैमरून में, ज्योतिषियों द्वारा अप्रवासी कैमरून वासियों को कंप्यूटरस, स्मार्टफोन्स, और टेबलेट्स पर आने का आह्वान करना और पीछे छूट गए सम्बन्धियों की वेदना और दुर्दशा के बारे में जवाब मांगना असामान्य नहीं है।

> *जुजु* : एक आवश्यक बुराई?

हम डिजिटल प्रौद्योगिकियों और एल्गोरिदम की बढ़ती शक्ति के युग में सॉफ्टवेयर डिजाइनरों की अभूतपूर्व, बढ़ती और परेशान करने वाली शक्तियों को देख रहे हैं। हैकर्स के लिए दूर बैठे हमारे स्मार्टफोन में स्पाइवेयर, जो उन्हें एन्क्रिप्टेड संदेशों सहित हमारी सभी सामग्री तक पहुंचने में सक्षम बनाता है, और उन्हें हमारी जानकारी के बिना माइक्रोफोन और कैमरे को दूर से नियंत्रित करने की अनुमति देता है, को स्थापित करना कल्पना से परे नहीं है। इस तरह के स्पायवेयर निर्माता पश्चिम और मध्य अफ्रीका के जंगलों में अपने ग्राहकों और शिष्यों को सबके सामने भयरहित अतिरेक के मादक आवेश में धकेलने वाले स्पिरिट मध्यम से भिन्न नहीं हैं।

जिस तरह जीवन असमानताओं द्वारा सूचित और पोषित पदानुक्रम से भरा हुआ है, उसी प्रकार *जुजु* के मध्य भी असमानताएं और पदानुक्रम हैं। जितना शक्तिशाली आपका *जुजु* होगा, उतनी ही मूर्त और अमूर्त वस्तुओं के होने, देखने, करने, महसूस करने और सूंघने के साथ साथ अन्य लोगों, वस्तुओं, घटनाओं और प्रघटनाओं को प्रभावित और नियंत्रित करने की बेहतर संभावनाएं होती हैं। *जुजु* का उपयोग या तो अकेले या दूसरों के साथ संयोजन में किया जा सकता है, ताकि उनकी शक्ति को अधिकतम किया जा सके। एक अच्छे *जुजु* (ड्रोन मामला लीजिये) के साथ, जिसे वह अच्छे या बुरे के लिए प्रेम में या नफरत में प्रभावित करने की कोशिश कर रहें हैं, के लिए किसी को शारीरिक रूप से उपस्थित होने की आवश्यकता नहीं है। इस बारे में सोशल मीडिया, सुपरा–कनेक्टिविटी और मस्ती की बढ़ती अनिवर्यता के युग में वाई–फाई, हॉटस्पॉट या ब्लूटूथ की सुविधा वाले बेहतर संसांधन वाले स्मार्टफोन्स –एक सर्वाधिक सनसनीखेज प्रचलित *जुजु* – से बेहतर इसे कोई नहीं कह सकता है।

फिर भी, उनके विरोधाभासों और हेरफेर योग्य होने के बावजूद *जुजु* द्वारा हमेशा खुलती रचनात्मक उत्तेजना (तकनीक और प्रोद्योगिकी) के द्वारा लाई गई जोखिम और रोमांचक चेतना के बिना जीवन बहुत ही सामान्य, पुर्वनुमित ढंग से मानाकीत और नैत्यिक होगा। रचनात्मक नवाचार का विचार मृत होगा, क्योंकि व्यक्ति और समाज खुद को सुधारने और मजबूत बनाने की क्षमता खो देंगे। यह समाज और सामाजिक संबंधों में *जुजु* के महत्व पर प्रकाश डालता है। व्यक्ति और सामूहिकता *जुजु* को स्थितियों और अन्य को प्रभावित करने, मनाने और नियंत्रित करने एवं विपत्तियों को दूर करने व जटिल बनाने के लिए काम में लेते हैं जो *जुजु* के उनके भंडार के बिना संभव नहीं हो सकता है।

जुजु की सर्वव्यापकता को इस विचार के साथ संबद्ध किया जाना चाहिए कि कुछ के हाथों में केंद्रित होने से कहीं दूर, शक्ति, वास्तव में कुछ ऐसी है जो अक्सर बिना किसी चेतावनी के आती और जाती है। कितना भी शक्तिशाली व्यक्ति होगा, वह हमेशा एक तरफ विस्तारित शारीरिक अंगों और अतिरिक्त इन्द्रियों से और दूसरी तरफ *जुजु* (तकनीक और प्रौद्योगिकी) से स्वयं को बढ़ाने का प्रयास करता है। यह हमें बाहर को अंदर लेने और अंदर को बाहर करने की प्रवृत्ति को विकसित करने एवं उसकी हिमायत करने की आवश्यकता के प्रति संवेदनशील बनायेगा। ■

सभी पत्राचार फ्रांसिस न्यामजोह को <francis.nyamnjoh@uct.ac.za> पर प्रेषित करें।

> फिलिपिन्स में समाजशास्त्र कार्य

फिलोमिन सी. गुटिरेज, फिलिपीन्स विश्वविद्यालय, फिलिपीन्स तथा आईएसए की विचलन के समाजशास्त्र (आरसी 29) और महिला, जेंडर और समाजशास्त्र (आरसी 32) की अनुसंधान कमेटियों के सदस्य द्वारा

PHILIPPINE SOCIOLOGICAL SOCIETY

वैश्विक संवाद का यह अंक विभिन्न मुद्दों जैसे नगरीकरण और शासन, एलजीबीटी आंदोलन, ड्रग्स पर युद्व में हिंसा, गरीबों के बीच जन समाजशास्त्र करने और मिंडानाओं क्षेत्र के हाशियेकरण आदि पर फिलिपीन सोशियोलॉजिकल सोसायटी (PSS) के सदस्यों के विचार प्रस्तुत करता है। देश के तीन अलग–अलग क्षेत्रों या द्वीपों के समूहों, लुजोन, विसैस और मिंडनाओं से आते हुए, वे अपने संबंधित अनुसंधान रुचियों पर चर्चा करते हैं और आज के समय में फिलिपिनी समाजशास्त्रियों के सामने आने वाली चुनौतियों पर चिंतन करते हैं।

लुई बेनेडिक्ट इग्नासियो, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का निर्माण करने वाले विभिन्न शहरों के नगरीय फैलाव, मेट्रो मनीला के महानगरीकरण की गतिकी की ओर संकेत कर फिलीपीन्स में नगरीकरण के मुद्दों से निपटते हैं। शहरी गरीबी बढने तथा मलिन बस्तियों की संख्या बढ़ने से अपने विशेषाधिकार प्राप्त निवासियों की भौतिक सुरक्षा सुनिश्चित करने से लेकर आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने के कारण गेटेड समुदायों का विकास हुआ है। इग्नासियों नगरीकरण के संकट को न केवल संसाधन और परिवहन प्रबंधन की साझा समस्याओं के रूप में, बल्कि सामाजिक विभाजन और शासन के मुद्दों के रूप में भी प्रस्तुत करते हैं।

जॉन एंड्रयू एवेंजेलिस्ता इस पक्ष को लेते हैं कि फिलीपीन्स में एलजीबीटीक्यू आंदोलन के पीछे वैचारिक मतभेदों की समझ को प्रदान करने में क्वीर परिप्रेक्ष्य कैसे सहायता करता है। विविध वैचारिक तर्कों ने विभिन्न दावों को प्रस्तुत किया, जो भेद–भाव विरोधी कानूनों की वकालत करने और वर्तमान आर्थिक प्रणाली को बदलने का आह्वान करने से लेकर प्राइड परेड के पक्षधर मौज मस्ती वाले पहलुओं में दिलचस्पी वालों तक फैले थे। उनका तर्क है कि एलजीबीटीक्यू आंदोलन के इतिहास के निर्माण में विरोधाभास और संघर्ष के स्थान यह दिखातें हैं कि आंदोलन के हिस्सों में मतभेद विरोधी हितों के बजाय ऐतिहासिक उत्पाद हैं।

गुटिरेज ने ड्रग्स पर युद्व में हिंसा को प्रस्तुत किया है, जिसने फिलिपिन्स में हजारों ''ड्रग व्यक्तित्वों'' की हत्या की थी जैसा कि विवादास्पद कथाओं में शामिल था। फिलिपिनी जनता का ड्रग्स विरोधी अभियान का समर्थन मानवाधिकारों के उल्लंघन और गिरफ्तार ड्रग संदिग्धों पर पुलिस हिंसा के बयानों का विरोधाभासी है लेकिन ड्रग समस्या के समाधान के रूप में अभियान के उत्तराद्व द्वारा अपने दृष्टिकोण की पुष्टि करता है। जैसे ही विषय, एक व्यक्ति के फोकस के आधार पर, विविध आख्यानों की ओर खुलता हैं, यह आवश्यक हो जाता है कि सामाजिक शोधकर्त्ताओं को दंडात्मक लोकलुभावनवाद–एक ऐसा दृष्टिकोण जो सार्वजनिक भावनाओं के आधार पर आपराधिकता के खिलाफ दंडात्मक उपायों की वकालत करता है तथा दण्डात्मक संभ्रांतवर्गवाद–एक दृष्टिकोण जो अपराध पर वैज्ञानिक या विशेषज्ञ की राय को महत्वपूर्ण और जनता की भावनाओं को सरलीकृत मानता है, की बहस के परे देखना चाहिए।

फीबी जोए मारिया सांचेज का आलेख, 1986 में पीपुल्स पावर क्रांति की विफलता के विस्तार के रूप में राष्ट्रपति रोड्रिगो डुटर्टे के सत्तावादी लोकलुभावन शासन की आलोचना करता है, जिसका उद्देश्य लोकतांत्रिक संक्रांति प्राप्त करना था, तथा जिसने मार्कोस तानाशाही के दौरान प्रदर्शित राज्य की फासीवादी विशेषताओं की तुलना से अगर स्थिति खराब नहीं की, तो उनका नवीनीकरण ही किया है। सांचेज का तर्क है कि जन समाजशास्त्र, गरीबों के संगठनों को समर्थन दे कर तथा नागरिक समाज में अपनी भागीदारी को मजबूत करने और राज्य की नीतियों को प्रभावित करने के लिए उनकी मौन की संस्कृतियों को खोल कर बहुत कुछ प्राप्त कर सकता है।

अंत में, मारियो आगुजा आर्थिक राजनीतिक, सैन्य और सांस्कृतिक शक्ति के वास्तविक केन्द्र के रूप में उत्तर में मेट्रो मनीला के आधिपत्य के खिलाफ दक्षिणी फिलीपीन्स में मिंडानाओं के हाशिएकरण के बारे में लिखते हैं। वे स्वयं समाजशास्त्र के अभ्यास को समाविष्ट करने के इस केंद्र परिधि संबंध को समस्याग्रस्त करते हैं। जबकि मिंडानाओं के मुद्दे, जैसे कि मुस्लिम–इसाई संघर्ष, अत्यधिक गरीबी दर और हिंसात्मक अतिवाद, समाजशास्त्रीय विश्लेषण के लिए सम्मोहक विषय है, फिलीपीन्स के समाजशास्त्र का संभाषण उन विषयों तक सीमित था जो केंद्र के लिए रूचि के थे। इस पूर्वाग्रह को उलटने के लिए, पीएसएस ने हाल ही में क्षेत्र में वार्षिक सम्मेलन आयोजित कर मिंडानाओं को एक निर्णायक धुरी बनाया और मिंडानाओन समाजशास्त्रियों को राष्ट्रीय वार्तालाप में सबसे आगे को रखा। ■

सभी पत्राचार फिलोमिन सी गुटेरेज को <fcgutierrez@up.edu.ph> पर प्रेषित करें।

> फिलीपींस में नगरीय अध्ययन :

एक लंगर के रूप में समाजशास्त्र

लुई बेनेडिक्ट आर. इग्नासियों, सेंटो टॉमस विश्वविद्यालय, फिलीपींस और शिक्षा के समाजशास्त्र (आरसी 04) तथा क्षेत्रीय और नगरीय विकास (आरसी 21) पर आईएसए की अनुसंधान समितियों के सदस्य द्वारा

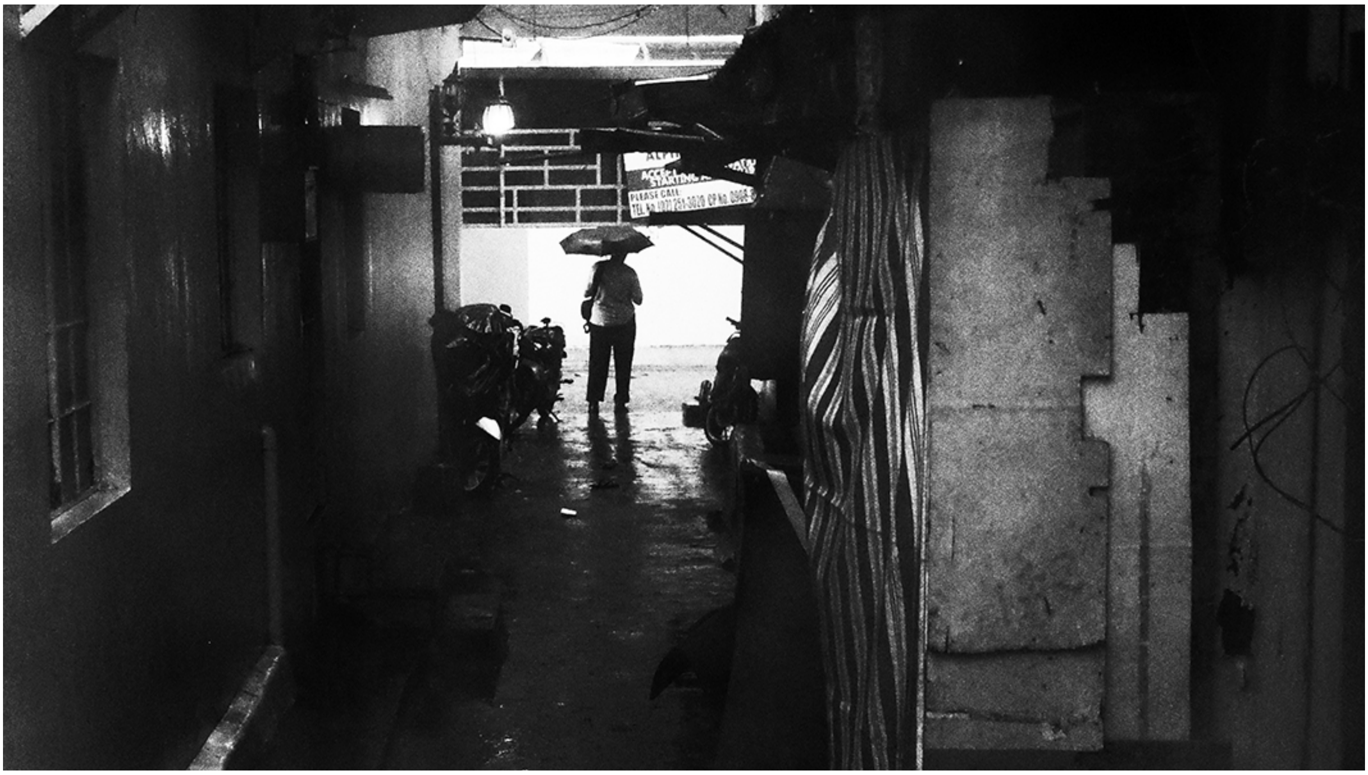

मेट्रो मनीला, जहाँ अनौपचारिक रहवासी एक सामान्य नजारा है, दुनिया में सबसे घनी आबादी वाले महानगरीय क्षेत्रों में से एक हैं। रहान पाओलो सी वेलॉर्डे द्वारा फोटो।

फिलीपींस में नगरीय अध्ययन, और विशेष रूप से नगरीय समाजशास्त्र ने 1980 के दशक से तेजी से विकास देखा, जब राजधानी शहर मनीला और उसके आस–पास के शहरों ने आर्थिक और राजनीतिक रूप से विस्तार करना शुरू कर दिया। समुदायों की संरचना और प्रौद्योगिकी की उत्कर्ष और जो उन्नति से पहले वे क्षेत्र जो हरे–भरे खेतों से ढंके थे और जो पानी और नदी प्रणालियों को जोड़ते थे, वे अब ऊंची इमारतों, गेटेड समुदायों और व्यस्त सड़कों के साथ फैले हुए हैं। लेकिन जैसे–जैसे इन क्षेत्रों में जनसंख्या बढ़ी, समुदायों की आवश्यकताऐं इस हद तक विकसित हुई कि वे अपने संसाधनों द्वारा स्वयं के विकास को बनाकर नहीं रख सकते थे। इन परिवर्तनों ने निवासियों के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक जीवन के लिए एक अधिक जटिल शासन व्यवस्था की आवश्यकता को उजागर किया तथा उन्होंने शहरी जीवन के विभिन्न पहलुओं पर भी चर्चाएं की। शहरी जीवन के विभिन्न पहलु जिनमें आवास और निर्मित पर्यावरण, आर्थिक प्रस्थिति, आपराधिकता और शासन के आधार पर निवासियों के विभाजन शामिल हैं, ने शहर को समझने के लिए विशेषीकृत लेंस की आवश्यकता का आह्वान किया।

इन चिंताओं से निपटने के लिए, राजनीतिक रूप से, राज्य ने अपने कुछ कार्यों को विभिन्न स्थानीय सरकारी इकाइयों जैसे स्थानीय मामलों के प्रशासन को अवक्रमित किया। फिलीपींस में, विकेंद्रीकरण की इस प्रक्रिया को स्थानीय सरकार संहिता 1991 के द्वारा अनुमति दी गई थी। संहिता के अनुच्छेद 24 के तहत, राज्य ने अपने कार्यों को स्थानीय सरकारी इकाइयों में बाँट दिया ताकि प्रत्येक इकाई सेवाओं और सुविधाओं के एक न्यूनतम सेट के लिए जिम्मेदार बने, जिन्हें स्थापित राष्ट्रीय नीतियों, दिशा–निर्देशों और

>>

मेट्रो मनीला में अंदर फैली पसिग नदी। इसकी पानी की गुणवत्ता को रहने लायक स्तर के नीचे माना जाता है। रहान पाओलो सी वेलॉर्डे द्वारा फोटो।

मानकों के अनुसार प्रदान किया जाना चाहिए। संहिता के अनुच्छेद 25 के अनुसार स्थानीय सरकारी इकाइयों को पर्याप्त संचार और परिवहन सुविधाएं, शिक्षा, पुलिस और अग्नि सुरक्षा और सामुदायिक विकास के लिए सहायता और सुविधाएं जैसी बुनियादी सेवाएं प्रदान करनी चाहिए।

फिलीपींस में मेट्रो मनीला के आसपास के क्षेत्रों में नव–एकीकृत तीन शहरों और तेरह नगर–पालिकाओं के लिए नगर भर की सेवाओं के समन्वय के लिए पहली बार 1970 के दशक में महानगरीय क्षेत्रों और महानगरीय शासन की महानगरीकीकरण की अवधारणा की कल्पना की गई थी। फिलीपींस में पहला महानगरीय शासी निकाय 1975 में राष्ट्रपति डिक्री नंबर 824ः मेट्रो मनीला आयोग के आधार स्थापित किया गया था जो 1975 से 1986 तक सेवारत था। इसका कार्य यातायात और परिवहन प्रबंधन, अनाधिकृत कब्जा नियंत्रण जैसी सेवाओं का समन्वयन तथा स्वच्छ और हरित वातावरण का सरंक्षण करना था। 1995 में रिपब्लिक एक्ट नंबर 7924 के आधार पर मेट्रों मनीला डेवलेपमेंट अथॉरिटी (एमएमडीए) बनाई गई, जिसमें बुनियादी सेवाओं को प्रदान करने के संदर्भ में सत्रह शहरों और नगर पालिकाओं के नियोजन, पर्यवेक्षण, समन्वय, विनिमय और एकीकरण के कार्य शामिल है। एमएमडीए द्वारा प्रदान की जाने वाली बुनियादी सेवाओं में शामिल हैं, यातायात में गिरावट और परिवहन दक्षता, कार्य प्रबंधन, प्रदूषण की निगरानी, बाढ और सीवेज प्रबंधन, शहरी नवीनीकरण, जोनिग और भूमि उपयोग योजनाय स्वास्थ्य और स्वच्छता और सार्वजनिक सुरक्षा जिसमें बचाव कार्य सम्मलित हैं।

यदि बीसवीं शताब्दी की विशेषता शहरीकरण के प्रभुत्व की थी, तो इसने 21वीं शताब्दी में नगरीय शासन और प्रबंधन के लिए नवीनतम व्यापक दृष्टिकोण के रूप में महानगरीकरण के लिए रास्ता दिया। शहरीकरण का विकास, शहरों में सीमित आय और रोजगार के सीमित अवसरों के कारण शहरी गरीबी में वृद्धि के साथ हुआ, क्योंकि शहरी आबादी प्राकृतिक रूप से एवं ग्रामीण इलाकों से प्रवास के माध्यम से बढती रही। इसने शहरों में मलिन बस्तियों के फैलाव को जन्म दिया। पीने योग्य पानी की आपूर्ति में कमी तथा स्वच्छता और अपशिष्ट निपटान भी तीव्र नगरीकरण से उत्पन्न समस्याएं थीं, जिनके परिणामस्वरूप पर्यावरण का अवकर्षण हुआ। नगरों में अपर्याप्त बुनियादी ढांचे और परिवहन सुविधाओं ने ग्रिडलॉक की एक ऐसी स्थिति पैदा कर दी जिसने आर्थिक विकास को प्रतिबंधित किया। परिणास्वरूप, 1970 के दशक के उत्तरार्ध में ये सभी शहरी समस्याएं शहरों के सामाजिक ताने–बाने के टूटने का कारण बनी, जो 1990 के दशक की शुरूआत में फिलीपींस में लोकतंत्र की बहाली के बाद उच्चतम स्तर पर पहुंच गया और जिसके वर्तमान तक परिणाम हैं।

मेरे शोध ने नगरीय अध्ययन के इस विशाल क्षेत्र, खासकर मेट्रो मनिला में, को देखने की कोशिश की है। मैंने पहले इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि कैसे एक अंतर–नगरीय, राष्ट्रीय एजेंसी जैसे कि मेट्रो मनीला डेवलेपमेंट अथॉरिटी ट्रैफिक प्रबंधन की नगरीय समस्या का यह तर्क प्रस्तुत करते हुए समाधान करती है, कि स्थानीय सरकारी इकाई के अधिकारियों और राष्ट्रीय एजेंसी के अधिकारियों के बीच राजनीतिक गतिशीलता ने इस तरह के जटिल मुद्दें को सुलझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मैंने इस बात पर ध्यान केंद्रित करना जारी रखा कि मेट्रो मनीला के नगरीय क्षेत्र में एक गेटेड समुदाय कैसे उभरा, विशेष रूप से यह देखते हुए कि किस प्रकार गेटेड समुदायों का कार्य आर्थिक सुरक्षा का एक स्वरुप होने से लेकर भौतिक सुरक्षा का एक स्वरुप होने तक और आगे दोनों के रुप में विकसित हुआ। हाल ही में, मैंने एक नगरीय विन्यास में सुरक्षा के वितरण की गतिशीलता को देखा। यह देखते हुए कि निजी घर के मालिकों द्वारा संचालित निजी स्वामित्व वाली संस्थाएं होने के नाते, गेटेड समुदाय अपने निवासियों को स्थानीय सरकार द्वारा आमजन को प्रदत्त की तुलना में उच्च स्तर की सुरक्षा प्रदान करती है। नव–उदारवाद और न्यू पब्लिक मैनेजमेंट के परिप्रेक्ष्य के माध्यम से देखी जाने वाली यह प्रघटना से उच्च वर्ग से अधिकाधिक नगरीय निवासियों को लुभाने के साथ–साथ उनके आवासीय सेट–अप को संरक्षण प्रदान करने हेतु सेवाओं के स्त्रोतों पर एकाधिकार करने के कारण स्थानीय सरकारी ईकाईयों की वैधता को कम करके आंकने का परिणाम उत्पन्न होता है।

मेट्रो मनीला में जनसंख्या की निरंतर वृद्वि –1.7 प्रतिशत की लगातार वार्षिक वृद्वि के साथ, –दुनिया भर के अन्य मेगालोपोलिस के समान–यह अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है कि नगरीय क्षेत्रों को समझने में उपयोग किए जाने वाले दृष्टिकोण अधिक विविध हों। फिलीपींस में शहरी अध्ययन स्वास्थ्य नगरीय नियोजन और डिजाइन, राजनीति और शासन, सामाजिक–आर्थिक समूहों के बीच विसंगति, और यहां तक कि जोखिम और आपदाओं जैसे विभिन्न क्षेत्रों में को वर्गीकृत किया गया है। 12.8 मिलियन लोगों की आबादी और दुनिया में सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व में से एक, मेट्रो मनीला के लिए समाजशास्त्र व्यक्तियों और उनके पर्यावरण के मध्य संबंधों को समझने के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रदान कर सकता है। समाजशास्त्र साक्ष्य–आधारित अनुसंधान और शहर में आप्लावनता द्वारा प्रदान की जाने वाली चिंताओं और संभावित समाधानों को जोड़ने के लिए एक लंगर प्रदान कर सकता है। ■

सभी पत्राचार लुइ बेनेडिक्ट आर इग्नासिओ को <lrignacio@ust.edu.ph> पर प्रेषित करें।

> क्वीर लेंस के माध्यम से संघर्षों का मार्गनिर्देशन

जॉन एंड्रयू जी इवेंजेलिस्टा, ढिलिमन फिलीपींस विश्वविद्यालय, फिलीपींस, तथा महिला लिंग और समाज (आरसी 32) पर आईएसए अनुसंधान समिति के सदस्य द्वारा

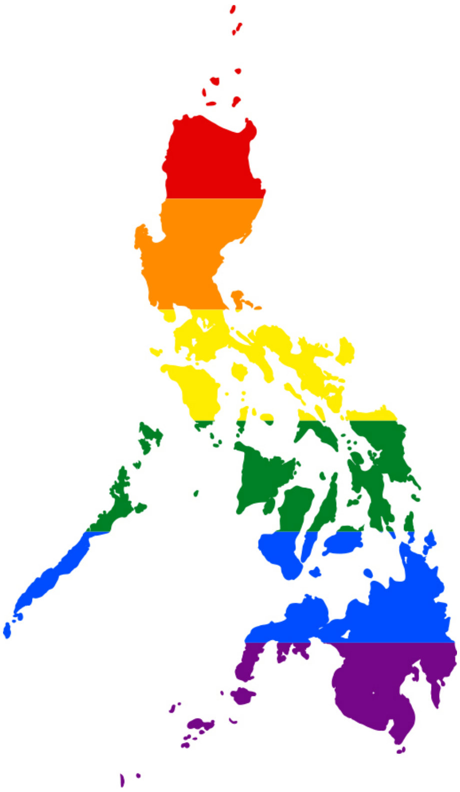

फिलीपीन्स क्वीर दृष्टि से कैसे देखते हैं? स्त्रोतः विकिमीडिआ क्रिएटिव कॉमन्स।

जब क्वीर सिद्वांत पहली बार एक ढांचे के रूप में उभरा जिसके माध्यम से समाज की जांच की जा सकती थी, तो इसने यदि विपक्षी के महिमामंडन की तरफ नहीं तो कम से कम समझ की तरफ हमारी दृष्टि को निर्देशित किया है। पितृसत्ता और विषम लैंगिकता के प्रति वचनबद्ध होने की रूढिवादिता से इसने घटनाओं, क्षणों, पहचानों और संस्कृतियों का उत्खनन किया जो लिंग और कामुकता के कठोर द्वैतवाद की अवहेलना करती है। इसने उन तर्कों की खोज की जो मौजूदा पादानुक्रमों को तोड़ते हैं। इस ढांचे के भीतर, क्वीर होने का मतलब सामान्यता के सरूप किसी भी वस्तु के बारे में संदेह करना है।

मानवविज्ञानी मार्टिन मैनालनसन ने क्वीरता की अवधारणा को गन्दगी में जड़ कर संलग्न किया। यहां कार्य केवल विध्वंसक कृत्यों और विचारों का उत्सव मनाना नहीं है। अपितु मिशन उन विभिन्न तरीकों को स्पष्ट करना है जहां विचलन सामान्यता से भिड़ता तथा परस्परछेदन करता है। इस प्रकार क्वीरता को उन गंदे स्थानों के रूप में समझा जा सकता है जहां परस्पर विरोधी तर्क आपस में भिड़ते है। यह सामाजिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों की समझ बनाने के लिए एक व्यवहारिक ढांचा प्रदान करता है जिसके भीतर विरोधाभासी अर्थो, व्याख्यानों और यहां तक कि विचारधाराओं पर कर्ता एक दूसरे का सामना करते हैं तथा बातचीत करते है।

अपनी पुस्तक *ग्लोबल दिवाज* (2003) में, मैनालनसन ने न्यूयॉर्क में रहने वाले एक फिलीपीनी समलैंगिक व्यक्ति के बारे में सम्मोहक कहानी सुनाई, जिसने अपने अपार्टमेंट के भीतर एक स्थानिक विभाजन बनाया था। एक तरफ कैथोलिक धार्मिक प्रतीकों के साथ एक वेदी थी, जबकि दूसरी तरफ नग्न पुरूषों की तस्वीरें थी। फिलीपींस में स्पेनिश उपनिवेशवाद की धार्मिक विरासत में एलजीबीटीक्यू लोगों के लिए अपेक्षाकृत स्वतंत्रता प्रदान करने वाले शहर तक पहुंचा। इस मामले ने समलैंगिकता और धर्म के बीच की गंदी मुटभेड़ का मानचित्रण करके क्वीरता का प्रदर्शन किया। इसने इस पक्ष को भी आलोकित किया कि सामाजिक और ऐतिहासिक परिस्थितियां किस तरह की गड़बड़ को स्थापित करने में योगदान देती हैं।

> मध्य में पकड़े गए

ऊपर उल्लेखित अस्त–व्यस्त अपार्टमेंट की तरह, क्वीर मुद्दों के शोधकर्ता अक्सर खुद को विरोधाभासों और संघर्षों के स्थानों में पाते हैं। अक्सर, उन्हें ऐसा लगता है कि वे विरोधी व्याख्यानों के बीच फंस गए हैं। फिलीपींस में एलजीबीटीक्यू आंदोलन के इतिहास पर मेरे स्वयं के काम में, मैंने स्वयं को कार्यकर्ताओं के बीच विभिन्न वैचारिक तनावों के बीच खड़ा पाया। यह कोई रहस्य नहीं है कि सामाजिक आंदोलन कभी भी एकरूप नहीं होते है। विभिन्न विचारधाराओं को ढ़ोते हुए, कार्यकर्ता अक्सर विभिन्न तरह से दावों को पढते और उनका निर्माण करते हैं। यह हैं जो मेरे जैसे क्वीरता के शोधकर्ता एलजीबीक्यू आंदोलनों की समझ निर्मित करते हुए इस प्रकार के तनावों का सामना करते हैं।

फिलीपीनी एलजीबीटीक्यू में एक शोधकर्ता और एक कार्यकर्ता के रूप में मेरी भागीदारी से, मेरा आंदोलन के विभिन्न क्षेत्रों में तनाव के साथ परिचय हुआ। जहाँ कुछ ने कानूनों की आवश्यकता को रेखांकित किया, दूसरों ने लिंग और यौन मुक्ति को समाजवादी संक्रमण के साथ जोड़ा। वहीं अन्यों द्वारा होमोफोबिया और स्त्री–द्वेष को व्यक्तिगत चेतना के उत्पादों के रूप में मान्यता दी, जिससे वे लिंग–उत्तरदायी शिक्षा के लिए बहस करने के लिए प्रेरित हुए। अंततः आंदोलन के एक हिस्से ने मुद्दों की अंतर अनुभागों की भी पहचान की। इस प्रकार उन्होंने एक कारण और एक समाधान पर तर्क को केंद्रित कर अपना बचाव किया।

इन तनावों को क्वीर लेंस के भीतर समझा जा सकता है। आंदोलन के भीतर विभिन्न विचारधाराओं का अस्तित्व विशिष्ट रूप से आंदोलन को गंदे के रूप में चरित्र चित्रण करता है, क्योंकि भिन्न

>>

वैचारिक तार्किकता एक दूसरे से भिड़ती है। मेट्रो मनीला में प्राइड मार्च के दौरान यह विशेष रूप से देखने योग्य है। प्रदर्शनकारी विशिष्ट विचारधाराओं के भीतर गठित विभिन्न दावों को उठाते है। जहां कुछ विशिष्ट भेद–भाव विरोधी कानूनों को पारित करने के लिए आवाज उठा रहे हैं, दुसरे वर्तमान आर्थिक प्रणाली के परिवर्तन की पूर्व आवश्यकता पर जोर देते हैं को भी रेखांकित किया गया है। अन्य लोगों द्वारा श्रम अनुबंध (अल्पकालिक रोजगार अभ्यास) को समाप्त करने के लिए भी आह्वान किया जा रहा है, जबकि कॉर्पोरेट टुकड़ी आकस्मिक प्रत्यक्ष रूप से मौज और नृत्य कर रही है।

हम उन सामाजिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों, जिनके भीतर आंदोलन उभरा, की समझ द्वारा इस तरह के तनाव और गड़बड़ी को समझ सकते हैं। व्यापक और अनवरत संघर्षों के फलस्वरूप 1986 में मार्कोस तानाशाही के पतन के कुछ वर्षों बाद एल जी बी टी क्यू संगठनों का गठन प्रारम्भ हुआ। तानाशाही शासन को गिराने के लक्ष्य में अब तल्लीन न होने के कारण कार्यकर्ताओं ने अन्य पक्ष–समर्थन में जाना प्रारम्भ कर दिया। नागरिक अधिकारों की रक्षा पर केंद्रित 1987 के संविधान की संस्था ने यौन और लैंगिक न्याय सहित कई मुद्दों पर काम करने वाले कानूनी संगठनों के गठन की प्रक्रिया तेज की है।

इस अवसर के आयोजन के साथ फिलीपींनी वाम में वैचारिक विभाजन हुआ। एक तरफ, एक हिस्से का मत था कि सामंतवाद उत्पीड़न को बढाने वाला बल है। दूसरीं ओर, कुछ समूहों ने इस तरह के पठन से विचलन किया क्योंकि उन्होंने राजनीतिक अवसरों को पहचाना और प्रगतिशील ऐजेंडे के लिए लड़ने के लिए उसका लाभ उठाया। विशुद्व रूप से वर्ग विश्लेषण से मुद्दों को देखने से इनकार करने वाले संगठन भी उभरे। फिलीपीनी वामपंथ के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित, एलजीबीटीक्यू कार्यकर्ताओं का विभिन्न राजनीतिक अनुशीलनों में समाजीकरण हुआ, जिसने आंदोलन के भीतर वैचारिक विविधता को तेज किया।

> क्वीरता की मुद्रा

इन परस्पर विरोधी स्वरों के मध्य, क्वीर सिद्धांत विचारधाराओं द्वारा ध्रुवीकृत आंदोलन के भीतर संवाद को सुविधाजनक बनाने में मदद कर सकता है। कुछ एलजीबीटीक्यू संगठनों की प्रवृति अन्य संगठनों के साथ वार्ता करने से इंकार करना है, खासकर जब वे उनकी संबंधित मान्यताओं के साथ संरेखित नहीं होते है। ये दृष्टिकोण और व्यवहार काफी हद तक इस तर्क से उपजे हैं कि वैचारिक मतभेद आवश्यक स्वाभाविक और प्रदत्त होते है। कुछ ने मुझे यह भी व्यक्त किया कि जोड़ने के प्रयास अक्सर विफल होंगे क्योंकि विचारधाराएं पहले से ही अतिक्रमित होती है एवं वे विशेष समूहों के बारे में हमेशा सकारात्मक धारणाओं को रोकती है।

इस सन्दर्भ में मुझे लगता है कि क्वीर लेंस सोच का एक व्यवहारिक ढांचा प्रदान करता है। राजनीतिक अंतर्विरोधों को स्वाभाविक रूप से विरोधाभासी रूप में देखने के बजाय, मैं उनके मतभेदों की व्याख्या ऐतिहासिक मतभेदों के रूप में करता हॅ। इस क्वीर विचारधारा की मुद्रा अलग–अलग विचारधारा रखने वाले कार्यकर्ताओं के प्रति समानुभूति विकसित करने की क्षमता में निहित है। क्वीरता के आह्वान पर ध्यान देने का मतलब कार्यवाहियों में निपुण होना है। हमें वैचारिक अंतर्विरोधों को प्रदत समझने से हटकर उन्हें विशिष्ट इतिहास के उत्पादों के रूप में देखना चाहिए। तब ही हम यदि आवश्यकता हो, एक ऐसी विचारधारा को लागू कर सकते है, जो दूसरे के उपयोग से न दबकर इस क्षण के लिए काम करें। ■

सभी पत्राचार जॉन ऐड्रयू जी इवेंजेलिस्टा को <jgevangelista@up.edu.ph> पर प्रेषित करें।

> ड्रग्स पर फिलीपीनी युद्ध के असंगत विवरण

फिलोमिन सी. गुटिरेज, फिलीपीन विश्वविद्यालय, फिलीपींस और आईएसए की विचलन का समाजशास्त्र (आरसी 29) एवं महिला लिंग और समाज (आरसी 32) की अनुसंधान समितियों के सदस्य द्वारा

वर्ष 2016, जुलाई में जब रोड्रिगो डुटर्टे ने फिलीपींस में राष्ट्रपति पद संभाला, तो ड्रग्स पर एक युद्ध तुरंत फिलीपीनी समुदायों में छा गया। इस अभियान ने फिलीपीन नेशनल पुलिस के सदस्यों द्वारा नशीली दवाओं के सेवनकर्ताओं को स्वेच्छा से आत्मसमर्पण करने और आदत को छोड़ने की प्रतिज्ञा के लिए तैयार करते हुए देखा। केवल छः महीने के डुटर्टे के प्रशासन के अंतर्गत एक लाख से अधिक ''ड्रग व्यक्तित्वों'' ने आत्मसर्पण किया। नशीली दवा विरोधी अभियान को को लोकप्रिय रूप से ओप्लांन तोखांग के नाम से जाना जाता था, जो टोकटोक और हैग्यो के लिए एक मिश्रशब्द है, जिसका अर्थ सिबुआनो भाषा में क्रमशः ''दस्तक देना'' और ''निवेदन करना'' है। 2016 के बाद से तोखांग अधिकारियों अथवा नशीली दवाओं के विरोधी सतर्कता बरतने वालों के लिए अतिरिक्त न्यायिक हत्याओं (ईजेके) की एक व्यंजना बन गया है।

ड्रग युद्व में बढती मौतों ने मानवाधिकार समूहों से आलोचना को बल दिया। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि जुलाई 2019 तक पुलिस अभियानों में कुछ 5,375 ड्रग व्यक्तित्व मारे गये हैं। मानवाधिकार समूहों का अनुमान है कि समग्र मृत्यु दर, जिसमें इजेके शामिल है, 25000 से आगे पहुंच गई है। फरवरी 2018 में इंटरनेशनल क्रिमिनल कोर्ट (आई सी सी) ने मानवता के खिलाफ अपराधों के लिए डुटर्टे की जांच शुरू की। 2019 के उत्तरार्ध में सोशल वेदर स्टेशनों (एस डब्ल्यू एस) द्वारा किए गए जनमत सर्वेक्षणों ने संकेत दिया कि 75 प्रतिशत फिलीपीनी लोगों का मानना है कि ओपलान तोखांग के परिणामस्वरूप कई मानवाधिकारों का उल्लंघन हुआ है।

ड्रग्स पर युद्व ने फिलीपीनी सामाजिक विज्ञान शोधकर्ताओं के बीच असाधारण रूचि उत्पन्न की, जिनमें से अधिकांश मानवाधिकारों के परिप्रेक्ष्य के प्रति संवेदनशील हैं। मादक पदार्थों की समस्या की सीमा और गंभीरता के विरोधाभासी आकलन के साथ मौतों के अंतर्विरोधी समग्र अनुमानों ने, सामाजिक शोधकर्ताओं सहित मानवाधिकार समूहों एवं विशेषज्ञों के मध्य गैर–कानूनी ड्रग अभियान की नैतिकता और राजनीति के आसपास की बहस से मेल खाता था।

गिरफ्तार किए गए लोगों और जो मारे गए उनकी विधवाओं की पीड़ा के आख्यान, एक नए हिंसक फिलीपीनी वास्तविकता की पृष्ठभूमि की रचना करते हैं। यह वास्तविकता वर्तमान राजनीतिक और आपराधिक न्याय व्यवस्था द्वारा ड्रग्स के उपयोग के अति–कलंकीरण के विरोधाभास को प्रस्तुत करता है, जो दवाओं के ''सामान्यीकृत प्रसार'' को आमतौर पर गिरफ्तार व्यक्तियों, मीडिया और बहुत कुछ जनता द्वारा तालमैक (क्रोनिक) शब्द द्वारा व्यक्त किया जाता है।

मेरे अपने स्वयं के अध्ययनों में, मैंने संदिग्ध ड्रग अपराधियों, विशेषकर उत्तेजक मेथामफेटामाइन (स्थानीय रूप से शबू के रूप में जाना जाता है) से जुड़े अपराधियों के असंगत बयानों की समझ बनाने के लिए संघर्ष किया। मैंने जेल में 27 पुरूषों का साक्षात्कार किया, जिनमें से अधिकांश प्रारंभिक और मध्य बाद की वयस्कता व्यस्कता के कामगार वर्ग के व्यक्ति थे जिन्हें ओप्लान तोखांग के प्रथम वर्ष में ड्रग संबंधित आरोपों पर गिरफ्तार किया गया था। उन्होंने दावा किया कि उन्हें गलत तरीके से गिरफ्तार किया गया था। पुलिस अफसरों द्वारा सबूत बनाए गए थे तथा अपराध को स्वीकार करने के लिए उनके साथ गलत व्यवहार या अत्याचार किया गया था। उन्होंने पुलिस के खिलाफ अपनी दुर्दशा को वलंग–कलबन–लाबान (रक्षाहीनता) बताया, जो जबरन उनके आवासों में उतरे थे। अपनी दुखद व्यक्तिगत दुर्दशा के बावजूद, इनमें से कई अभी भी डुटर्टे के नशीली दवा–विरोधी अभियान का समर्थन करते हैं क्योंकि यह लंबे समय से नजरअंदाज की गई बिगड़ती ड्रग्स स्थिति के खिलाफ एक निर्णायक कार्यवाही का प्रतिनिधित्व करता है।

स्पष्ट रूप से ''ड्रग अपराधी'' ''दंडात्मक लोकलुभावन'' जनता का एक हिस्सा हैं जिन्होंने 2016 में डुटर्टे के राष्ट्रपति पद के लिए समर्थन जुटाया था। नशीली दवाओं की लत और असुरक्षित पड़ोस की बढती संख्या ने एक नैतिक आंतक के रूप में, दंडात्मक लोकलुभावनवाद का पुनरूत्थान किया है। जॉन प्रैट द्वारा प्रस्तावित यह शब्द एक ऐसा दृष्टिकोण है जो अनुभवजन्य साक्ष्य या विशेषज्ञ की राय के बजाय सार्वजनिक भावनाओं के आधार पर आपराधिकता के खिलाफ अधिक दंडात्मक उपायों को अपनाता है। इसे 2019 के अंत में एसडब्ल्यू एस द्वारा जारी किए गए जनमत सर्वेक्षणों में देखा जा सकता है जो इंगित करते हैं कि फिलीपीनी जनता द्वारा डुटर्टे को 72 प्रतिशत की शुद्व संतुष्टि रेटिंग प्राप्त की और ड्रग्स पर उनके युद्व को 70 प्रतिशत की शुद्व संतुष्टि रेटिंग प्राप्त है।

डुटर्टे की प्रेसीडेंसी से पूर्व, गिडियोन लासको द्वारा किए गए अध्ययनों से पता चला कि फिलीपीन बंगरगाह समुदाय के युवाओं ने औपचारिक क्षेत्र (जैसे विक्रेताओं, कुली, यौन कर्मी) में अपने काम के लिए पंपागिलस (प्रदर्शन–शक्ति बढाने वाला) के रूप में शबू का इस्तेमाल किया। इसी तरह मेरे अध्ययन में प्रतिभागियों ने थकावट से ताकत हासिल करने, जागते रहने और ऐसे कामों को करने के लिए जो या तो कठोर हैं या जिनमें लंबे समय तक अप्रत्याशित घंटों (जैसे ट्रक और जीपनी ड्राइवर, निर्माण श्रमिकों) की आवश्यकता होती है, के लिए शबू का उपयोग करने की बात स्वीकार की। उन्होंने स्वयं को ''नशेड़ी'' कहलाने से इनकार कर दिया, क्योंकि उनके अनुसार वे अपनी इच्छानुसार इसे कभी भी रोक सकते हैं तथा इसे आदतन लत बनने नहीं देते। चूँकि वे इसे स्वयं के वेतन से खरीदते हैं, न कि चोरी, डकैती या किसी अन्य अपराध से प्राप्त धन से यह शबू को खुले बाजार में उपभोक्ता वस्तु की वैधता प्रदान करता है। अतः इसके उपयोग के विश्लेषण के दायरे को अवकाश और नशे की लत और उपसंस्कृति सिद्वांतों से परे जाने की जरूरत है, और गरीबी तथा आर्थिक अनिश्चितता के तनाव से निपटने के एक मुख्यधारा साधन के रूप में लाए जाने की आवश्यकता है।

प्रतिभागियों द्वारा उनके नशीली दवाओं के उपयोग के बचाव

>>

"फिलीपीन्स में ड्रग्स के प्रश्न को अच्छे बनाम बुरे लोग, नशेड़ी बनाम जो नहीं हैं, और अच्छे पुलिस वाले बनाम बुरे पुलिस वाले के मध्य लड़ाई तक नहीं जाना चाहिए"

के बावजूद, उनके साथ मेरे वार्तालाप का नतीजा उनके द्वारा यह स्वीकारोक्ति थी कि शबू ''परिवारों का नाश करने वाला'' ''आपराधिकता का एक स्त्रोत'', ''अतंतः बुराई'' और ''एक राष्ट्रीय समस्या'' है जिसका उन्मूलन होना चाहिए। उनके विवरणों का एक मुख्य पहलू गलत रूप से सूचित पुलिस ने वास्तविक रूप से दोषी : नशेड़ी जो अपने दोषों का समर्थन करने के लिए जघन्य अपराध करते हैं, पैसे के भूखे तस्कर जो उनका शोषण करते हैं और भ्रष्ट पुलिसकर्मी जो नशेड़ियों और फेरी वालों से पैसे वसूलते हैं, को छोड़ उन्हें पकड़ने की गलती की थी।

ओप्लान तोखांग पर पुलिस अधिकारियों के साथ मेंरे प्रारम्भिक साक्षात्कार भी मानवाधिकार समूहों द्वारा गलत समझे गए अनुभव तथा मीडिया द्वारा गलत रूप से प्रस्तुत अनुभव सुझाते है। उन्होंने देश और उसके नागरिकों को ''कभी न खत्म होते दिखते'' नशीली दवाओं के खतरे से बचाने के जनादेश और आदर्शो को पूरा करने के लिए अपने दृढ संकल्प की बात कही। जबकि वे मानते हैं कि ड्रग्स निर्धनता के कारण उत्पन्न खालीपन को भरती हैं और ड्रग्स माफिया आदतन और कमजोर आबादी का आर्थिक रूप से शोषण करते है। साथ ही वे ड्रग व्यक्तित्वों को सशस्त्र हथियारों से लैस लड़ाकू मानते हैं, जो जवाबी कार्यवाही के लिए तैयार है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वे ओप्लान तोखंग को एक ऐसे अभियान के रूप में देखते हैं जिसने ''ड्रग समस्या की सही गहराई'' को उजागर किया है और साथ ही इसने कैसे ''पुलिस रैंको को गंभीर रूप से भ्रष्ट किया है''। यदि एक गहन कहानी–दक्षिणपंथी अमरीकी रिपब्लिकन के अनुभवों को साझा करने के लिए आर्ली होश्चाइल्ड द्वारा काम में लिया जाने वाला दृष्टिकोण– को ''ड्रग अपराधियों'' के विवरण से बताया जा सकता है, तो शायद पुलिस द्वारा प्रदत्त विवरणों से भिन्न यह फिलीपीन वास्तविकता का एक अलग तरह के विवरण को प्रस्तुत करेगा।

ड्रग्स पर फिलीपीनी युद्व पर सामाजिक विज्ञान अनुसंधान वास्तव में साक्ष्य आधारित नीतियों को प्रदान करने में योगदान दे सकता है, चाहे इनमें लत के स्तर को मात्रात्मक रूप से निर्धारित करने की विधि या नशीली दवाओं के उपयोग की विभिन्नता के बारे में पुर्नसंप्रत्यीकरण अथवा आपराधिकता पर जनता की राय का अर्थ लगाना सम्मिलित हो। समाजशास्त्र के लिए चुनौती यह है कि उन ढांचों के बारे में सतर्कता बरते जो दोहरेपन की पेशकश कर फिलीपींस में एक ऐसी लड़ाई है जो ड्रग्स के सवालों को कमतर कर अच्छे बनाम बुरे लोगों, नशेड़ी बनाम जो नहीं हैं तथा अच्छे पुलिसकर्मी बनाम बुरे पुलिसकर्मी के बीच सीमित करती है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि ड्रग्स पर युद्व का शोध करने वाले समाजशास्त्रीयों को दंडात्मक सभ्रांतता से सावधान रहना चाहिए, एक शब्द जिसका प्रयोग विक्टर शम्मास, वैज्ञानिक या विशेषज्ञ की राय के अति–मूल्यांकन और भावनात्मक, तर्कहीन या सरलीकृत के रूप में एक सार्वजनिक मत को खारिज करने के लिए करते हैं। इस प्रकार का आत्मा–चिंतन समाजशास्त्रियों को सामाजिक कर्ताओं के समूह के भीतर और राजनीतिक और नैतिक स्पेक्ट्रम के कथित शिविरों के बीच जो जनता को बनाती है, के मध्य संघर्षात्मक कथानक के मध्य सहज होने का आह्वान करती है।

सभी पत्राचार फिलोमिन सी. गुटिरेज को <fcgutierrez@up.edu.ph> पर प्रेषित करें।

> फिलीपींस में जन समाजशास्त्र

को काम करने योग्य बनाना

फीबी जो मारिया यू. सांचेज, एमएमएजी/क्रिडिस, यूसी, लवेन, बैल्जियम और सेबू फिलीपीन विश्वविद्यालय, फिलीपींस तथा राजनीतिक, समाजशास्त्र (आरसी 18) पर आईएसए अनुसंधान समिति के सदस्य द्वारा

धार्मिक, वैज्ञानिक एवं नागरिक समाज संगठनों के सदस्य 2019 में मार्शियल कानून के खिलाफ सडकों पर प्रदर्श में सम्मिलित होते हुए।

मौजूदा डुटर्टे शासन के तहत शवों के ढेर लग गए है (रैपलर, दिसम्बर 2018)। अधिक स्पष्ट रूप से इस शासन ने फिलीपीनी पुलिस और सैन्य राज्य नौकरशाही के साथ–साथ सामंती राजनीतिक परिवारों तथा सार्वजनिक कार्यालय में उसे धृष्ट प्रवक्ता के रूप में समर्थन करने वाले एजेंटों के तंत्र के साथ एक प्रभावशाली राजनीतिक समझौता योजना शुरू की है। डुटर्टे ने कैसे फिलीपीन हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव के सदस्यों के एक विशाल बहुमत का नेतृत्व किया और 2018 में एक मुख्य न्यायाधीश को बाहर कर दिया, में यह प्रस्तुत किया गया है।

विद्वानों ने इसे ''अधिनायकवादी लोकलुभावनवाद'' करार दिया है, क्योंकि आंशिक रूप से, यह अपराध–विरोधी नीतियों में एक रणनीति के रूप में ''हत्या'' के खुले आह्वान के बावजूद, लोकप्रिय और विकासशील रूप से प्रगतिशील कार्यक्रमों के साथ मिला हुआ माना गया था। लेकिन यह शासन एक प्रकार की राजनीतिक गतिशीलता को सिंहासनारूढ़ करता है जो सत्तावाद का एक प्रत्यक्ष और नग्न रूप है। इसने फिलीपीनी समुदायों में हाल ही में पुलिस, सैन्य और अर्ध–सैन्यों के निषेध को बढाया है क्योंकि यह चुनावी धोखाधड़ी, घूसखोरी तथा भ्रष्टाचार के द्वारा गन्दी राजनीति में लिप्त होता है एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं, धार्मिक व्यक्तियों, मानवाधिकार पक्षकारों, वकीलों, शिक्षकों, विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों, किसानों, युवाओं एवं अन्यों की हत्या करने के औचित्य के रूप में अ ला मैक्कार्थी को प्रलोभन की तरह इस्तेमाल कर बड़े पैमाने पर हत्याओं में संलग्न होता है।

मार्कोस शासन की पहली तानाशाही के बाद से फिलीपीनी समाजशास्त्र में, फिलीपीनी जनता के लिए समाजशास्त्र की कथित अदृश्यता के लिए आवश्यक प्रतिक्रिया के रूप में जन समाजशास्त्र की नियुक्ति एक महत्वपूर्ण प्रथा है। यह इस दृष्टिकोण से उत्पन्न होता है कि फिलीपीनी समाज मार्कोस से लेकर डुटर्टे शासन तक स्थायी तानाशाही के संकट से जूझता रहा है। यह 1986 में प्रथम तथाकथित ईडीएसए पीपुल पावर रिवोल्युशन की प्रकृति के बारे में प्रश्नों को सामने लाता है, जिन्होंने मार्कोस तानाशाही को गिराया था, और क्या इसने वास्तव में लोकतांत्रिक परिवर्तन के लिए मार्ग प्रशस्त किया था? दुर्भाग्य से यह अब एक पूर्व विदित निष्कर्ष प्रतीत होता है कि 33 साल बाद फासीवादी व्यवस्था की स्थापना को देखते हुए पहल ईडीएसए पीपुल्स पावर रिवोल्युशन के पास वास्तविक लोकतांत्रीकरण के लिए कम साधन थे। यह स्थायी अधिनायकवाद का संकट प्रस्तुत करता है जो फिलीपिनों सबुआनो समाजशास्त्र को पुर्नचिंतन करने के लिए चुनौती देता है कि क्या ईडीएसए 1 के

>>

बाद के वर्ष वास्तव में एक पूर्ण लोकतांत्रिक संक्रमण को प्रखर करने वाले वर्ष थे, अथवा जिस प्रकार की तानाशाही पुनर्जीवित हुई है को सशक्त करने वाले वर्ष थे। नहीं तो यह कैसे संभव है कि पिछली सत्तावादी परम्परा अपने वर्तमान स्वरूप में और भी अधिक घातक प्रभावों के साथ जीवित हो उठी है? क्योंकि 3000 से कुछ ऊपर मार्कोस हत्याओं की आज तुलना में के हाल में औसतन 33 व्यक्तियों की प्रतिदिन हत्या हो यही है, जो कि डुटर्टे प्रशासन के प्रथम तीन वर्षों में 30,000 से ऊपर है (*रैप्लर,* दिसंबर 2018)।

सेबू फिलीपींस विश्वविद्यालय में जन समाजशास्त्र का अभ्यास (अ) पेशेवर समाजशास्त्र, (ब) आलोचनात्मक समाजशास्त्र, तथा (स) सार्वजनिक नीति के समाजशास्त्र को जोड़ता है। यह बुरावोय (2004) के जन समाजशास्त्र के साथ प्रतिध्वनित होता है, जो समाजशास्त्रीय श्रम के चार प्रभागों –(अ) पेशेवर समाजशास्त्र (ब) आलोचनात्मक समाजशास्त्र (स) जन समाजशास्त्र (बहु–सार्वजनिक) तथा (द) नीति समाजशास्त्र पर खड़ा है। पेशेवर समाजशास्त्र समुचित शोध प्रारूप और उचित विधियों और तकनीकों जैसे– वैयक्तिक अध्ययन, समाजवृत्त, नृवंशविज्ञान, प्रतिभागी–अवलोकन, बुनियादी सामूहिक एकीकरण, आदि के उपयोग द्वारा समाजशास्त्र शिल्प के लिए तंत्र प्रदान करता है। यह समाजशास्त्रियों एवं विद्यार्थी, दोनों को उनके शोध के परीक्षण के लिए समान रूप से सक्षम बनाता है तथा सामाजिक और सार्वजनिक नीतियों, सामाजिक संस्थाओं, संस्कृतियों, समूहों, संगठनों और एक साथ काम करने वाले लोगों के बीच अंतर्क्रिया की प्रक्रिया प्रक्रिया से सम्बंधित वार्तालापों में संलग्न करता है। इसी तरह, यह सामाजिक वैज्ञानिकों को सामाजिक निर्माणवाद से परे सामाजिक समस्याओं को नए तरीके से देखने के लिए आमंत्रित करता है और फिलीपीनी जन संवाद को सड़कों तक विस्तारित करता है और जन हित अभिव्यक्ति के पैटर्न को रिकॉर्ड करने और प्रकाशित करने के लिए तंत्र प्रदान करता है। यह शासन के देशज या स्थानीय राजनीतिक अभ्यास पर खड़ा है, जहां विवेचनात्मक समाजशास्त्र कुछ सीमित संसाधनों पर संघर्ष में लगे समूहों के बीच और सत्ता के लिए संघर्ष की समझ को सक्षम बनाता है। विवेचनात्मक समाजशास्त्र संरचनाओं –चाहे प्रभावित अथवा प्रभावशाली–को तोलता है। जो कौन नियंत्रित करता है और कौन नियंत्रित होता है। इसका अंतिम बिन्दु एक फिलीपीनी आलोचनात्मक जन का निर्माण है, जिसे एक सामाजिक आंदोलन को प्रारम्भ करने के लिए वास्तविक सार्वजनिक प्रदर्शनों में जुटाया जा सकता है। बदले में यह सामाजिक आंदोलन अंतिम कड़ी के लिए आवश्यक प्रमुख प्रस्तावक बन जाता है जो नीतिगत समाजशास्त्र के रूप में सार्वजनिक नीतियों की सामग्री और संदर्भ का मूल्यांकन और आंकलन करता है।

ऊपर उल्लेखित कड़ियों की जटिल बुनाई तकनीकों का ठोस समामेलन करती है जो जन समाजशास्त्र को वैज्ञानिक क्षेत्र के रूप में काम करने में सक्षम बनाती है। जन समाजशास्त्र तब संभव होता है जब सीमांत क्षेत्रों में संसाधनों तक पहुंच और नागरिक समाज और राज्य के भीतर महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए लोकतांत्रिकरण की गतिशीलता को सक्षम बनाया जाता है। यह पहले छात्रों और प्रोफेसरों के मध्य संवाद में समाजशास्त्रीय कल्पना में एक अकादमिक अभ्यास का रूप लेता है। तत्पश्चात यह उत्पीड़ित समुदायों के मध्य गहन विचार–विमर्श सैंद्धांतिकरण और सामाजिक अभियांत्रिकी द्वारा मौन की संस्कृति को खोलने के लिए एक सामाजिक उपकरण एवं सक्षम तंत्र के रूप में कार्य कर कक्षा की चारदीवारी के परे जाता है ऐसा वह निर्धन, वंचित उत्पीड़ित और दूषित व्यक्तियों और समुदायों के मध्य संगठनों को व्यापक विचार–विमर्श, सैद्धांतिकरण, एवं सामाजिक अभियांत्रिकी द्वारा समर्थन दे कर करता है। एक समाजशास्त्री के लिए एक व्यापक बल राज्य द्वारा सीधे तौर पर और हिंसक तरीके से शासित वर्ग के हितों संरक्षण एवं संवर्धन के लिए एक साधन के रूप में सामने लाने का एक साधन है।

विशेष रूप फिलीपींस में आज, जन समाजशास्त्रीयों को लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया के अग्रदूत के रूप में प्रोत्साहित किया जाना चाहिए क्योंकि फिलीपींस लोकतांत्रिक घाटे और कानून के शासन की अनुपस्थिति के एक पेचीदा स्तर का सामना कर रहा है। मार्कोस युग की तरह, इस बार, फिलीपींस को नागरिक समाज संरचनाओं की आवश्यकता हैं जो कि स्व–संगठित, स्वैच्छिक, स्व–उत्पादक, वास्तव में राज्य से स्वायत, तथा साझा नियमों के पुंज या एक कानूनी बाध्यता द्वारा सार्वजनिक हितों को स्पष्ट करने में सक्षम हो। अतः जन समाजशास्त्र के अंतिम बिंदु को सार्वजनिक प्रदर्शन का समाजशास्त्र कहा जा सकता है। सार्वजनिक प्रदर्शन के समाजशास्त्र में मुद्दों या अधिवक्ताओं पर सामूहिक युगीन संचारकों के रूप में प्रमाण, अनुनय उपकरण, लेन–देन, और समन्वय तंत्र, संज्ञानात्मक और तर्कसंगत उपकरण औरध्या वोट बैंक या लोगों के समूह के रूप में प्रतिस्पर्धा और गतिशीलता के सामाजिक उपकरण शामिल होते हैं। सार्वजनिक प्रदर्शन का यह समाजशास्त्र मापता है कि कार्यरत जन समाजशास्त्र कितना कुशल और प्रभावी है। और प्रदर्शनों में जनता, सार्वजनिक नीति यंत्रीकरण का संकेत है क्योंकि यह सरकार की सार्वजनिक नीति की प्रभावशीलता या विफलता के लिए आंकलन और लेखांकन के लिए एक मंच प्रदान करती है।

जन समाजशास्त्र का एक प्रमुख अंग सरकार और शासित के बीच संबंधों का संक्षिप्तीकरण तथा सैद्वांतीकरण है। (*लासकॉम्स और ले गैलेस, 2007, द अमेरिकन सोसिओलॉजिस्ट, 2005*)। वैश्विक दक्षिणी दृष्टिकोण से एक देशी तर्क या सामुदायिक सामूहिक साझाकरण और एकजुटता के संबंध के ढांचे में वास्तविक शासन आता है। फिर इसे ढांचे को और सरकारी संस्थानों के साधन–निर्माण, विनिमय, कर–निर्माण और जन–संचार में शामिल किया जाता है जो नागरिक समाज की वास्तविक जन समीक्षा और उसके जन प्रदर्शन के अधीन रहते हैं।■

सभी पत्राचार फीबी जो मारिया यू. सांचेज को <phoebe.sanchez@uclouvain.be> पर प्रेषित करें।

> फिलीपीनी समाजशास्त्र में मिंडनाओं का मुख्यधाराकरण

मारियो जॉयो अगुजा, मिंडनाओं स्टेट यूनिवर्सिटी, फिलीपींस, फिलीपीन सोशियोलोजिकल सोसायटी के अध्यक्ष और आईएसए की सशस्त्र बल और संघर्श संकल्प (आरसी 01), सोशियोलॉजी ऑफ एजिंग (आरसी 11), नगरीय एवं क्षेत्रीय विकास का समाजशास्त्र (आरसी 21), कला का समाजशास्त्र (आरसी 37) और आपदा का समाजशास्त्र (आरसी 39) पर अनुसंधान समितियों के सदस्य द्वारा

मिंडनाओ में फिलीपीनी समाजशास्त्र संघ के 2019 सम्मलेन के प्रतिभागी। श्रेयः फिलीपीनी समाजशास्त्र संघ

मिंडनाओं के द्वीप, जिन्हें अक्सर दक्षिणी फिलीपींस के रूप में जाना जाता है, वे हाशिए के आख्यानों से परिपूर्ण राष्ट्रीय इतिहास में हाशिएकरण से सबसे अधिक पीड़ित हुए। पूर्व में, मगुइंडानाओं और सुलु के सल्तनत के तहत मिंडानाओं ने 1521 में स्पेन निवासियों के आगमन से पहले देश के बाकी हिस्सों की तुलना में शासन की एक केंद्रीकृत प्रणाली और उन्नत सभ्यता को विकसित किया था। सल्तनतों ने 300 साल तक स्पेनिश उपनिवेशवादियों से ''मोरो वार्स'' की कड़वी लड़ाई लड़ी थी और वे कभी भी उपनिवेश नहीं बने। अमरिकीयों ने जब 1898 में स्पेन के साथ पेरिस की संधि पर हस्ताक्षर किए तब मिंडानाओं अचानक फिलीपींस का हिस्सा बन गया, और तब से वह ''कानूनी रूप से उपनिवेश'' बना। यद्यपि, एक शाही शक्ति के रूप में यह अमरिका था जिसने मिंडानाओं के विनाशकारी उपनिवेशीकरण के काम को शुरू किया जिसके परिणामस्वरूप यह आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक हाशिए पर चला गया। मिंडानाओं के लोगों के खिलाफ किए गए ऐसे ऐतिहासिक अन्याय को अलगाववादी मोरो समूहों के कड़वे संघर्ष और दक्षिणी फिलीपींस में कल्याण की भयावह स्थिति के खाते से जोड़ा गया है। मिंडानाओ के लोगों के खिलाफ किए गए अन्याय आज तक संक्रमणकालीन न्याय का विषय बने हुए हैं।

उत्तर में मनीला (बाद में मेट्रो मनीला) का वस्तुतः औपनिवेशिक और घरेलू शासनों दोनों के लिए आर्थिक, राजनीतिक, सैन्य और सांस्कृतिक शक्ति के वास्तविक केंद्र के रूप में उदय ने देश में एक अन्यायपूर्ण केंद्र–परिधि संबंध को बढ़ावा दिया है। दक्षिण

>>

में शांति की खोज तथा अधिक स्वायत्त आर्थिक और राजनीतिक सशक्तिकरण के प्रति सरकार का विकेंद्रीकरण मायावी बना हुआ है। प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण होने के बावजूद मिंडानाओं में उच्च गरीबी दर है और यह मुस्लिम–ईसाई संघर्षों के अंतर्विरोधों के साथ अलगावाद से ग्रस्त है। फिलिपिनीं सरकार (जी पी एच) और मोरो इस्लामिक लिबरेशन फ्रंट (एमआईएलएफ) के मध्य 2014 की बेन्गसमोरो पर विस्तृत संधि (सी ए बी) द्वारा लाई गई शांति हिंसक चरमवाद अतिवाद के खतरे के साथ अभी मंडरा रही है, इसमें हिंसात्मक अतिवाद का खतरा अभी भी कम नहीं हो रहा है, जो फिलीपीन राष्ट्र में मिंडानाओं की हाशिये की स्थिति को महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय जांच का विषय और वस्तु बनाता है।

> फिलीपीनी समाजशास्त्रीय संघ का केंद्रबिंदु आख्यान

केंद्र–परिधि संबंधों के राष्ट्रीय आख्यान शैक्षणिक, वैज्ञानिक और व्यावसायिक आख्यानों सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयासों को आक्रांत करता है। फिलीपीन समाजशास्त्र संघ (पीएसएस) इस तरह के आख्यान का बेहतरीन उदाहरण है। फिलीपींस में समाजशास्त्र का विकास मुख्य रूप से एक केंद्र–महानगरीय पहल था। इसमें समाजशास्त्रियों द्वारा इसकी सदस्यता और नेतृत्व पर केंद्र से समाजशास्त्रियों का प्रभाव रहा है। इसके प्रकाशन, *द फिलीपीन सोश्यिोलॉजिकल रिव्यू* में ज्यादातर लेखक केंद्र के रूचि के विषयों पर लिखने वाले तथा केंद्र के समाजशास्त्रियों को शामिल किया गया था। इसके सम्मेलन ज्यादातर केंद्र में होते थे। हालांकि, हाल ही में, यह प्रवृत्ति बदल रही है।

पीएसएस का आयोजन ज्यादातर केंद्र के उन व्यक्तियों द्वारा किया जाता था, जिनके विश्वविद्यालयों में समाजशास्त्र के पाठ्यक्रम होते थे। चार्टर के सदस्यों और उनके संस्थागत संबद्वताओं की सूची इस बात से को परिलक्षित करती है। 1952 में जब पीएसएस का गठन किया गया था, तब इसके चार्टर सदस्य निम्नलिखित संस्थानों से जुड़े थे, जो कि सभी महानगर मनीला में स्थित थे, अर्थात, डे ला सालले विश्वविद्यालय, फिलीपीन महिला विश्वविद्यालय, फिलीपीन रूरल क्रिश्चियन फेलोशिप, यूनिवर्सिटी ऑफ द ईस्ट, कॉलेज ऑफ होली स्पिरिट, यूनियन थियोलॉजकल सेमिनरी और फिलीपींस विश्वविद्यालय से।

परिणास्वरूप, पीएसएस का नेतृत्व महानगर से निर्देशित था। अपने 69 वर्षों के अस्तित्व में, संगठन की अध्यक्षता महानगर मनीला द्वारा 54 बार, लूजोन से बाकी सात बार और मिंडानाओं ने आठ बार की। विसाय द्वीप समूह को अभी भी संगठन के नेतृत्व पर कब्जा करना है। फिलीपींस विश्वविद्यालय और ऐटेनेओ डी मनीला ने 43 वर्षो तक संगठन को नेतृत्व प्रदान करने में एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा की जबकि मिंडानाओं केवल आठ वर्षों के लिए या 10.29 प्रतिशत के लिए अपने नेतृत्व शीर्ष पर रहा है। आखिरी बार इसने यह पद 1980 के दशक में संभाला था। यह केवल 2019 और 2020 में फिर से हुआ कि इसे नेतृत्व प्रदान करने और देश के समाजशास्त्रीय विमर्श में सशक्त मिंडानाओं परिप्रेक्ष्य लाने का अवसर मिला।

> एक बदलता जनोदश

2000 के दशक से शुरू पीएसएस ने मिंडानाओं में कई पहल की हैं। यह समय की पुकार के प्रत्युत्तर में है, लेकिन इसलिए भी क्योंकि मिंडानाओं आखिरकार नेतृत्व का हिस्सा बन गए। यह पीएसएस के लिए न केवल अपनी सदस्यता को मिंडानाओं में लाने का अवसर बना, बल्कि मिंडानाओं आख्यान के साथ राष्ट्रीय कथानक के हिस्से के रूप में अपनी सदस्यता को परिचित करने के लिए भी अवसर बना। सुरक्षा चिंताओं के बावजूद, 2014 का पीएसएस सम्मेलन सफलतापूर्वक जनरल दक्षिणी सेंटोस सिटी, मिंडानाओं के सुदूर दक्षिणी शहर में, ''संकट, लचीलापन, समुदाय, आपदाओं के युग में समाजशास्त्र'' की थीम पर आयोजित किया गया। संगठन के ''संक्रमणकालीन न्याय'' के भाग के रूप में और अभी तक पूर्णरूपेण संतुष्टि प्राप्ति के अभाव के रूप में ''शांति और संघर्ष का समाजशास्त्ररू संदर्भ एवं चुनौतियां'' की थीम पर थीम पर 2015 की संगोष्ठी को फिर से मिंडानाओं में, मिंडनाओं के उत्तरी भाग के इलिगन शहर में आयोजित किया गया था। यह थीम फिलीपींस सरकार और मिल्फ के बीच बंगसमोरो पर 2014 के व्यापक समझौते के वादे पर जायजा लेने के साथ–साथ ममासापानों घटना की त्रासदी, जिसमें फिलीपीनी पुलिस के विशेष कार्यवाई बल के 44 सदस्य मारे गए थे, के साथ साम्य में था। 2016 में मिंडानाओं से पहले फिलीपीनी राष्ट्रपति, रोड्रिगो डुटर्टे की लोकलुभावन उभार के साथ, पीएसएस ने उनके शहर दावोस में अपने सम्मेलन का आयोजन किया, जिसका विषय था ''कल्पनीय लोकतंत्र : फिलीपीनी समाज में शक्ति और ज्ञान का रूपांतरण''। 2017 और 2018 के सम्मेलन विसायस द्वीपों में आयोजित किए गए थ, संगोष्ठी फिर 2019 में बुकिडॅान प्रांत के मिंडानाओं में लौट आई जिसकी थीम ''संलग्न नागरिकता और पहचान'' थी।

मिंडानाओं सम्मेलनों ने समाजशास्त्र की डिग्री प्रदान करने वाली मिंडानाओं की उच्च शिक्षण संस्थानों को मेजबान बनने का अवसर तथा स्वयं को नए समाजशास्त्रियों को प्रशिक्षित करने के राष्ट्रीय आख्यान के हिस्से के रूप में प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया। मिंडानाओं स्टेट यूनिवर्सिटी–जनरल सेंटोस सिटी ने 2014 के सम्मेलन की मेजबानी की, इसके बाद 2015 में एम एस यू–इलिगन इंस्टिटयूट ऑफ टेक्नॉलजी ने तथा 2016 में अटिनिओ डे डवाओं विश्वविद्यालय द्वारा यह अवसर प्राप्त किया गया। 2019 के पीएसएस सम्मेलन की मेजबानी केंद्रीय मिंडो विश्वविद्यालय और बुकिडॅान स्टेट यूनिवर्सिटी द्वारा की गई। यह मिंडानोअन्स द्वारा क्रियान्वित समाजशास्त्र के द्वारा अपने अनुसंधान उत्पादन को प्रस्तुत करने के लिए मंच, पारस्परिक सौहार्द विकसित करने के लिए मंच प्रदान करने तथा वास्तविक राष्ट्रीय समाजशास्त्र की तरफ पीएसएस के परिवर्तन का हिस्सा बनने का एक अवसर था।

आज मिंडानाओं के बारे में फिलीपीनी समाजशास्त्रियों के मध्य इसके लोगों, स्थानों, सांस्कृतिक समृद्वि और आख्यानों के बारे में अधिक जागरूकता है। मिंडानाओं ने महानगरीय आधिपत्य को तोड़ना शुरू कर दिया है और महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय आख्यानो और नेतृत्व के योग्य ''अन्य फिलीपींस'' के रूप में खुद को मुख्यध ाारा में शामिल किया है। हाल के वर्षों में मिंडानाओं में महत्वपूण र्ि काम के साथ, फिलीपीनी समाजशास्त्रीय संघ ने फिलीपीनी समाजशास्त्र को वास्तव में राष्ट्रीय समाजशास्त्र बनाने में गहन योगदान दिया है। ■

सभी पत्राचार मारियो जॉयो अगुजा को <mario.aguja@msugensan.edu.ph> पर प्रेषित करें।

> महामारी में वैश्विक समाजशास्त्र

ज्योफ्री प्लेयर्स, कैथोलिक यूनिवर्सिटी ऑफ लोबेन, बेल्जियम, आईएसए उपाध्यक्ष, शोध, आईएसए की सामाजिक वर्ग एवं सामाजिक आंदोलन पर शोध समिति (आर सी 47), धर्म का समाजशास्त्र (आर सी 22) पर शोध समिति, युवाओं का समाजशास्त्र पर शोध समिति (आर सी 34) एवं सामाजिक आंदोलन, सामूहिक कार्यवाही एवं सामाजिक परिवर्तन पर शोध समिति (आर सी 48) के सदस्य द्वारा

कोविड–19 महामारी एक विश्व–व्यापी सामाजिक, पारिस्थितिक और राजनीतिक संकट है जो एक वैश्विक समाजशास्त्र का आह्वान करता है। स्त्रोतः क्रिएटिव कॉमन्स

कोरोना वायरस ने विज्ञान को सार्वजनिक क्षेत्र के केन्द्र में वापिस ला दिया है, ऐसे देशों में भी जहाँ लोकलुभावन नेताओं ने इसे अमान्य कर दिया था। महामारी वैज्ञानिक, चिकित्सकों और जीवविज्ञानी हमें ठोस तथ्य प्रदान करते हैं : महामारी प्रतिदिन बढ़ती है और यह ''स्ट्रांग फ्लू'' से कहीं अधिक खराब है। समाज वैज्ञानिक भी इसी तरह के कठोर एवं निर्विवाद तथ्य लेकर आये हैं : जबकि वायरस स्वंय हम में से किसी को भी संक्रमित कर सकता है, उसका सामना करते समय हम गहन रूप से असमान हैं। सार्वजनिक स्वास्थय नीतियाँ और सामाजिक असमानताएँ कम से कम इतना मायने रखती हैं जितना हमारे शरीर वायरस के घातक परिणामों का सामना करते हुए प्रतिक्रिया करते हैं। समाज वैज्ञानिकों ने दिखाया है कि कोविड–19 महामारी केवल एक स्वच्छता सम्बन्धी संकट नहीं है। यह एक सामाजिक, पारिस्थितिक और राजनैतिक संकट भी है।

महामारी ने एक ''वि–वैश्वीकरण'' की प्रवृत्ति को प्रारंभ किया है। राज्यों ने अपनी सीमाएँ बंद कर दी हैं। यात्राओं में तीव्र कमी आई है। मुख्य अतंर्राष्ट्रीय आयोजन जैसे कि आइएसए फोरम रद्द या स्थगित कर दिये गये हैं। राष्ट्रीय सरकारों की प्राथमिकता ''अपने लोगों'' के लिए स्वास्थय संबंधी उपकरणों एवं बुनियादी सामग्री तक पहुँच सुनिश्चित करना है। समाज विज्ञानों ने अक्सर इस मार्ग का अनुसरण किया है और राष्ट्रीय पैमाने पर ध्यान केन्द्रित किया है। विद्वानों और विशेषज्ञों ने राष्ट्रीय सांख्यिकीय अध्ययन किये हैं, अपने देशों में वर्ग और प्रजाति के पार वायरस के विभेदित प्रभावों का विश्लेषण किया है, संकट के प्रति उनकी सरकारों की प्रतिक्रियाओं का निरीक्षण किया है और राष्ट्रीय सार्वजनिक बहस में योगदान दिया है।

पद्धतिशास्त्रीय राष्ट्रवाद की यह वापसी एक विरोधाभास है, चूंकि कोविड–19 महामारी एक गहन वैश्विक प्रघटना है। यह बंद सीमाओं पर नहीं रूकती है और खुलासा करती है कि हम कितने गहन रूप से अन्योन्याश्रित हैं। इस महामारी का सामना करने के लिए अतंर्राष्ट्रीय सहयोग आवश्यक है। स्वंय वायरस की बेहतर समझ, चिकित्सा उपचार में सुधार और वैक्सीन विकसित करने के लिए चिकित्सा एवं प्राकृतिक विज्ञानों के क्षेत्र में तो निश्चित तौर पर यह सच है। समाज विज्ञानों में अतंर्राष्ट्रीय सहयोग भी उतना ही महत्वपूर्ण है। हमें अन्य देशों और विश्व के अन्य क्षेत्रों से महामारी के अनुभवों से सीखने की आवश्यकता है। ऐसे वैश्विक परिपेक्ष्य को ''पद्धतिशास्त्रीय वैश्विकता'' को उत्पन्न नहीं करना चाहिए और वृहत–विश्लेषण तक सीमित नहीं रहना चाहिए। महामारी के समय में उपयोगी होने के लिए, हमें विभिन्न क्षेत्रों के सामाजिक वैज्ञानिकों के मध्य पूरी तरह से एक साथ स्थानीय, राष्ट्रीय, प्रादेशिक एवं वैश्विक स्तर के यथार्थ में अंतर्निहित वैश्विक संवाद को बढावा देना होगा।

नीति निर्माताओं द्वारा अक्सर दरकिनार कर दिये जाने के बाद, कोरोनावायरस महामारी से निपटने में समाज विज्ञानों का योगदान हार्ड विज्ञानों के जितना महत्वपूर्ण और कई मायनों में उसके पूरक रहा है। इन योगदानों ने ज्यादातर बहस के चार कुलकों पर ध्यान केन्द्रित किया है।

1. समाजिक संकट के रूप में महामारी

समाज वैज्ञानिकों ने खुलासा किया कि, जहाँ वायरस प्रत्येक मनुष्य को संक्रमित

>>

कर सकता है, महामारी हमें भिन्न तरह से प्रभावित करती है और वायरस का उपचार का तरीका सामाजिक कारकों से निकटता से जुड़ा है। कोविड–19 महामारी सामाजिक असमानताओं को बढाती है और विशेष रूप से वर्ग, प्रजाति और लिंग के संदर्भ में सामाजिक संरचनाओं को प्रकट करती हैं। संकट को कैसे अनुभव किया जाता है और वह तरीका जिससे हम इसका सामना करते हैं कैसे गहन रूप से असमान और अनुचित है, को समझने के लिए परस्परछेदन दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है। एक ठोस कल्याण व्यवस्था के बिना देशों और कच्ची बस्तियों में, स्वच्छता सम्बन्धी संकट तेजी से मानवीय सकंट में बदल जाता है जिसके गंभीर परिणाम होते हैं क्योंकि राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मानवीय संगठन हमेशा की तरह से संचालित नहीं हो पाये है।

2. कोविड–19 शासन

आलेखों का दूसरा सेट नीति निर्माताओं एवं राजनैतिक शासनों द्वारा प्रकोप से निपटने के तरीकों का विश्लेषण करता है। राष्ट्र–राज्यों ने स्वयं को महामारी से निपटने के मुख्य कर्त्ताओं के रूप में लगाया है। वैश्विक संकट में संयुक्त राष्ट्र और यूरोपीय संघ सहित अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ, गायब हो गई हैं। महामारी ने राष्ट्रीय राजनैतिक प्रणालियों की ताकत और सीमाओं का खुलासा किया है। राष्ट्रीय सरकार की कार्यकुशलता में कमी या राज्य के किसी नेता द्वारा बारम्बार महामारी का मजाक बनाने विमर्श और लाकडाउन के उपायों में देरी करने के कारण हजारों अतिरिक्त मौतें हुई हैं। महामारी का सामना करते हुए, प्रत्येक सरकार ने अपने स्वयं की नेक्रोपोलिटिक्स निर्धारित की है। अधिकांश सरकारें अपने स्वास्थयकर्मियों को वायरस के फैलने के खिलाफ बुनियादी सुरक्षा प्रदान करनें में विफल रही हैं। उनकी नीतियों के द्वारा, सरकारे कुछ लोगों को अन्य की तुलना में, वायरस से निपटने के कम अवसर प्रदान करती हैं, जबकि वृद्धाश्रम में मरने वाले लोग देश के सार्वजनिक आंकडों में दिखाई नहीं देते हैं।

महामारी और लाकडाउन ने नागरिकों एवं सरकारों के मध्य सम्बन्धों को बदल दिया है। सुरक्षा, देखभाल, और महामारी के खिलाफ दिशार्निदेशों के लिए नागरिक राष्ट्रीय सरकारों की तरफ मुड़ते हैं। इनमें से कई राज्यों द्वारा अधिक सामाजिक नियत्रंण और नई निगरानी प्रौघोगिकियों एवं चेहरा पहचानने को महामारी को नियन्त्रण में लाने के लिए दी जानी वाली कीमत के रूप में स्वीकार करते हैं।

3. समाज कैसे प्रतिक्रिया करता है

आलेखों का तृतीय सेट व्यक्तियों और नागरिक समाज द्वारा संकट से निपटने के तरीकों का विश्लेषण करता है। समाजशास्त्री लोगों के जीवन, वैषयिकता और सामाजिक सम्बन्धों पर लाकडाउन के गहने प्रभावों का अन्वेषण करते हैं। अन्तरपीढ़ी सम्बन्धों ने नए आकार और अर्थ लिए हैं। डिजिटल प्रौघोगिकियों ने सामाजिक सम्बन्धों को बनाये रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सामाजिक दूरी के उपायों ने एकजुटता को जोखिम में डाला है और यह अक्सर उस समुदाय की सीमाओं का सिकोड़ देते हैं जिसके भीतर यह होते हैं। पडोस और शहरों में जहाँ एकजुटता के नये नेटवर्क सामने आये हैं, हम बंद राष्ट्रीय समुदायों या परिवारों के लिए एकजुटता की सीमाओं को भी देखते हैं।

4. क्या इस संकट से एक दुनिया उभरेगी?

विश्लेषण का चौथा सेट महामारी के दीर्घकालिक प्रभाव से सम्बन्धित है। वैश्विक संकट के रूप में, कोविड–19 ने संभावनाओं के क्षितिज खोल दिये हैं और शायद यह दुनिया को एक भिन्न तरह से पुनःआकारित करने का एक अवसर हो सकता है। कई समाज वैज्ञानिकों ने मानवों, देखभाल और सामाजिक असमानताओं के प्रति अधिक संवेदनशील दुनिया की आवश्यकता पर बल दिया है। हांलाकि, यह संकट अन्य सामाजिक मॉडल के लिए भी मार्ग प्रशस्त कर सकता है। अब तक, संकट के प्रबंधन में बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने नई एकजुटता पर विजय हासिल की है। विशालकाय आर्थिक मदद पैकेजों ने सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं को मजबूत करने की बजाय राष्ट्रीय, निगमों को बचाने पर ध्यान केन्द्रित किया है। महामारी नई प्रौघोगिकियों में स्थापित जैव राजनीति के साथ एक नये सत्तावादी युग के लिए भी मार्ग प्रशस्त कर सकती है।

मानवता जिस प्रकार कोविड–19 से महामारी से उभरेगी वह चिकित्सा और विज्ञान पर निर्भर होगा, विशेष रूप से वैक्सीन की खोज पर। यह समाज, नीति निर्माताओं और नागरिक इस सकंट का कैसे सामना करते हैं पर भी निर्भर करेगा और इस से निकलने वाली दुनिया के बीज बोयेगा। ■

सभी पत्राचार ज्योफ्री प्लेयर्स को <Geoffrey.Pleyers@uclouvain.be> पर प्रेषित करें।

> कोविड–19
वर्तमान महामारी से पहले सबक

क्लॉस डोर्रे, जेना विश्वविद्यालय, जर्मनी द्वारा

महामारी ने लघु व्यवसायियों, जिसमें रेस्तरां और खुदरा विक्रेता हैं, को बहुत अधिक प्रभावित किया है। श्रेयः रास लोआर फ्लिकर.कॉम। कुछ अधिकार सुरक्षित।

अप्रेल 2020 में, जब मैं यह लिख रहा हुँ, अर्थव्यवस्था मंदी की ओर बढ़ रही है। आने वाले महीनों में होने वाले घटनाक्रमों के बारे में कोई भी सटीक भविष्यवाणी नहीं कर सकता है क्योंकि यह कोई नहीं जानता कि यह महामारी कब तक चलेगी। लेकिन अर्थव्यवस्था में गहरी मंदी का अनुमान लगाना कोई मुश्किल बात नहीं है। केवल एक प्रश्न है कि यह मंदी कितनी गहरी होगी।

> आर्थिक घटनाक्रम और श्रम पर प्रभाव

सबसे अच्छे परिदृश्य में अधिकांश देशों में शटडाउन एक महीने में खत्म हो जायेगा। फिर भी, उदाहरण के लिए जर्मनी को 2007–09 के संकट के दौरान देखी गई वृद्धि में समान गिरावट का सामना करना पड़ेगा। इफो इंस्टीटयूट फॉर इकोनोमिक रिसर्च के अनुसार, तीन महीने के शटडाउन से वृद्धि में 20% तक गिरावट आ सकती है और लगभग 5.5 मिलीयन लोग अल्प–कालिक कार्य करेगें (जिसे जर्मन भाषा में कुरजरबेटिन कहा जाता है चूंकि जर्मनी में कर्मचारियों को मंदी के दौरान हटाया नहीं जाता बल्कि उनके काम के घंटों को 0 तक किया जा सकता है जबकि सरकार उनके द्वारा खोई आय के लिए भुगतान करती है)। लेकिन कई लघु और माइक्रो–उद्यम लंबे समय तक बिना प्रत्यक्ष वित्तीय सहायता के जीवित नहीं रह पायेगें। यह लघु–पैमाने की अर्थव्यवस्था वाले क्षेत्रों में एक विशेष समस्या है। निर्यात में विश्व चैंपियन जर्मनी के लिए यह अनिश्चित है कि महामारी के अंत के बाद क्या वृद्धि में तीव्र उछाल होगा। यह इस बात पर निर्भर करता है कि चीन और जर्मनी के यूरोपीय पड़ोसी जैसे अन्य देश कितनी जल्दी ठीक होते हैं। जर्मन संघीय सरकार के कार्यकलाप विरोधाभासी है : इसे यूरोपीय संघ के भीतर तीव्र सहायता में रूचि होनी चाहिए, लेकिन यह संकट प्रबंधन के साधन के रूप में यूरो बांड को रोक रहा है।

चिंता करने के लिए बहुत कुछ है। इस संकट के बारे में कुछ भी अच्छा नहीं है। यह हजारों लोगों को मृत्यु की धमकी दे रहा है, इसके कारण लाखों लोगों को नौकरी से हाथ धोना पड़ सकता है, और अस्थाई तौर पर यह अरबों लोगों को महत्वपूर्ण बुनियादी अधिकारों से वंचित कर रहा है। यह महामारी जितनी लंबी चलेगी, संस्कृति, समाज और अर्थव्यवस्था पर इसके उतने अधिक गंभीर प्रभाव होगें। अतः, बडी और छोटी कम्पनियों पर निम्न लागू होना चाहिए : कोई अतिकता नहीं बल्कि प्राथमिकता से अस्थाई तौर पर अनुदानित छटंनी। सामान्य तौर पर, रोजगार की रक्षा करना महत्वपूर्ण होगा। जर्मनी में दीर्घकालिक अल्पकालिक कार्य के रूप में आजमाएँ गये तरीके हैं।

उत्पादन प्रकियाएँ सहयोग पर निर्भर करती हैं जिसमें लोगों के मध्य संपर्क सम्मिलित है; काम पर सामाजिक संपर्क कई लोगों के लिए महत्वपूर्ण हैं। यदि कामगारों के मध्य केमिस्ट्री अच्छी हो तो एक शारीरिक

>>

रूप से कठोर, नीरस गतिविधि को भी सहन करना आसान होता है। यह अब लुप्त हो गया है। ''अपनी दूरी बनाए रखो'' का मूल अर्थ कटटरपंथी वि–सामाजीकरण या फिर वि–सामूहिकीकरण है।

दूसरी तरफ, वर्तमान में अस्पतालों, सुपर मार्केट, नर्सिंग होम, कृषि इत्यादि में व्यवस्थित रूप से प्रासंगिक मानी जाने वाली नौकरियों में पूर्ण रूप से शारीरिक संपर्क से बामुश्किल बचा जा सकता है। उदाहरण के लिए, नियमों का पालन कर सकते हैं और दुकान सहायकों की प्लेक्सीग्लास की शीट से सुरक्षा कर सकते हैं, लेकिन वे सब जो घर से कार्य नहीं कर रहे हैं, उनके स्वास्थ्य के लिए जोखिम अनुपात में कहीं अधिक है। यह एक कारण है कि बस–चालक, चेकआउट कर्मचारी, देखभाल कर्मी और नर्से अब ग्राहकों और सामान्य जनता से अधिक सराहना प्राप्त कर रहे हैं। हम आशा ही कर सकते हैं कि यह चलता रहेगा और भविष्य में इन क्षेत्रों में भी बेहतर वेतन, अधिक कर्मचारी और बेहतर कार्य स्थितियाँ परिलक्षित होगीं। किसी भी स्थिति में, वे राज्य जो इस संकट से सर्वश्रेष्ठ ढंग से उबरेंगे, वे मजबूत सुदृढ़ स्वास्थ्य प्रणाली वाले और संकट–रहित कल्याण राज्य होगें। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि यूरोपीय महाद्वीप पर कौन से देश इस संकट के प्रभावों से गंभीर रूप और बुरी तरह से प्रभावित होगें – वे जो दक्षिण और दक्षिण–पूर्व में हैं। स्पेन और इटली में कोरोना वायरस से सक्रंमित लोगों की उच्च मृत्यु दर भी यूरोपीय मित्तव्यत्तता उपायों द्वारा उन पर स्वास्थ्य क्षेत्र में जबरदस्ती बलात् कटौती के साथ जुड़ी हुई हैं।

> लोकतंत्र को कमजोर पड़ना

वर्तमान में यूएसए वैश्विक महामारी का केन्द्र है। कटटरपंथी दक्षिणपंथ स्वाभाविक रूप से स्थिति का लाभ उठाने का प्रयास कर रहा है। सभी प्रकार के षडयंत्र के सिद्धान्त आनलाइन फैलाये जा रहे हैं। जो उनका विश्वास करते हैं वे न सिर्फ अपने स्वस्थ्य को बल्कि अन्य लोगों के स्वस्थ्य को भी जोखिम में डालेंगे। लेकिन लोग देखेंगे कि जहाँ पर भी ट्रम्प जैसे दक्षिण पंथी लोकवादी या बोल्सनारो जैसे कटटर दक्षिणपंथी सत्ता में हैं, सकंट प्रबंधन पूर्ण से विफल हो रहा है। अतः मेरा मानना है कि यह संकट दक्षिणपंथी लोकवादियों एवं कटटरपंथियों के लिए भारी हार का नेतृत्व करेगा।

इसके बजाय लोकतांत्रिक प्रकियाओं की बात करते समय एक अलग भिन्न चिंता है : जलवायु परिवर्तन कई बाह्म झटके पैदा कर सकता है, जिसके लिए भी बडे पैमाने पर संकट–प्रबंधन की आवश्यकता है। इसलिए हमें इस के लिए सावधान रहना होगा कि आपातकाल कहीं सामान्य न बन जाए। लोकतंत्र के लिए सार्वजनिक विमर्श बहस, प्रदर्शनों और हडतालों की आवश्यकता है। संकट के बावजूद, इन मूल अधिकारों की अनंत काल तक रक्षा करनी चाहिए।

> आवश्यक परिवर्तन

कोरोना के बाद, दुनिया–और काम की दुनिया–अलग होगीं। हाल के दशकों में अखंडनीय माने जाने वाले आर्थिक नीति के सिद्धान्त, अब हटा दिये गये है : ऋण सीमा– अतीत में ! एक संतुलित सरकारी बजट का ''काला शून्य''–जो कल था : सार्वजनिक ऋण प्रचण्ड है। महामारी के बाद यह प्रतिमान बदलाव जारी रहेगा। यह विलंबित था और कोरोना संकट ने केवल इसे तीव्र किया है। लोग इस तथ्य की व्याख्या कैसे करें पर भी आश्चर्य करेंगे कि दस वर्षो में यह दूसरी बार है कि पूंजीवादी बाजार व्यवस्था को गैर बाजार अर्थव्यवस्था से संबंधित तरीकों के द्वारा बचाना पड रहा है। भविष्य में ऐसी घटनाओं को ''ब्लैक स्वान'' कह कर खारिज करना संभव नहीं होगा। हम सब के लिए यह तय करना आसान होगा कि हमें वास्तव में क्या चाहिए। मैं भी बुंडेसलीगा फ़ुटबॉल के बिना बहुत अच्छे से रह सकता हूँ। लेकिन हम बेकर्स, किसानों, चिकित्सा सहायकों, लॉरी चालकों और मददगार पडोसियों के बिना नहीं रह सकते हैं। यह दिखाता है कि हम सब को अच्छी तरह से काम करने वाला सामाजिक ढाँचा चाहिए। इसे सुपोषित सार्वजनिक परिसम्पत्ति बन जाना चाहिए। यदि आप पेशेवर फुटबाल खिलाड़ी जादोन सांचो की मासिक आय की तुलना एक जराचिकित्सा नर्स से करते हैं, तो यह तुरंत स्पष्ट हो जाता है कि हमारे समाज में कुछ सही नही है। सामाजिक सेवाओं को सामाजिक रूप से– आर्थिक रूप से, लेकिन मान्यता पिरामिड के भीतर ही, उन्नत किया जाना चाहिए।

जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के बारे में, आपदा से डिग्रोथ संकट है। 2009 की तरह, जलवायु–हानिकारक उत्सर्जन और संभवतः संसाधनों की खपत में भी कमी आयेगी। सकंट के कारण, जर्मनी आखिरकार अपने जलवायु लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है। हालांकि इसका संवहनीयता की क्रांति, जिसकी हमे त्वरित आवश्यकता है, से कोई लेना देना नहीं है। अब हम काफी स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि सकंट के समय में राज्य हठधर्मी है। यह उन स्वतन्त्रताओं को प्रतिबंधित कर सकता है जिन्हें हम दूसरों के बदौलत, अनिवार्य माध्यमों के द्वारा सभी की भलाई के लिए प्रयोग में लेते हैं। लेकिन जैसा ऊपर उल्लेख किया गया है, यह काफी महत्वपूर्ण है कि राज्य कार्यवाही लोकतांत्रित निर्णयों के अधीन हो। स्वतन्त्रता का एक बाहयकारी सामाजिक आयाम है और यह उद्यमी स्वतंत्रता पर भी लागू होता है। भविष्य में, इन स्वतंत्रताओं को सवंहनीयता लक्ष्यों से मजबूती से जोडना होगा। एक वह चीज को एसयूवी चलाने से बेहतर है वह है इसका उत्पादन नहीं करना। सैन्य उपकरण ों का निर्यात नहीं करने से बेहतर है कि उनका निर्माण ही न हो। उदाहरण स्पष्ट करते है : संकट के बाद, हमें अपनी आर्थिक व्यवस्था के बारे में बुनियादी बहस की आवश्यकता है – और इस बहस को केवल अर्थशास्त्रियों और राजनीति में कैरियर बनाने वाले राजनेताओं द्वारा आयोजित नहीं किया जाना चाहिए। ■

सभी पत्राचार क्लॉस डोरे को
<Klaus.doerre@uni-jena.de> पर प्रेषित करें।

> कोविड–पश्चात् विश्व में समाजशास्त्र

साडी हनाफी, अमेरिकन यूनिवर्सिटी ऑफ बेरूत, लेबनान एवं अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र संघ के अध्यक्ष

कोरोनावायरस के कारण दुनिया बदल रही है और उसके साथ समाजशास्त्रीय सिद्धांत और विश्लेषण। स्त्रोतः क्रिएटिव कॉमन्स।

कोविड–19 के अजीब वातावरण ने मनुष्यों देशों और नागरिकों एवं सरकारों के मध्य विश्वास की दोषपूर्ण रेखाओं को अनावृत किया है। यह हमें अपने बारे में, हमारे सामाजिक संबंधों के बारे में, और आम तौर पर जीवन के बारे में बड़े प्रश्नों को उठाने के लिए ढ़केल रहा है। यह संकट केवल सार्वजनिक और पर्यावरणीय स्वास्थ्य या अर्थव्यवस्था तक ही सीमित नहीं है, हम जो देख रहे हैं, वह एक व्यापक और अतिव्याप्त पैमाने पर पछेती आधुनिकता और उसकी पूंजीवादी व्यवस्था के संकट के बारे में एक निर्णायक क्षण है। इस संकट के गुजरने के बाद हम आसानी से ''सामान्य दिनों'' की तरफ नहीं लौट पाएंगे और सामाजिक विज्ञानों को इन नई वास्तविकताओं को सम्बोधित करने के लिए विश्लेषण और सक्रिय रूप से संलग्न होने का प्रयास करना चाहिए।

कोरोना–पश्चात की दुनिया में समाजशास्त्र कैसा होगा? मैं समाजशास्त्र के लिए तीन कार्यों पर जोर देना चाहूंगाः समुदाय से मानवता तक फैलने वाले बहु–स्तरीय केंद्र–बिंदु निर्मित करना, अन्थ्रोपोसिने और केपिटलॉसिने के रोगों से लड़ने के लिए एक सक्रिय दृष्टिकोण रखना, और, अंत में, सम्मान और नैतिक दायित्व के लिए एक बेहतर एजेंडा निर्धारित करना।

> बहु–स्तरीय केंद्र–बिंदु समुदाय से मानवता

सबसे पहले, कोरोना वायरस के अलोक में हालातों ने वैश्विक गांव की छवि को एक यथार्थ के रूपक के रूप में रूपांतरित कर इसका स्पष्ट रूप से खुलासा किया कि दुनिया वास्तव में कितनी परस्पर सम्बद्ध है। लेकिन हमे अभी भी और *अधिक वैश्विक एकजुटता एवं अधिक मानवतावादी वैश्वीकरण* को उत्पन्न करने की आवश्यकता है। ऐसा करने के लिए एक बहु–स्तरीय अवधारणाकरण चाहिए। गिल्लेस डेलेजे ने तर्क दिया कि वामपंथी (अधिकांश समाज वैज्ञानिकों सहित) दुनिया को सबसे दूर से प्रारम्भ होने वाले संबंधों, और जो भीतर मुड़ते हैं, के सन्दर्भ में देखतें हैं। उदहारण के लिए, सामाजिक असामनता को शोषण की एक बड़ी वैश्विक प्रघटना के रूप में समझा गया है जिसे साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के द्वारा अंदरूनी रूप से ट्रेस किया जा सकता है। इसके कारण, अधिकांश समाज वैज्ञानिक प्रभावित (अमूर्त) सामाजिक वर्गों की पीड़ा को समुचित रूप से सम्बोधित करने के लिए साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद की संरचनाओं से निपटने का आह्वान करते हैं।

इसके विपरीत अस्मिता की राजनीति के अन्य कुछ आंदोलन हैं (जैसे, कुछ इस्लामी आंदोलन और चरम दक्षिणपंथी एवं रूढ़िवादी आंदोलन) जो संबंधों को एक नजदीकी बिंदु से प्रारम्भ हो कर सुदूर की तरफ जाते हुए देखते हैं। वे सामुदायिक कार्यों में, और पारिवारिक एवं पड़ोस के संबंधों में विश्वास करते है। उदहारण के लिए, ट्रम्प समर्थक ग्रामीण श्वेत अमेरिकियों के विस्मृत समुदायों द्वारा सामना की गई सामाजिक असमानताओं को सम्बोधित करने की ट्रम्प की क्षमता में विश्वास रखते हैं। और लेबनान में विश्वास–आधारित संगठन वर्तमान में लॉकडाउन के दौरान नौकरी खोने वाले परिवारों के साथ काम करने वाली सबसे अधिक सक्रिय एनजीओ है। अन्य अस्मिता की राजनीति के आंदोलनों (जातीयता, लिंग, कामुकता आदि के आसपास केंद्रित) के मामलों में, उनके संघर्ष सन्दर्भ के आधार पर काफी भिन्न हो सकते हैं लेकिन वे सार्वभौमिक मानवाधिकार सिद्धांतों से लैस हो कर अक्सर सामुदायिक संघर्ष में जमे रहते हैं। फिर भी, रिचर्ड रोर्टी के लिए, बहुलवाद के सांस्कृतिक ऐजेंडे को आगे बढ़ाते हुए, ''सांस्कृतिक वामपंथियों'' का सामाजिक न्याय के लिए यह संघर्ष कभी कभी बहुत कम होता है (जैसा अमेरिका के मामले में है)।

>>

में कोरोना–पश्चात के समाजशास्त्र को यह देखने में सक्षम समझता हूँ कि समाजशास्त्र ने कैसे पारम्परिक रूप से अपना ध्यान (बाहर–अंदर से, या अंदर–बाहर से) बहु–स्तरीय फोकस को काम में लेने वाले तरीकों : परिवार, समुदाय के महत्व पर पुनर्विचार करना, और प्रेम, आतिथ्य और देखभाल की नैतिकता और समग्रता में राष्ट्र–राज्य और मानवता के स्तर तक प्रवर्धन करना, पर केंद्रित किया है।

> अन्थ्रोपोसिने / केपिटलॉसिने के खिलाफ संघर्ष

कोविड–19 ने न केवल वैश्वीकरण का बल्कि अन्थ्रोपोसिने का भी एक रोग है। मानव उपभोक्तावाद का सिद्धांत उन संसाधनों का क्षरण कर रहा है जिन्हें हमारा पृथ्वी ग्रह नवीनीकृत नहीं कर सकता है और यह वायरस ऐसे उपभोक्तावाद का एक (यद्यपि महत्वपूर्ण) प्रकरण है। जैसा कि हम जानते हैं, यह वायरस गैर–पालतू जानवरों (जैसे सिवेट्स, पेंगोलिन और चमगादड़) को खाने से मानवों में फैला। क्या वे वाकई में स्वादिष्ट हैं? मध्यम एवं निम्न मध्यम वर्ग द्वारा उपयोग में ली जाने अनावश्यक एवं विलासी वस्तुओं की महत्वपूर्ण मात्रा की ओर इशारा करते हुए बोर्दियू इसे प्रतिष्ठा का चिन्ह मानते हैं। कई लेबनानी लोगों के लिए यहाँ, छुट्टी विदेश यात्रा का पर्याय बन जाती है।

यह अतिलोलुप उपभोक्तावाद, जिसे फ्रेंच समाजशास्त्री *रिगस अरवनीतिस* ने *खुशी तक पौराणिक* पहुँच कहा, के द्वारा प्रेरित है जो अंततः अधिक स्वास्थ्य परेशानियों, महामारियों, मृत्यु एवं आपदाओं के लिए एक प्रभावी त्वरक के रूप में कार्य करता है। व्यक्ति, समाज ओर प्रकृति को पुनः जोड़े बिना इन बहु–स्तरीय संबंधों की जांच संभव नहीं हो सकती है। उदहारण के लिए, जलवायु परिवर्तन ओर राजनैतिक आर्थिक व्यवस्था को पृथ्वी ओर मानवता के साथ लोगों के संबंधों पर सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाये बिना सम्बोधित नहीं किया जा सकता है। जैसन मूर अन्थ्रोपोसिने की चैतन्यता के प्रति विवेचनात्मक उकसावे के रूप में " केपिटलॉसिने" की अवधारणा को प्रस्तावित करते हैं। उनके लिए, पूंजीवाद प्रकृति को समग्रता में संयोजित कर रहा हैः क्रमिक ऐतिहासिक विन्यासों में यह विश्व–पारिस्थितिकी है जो पूंजी के संचय, शक्ति की तलाश ओर प्रकृति के सह–उत्पादन में सम्मिलित होती है।

इस बहु–स्तरीय उपागम के लिए आर्थिक को सामाजिक से पुनः जोड़ना होगा ओर फिर इनको राजनैतिक ओर सांस्कृतिक से। हमें कार्ल पोलानयी के सामाजिक सन्निहित्ता के सिद्धांत को पुनर्जीवित करना होगा। पोलानयी ने अर्थव्यवस्था के साथ समाज को एकीकृत करने के तीन स्वरूपों का प्रस्ताव दियाः विनिमय, पुनर्वितरण और पारस्परिकता। इस प्रकार हमारे समाज विज्ञानों को इन तीन सम्बोधों पर गंभीरता से पुनर्विचार करना चाहिए, क्योंकि बाजार (विनिमय का एक स्थान) को नैतिक बनाना है जिसमे सभी प्रकार की अटकलों के खिलाफ सख्त सामाजिक नियंत्रण स्थापित करना सम्मिलित है। प्रत्येक क्षेत्र में अल्पसंख्यक कंपनियों में धन के संकेन्द्रीकरण को रोकने के लिए महत्वपूर्ण उपाय किये बिना पुनर्वितरण नहीं किया जा सकता है। ऐसा धन और पूंजी के उच्च स्तरों पर भारी कराधान लागू किये बिना और एक धीमी–वृद्धि वाली अर्थव्यवस्था और उसके उपसिद्धाँतों (जिसमें सस्ते ओर कम–कार्बन वाले सार्वजनिक परिवहन की आवश्यकता, सार्वजनिक सेवाओं को देनदारियों के बजाय निवेश के रूप में देखना और श्रम–बाजार की सुरक्षा में वृद्धि करना सम्मिलित हैं) तक जाये बिना संभव नहीं है। मैं पारस्परिकता के प्रश्न को इस लेख के अगले भाग के लिए छोड़ देता हूँ।

हम जानते हैं कि पर्यावरण के लिए संघर्ष राजनैतिक अर्थव्यवस्था के हमारे विकल्प और हमारे वांछनीय आर्थिक प्रणाली की प्रकृति से अवियोज्य है– और मानव एवं प्रकृति के मध्य ये रिश्ते कभी भी इतने तात्कालिक या अंतरंग रूप से जुड़े नहीं हैं जितने अभी हैं। यह तीव्र वृद्धि का एक गंभीर संकट है जिसे अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन किया द्वारा स्पष्ट रूप से व्यक्त किया, जब उन्होंने कहा, विकास की सीमा जैसी कोई चीज नहीं है क्योंकि बुद्धिमता, कल्पना और आश्चर्य के लिए मानवीय क्षमता की कोई सीमा नहीं है।" वैश्विक संवाद के पिछले अंक में जेम्स गैलब्रेथ ओर क्लॉस डोर्रे ने सुझाव दिया कि वास्तव में वृद्धि की सीमाएं हैं और उन्होंने एक सचेत रूप से धीमी गति से बढ़ती हुई नई अर्थव्यस्था का परिसीमन किया जो अर्थशास्त्र की जैव–शारीरिक नींव को अपने कार्यप्रणाली तंत्र में निगमित करती है।

> सम्मान ओर नैतिक दायित्व की राजनीति

अब मैं पोलानयी के सामाजिक सन्निहित्ता में पारस्परिकता के प्रश्न पर आऊंगा। पोलानयी ने इसे दीर्घकालिक संबंधों के भाग के रूप में वस्तुओं या सेवाओं का पारस्परिक विनिमय के रूप में परिभाषित किया जहाँ पारस्परिकता, नैतिक दायित्व और चिंता संविदात्मक संबंधों से जुड़े हैं। पारस्परिकता के लिए अन्य की अस्मिता को स्वीकार करने वाले समूहों ओरध्या नेटवर्कों के मध्य सम्मान की राजनीति की आवश्यकता हैं, जो बहुलवाद और बहुसंस्कृतिवाद के पेराडाइम के अनुरूप कार्य करती है। कार्यशील पारस्परिकता सामाजिक संबंधों में नैतिक दायित्वों की ताकत या कमजोरी पर निर्भर है। मजबूत सामाजिक संबंधों को मार्क ग्रेनोवेटर द्वारा प्रस्तुत एकजुटता नेटवर्क में देखा जा सकता है। वे तर्क देते हैं कि कभी कभी मजबूत नेटवर्क सम्बन्ध उपहार–आधारित सम्बन्ध भी होते हैं। इससे सम्बंधित ओर इसे विस्तृत करते हुए ऐलेन कैले का दृष्टिकोण है जो एक उपयोगितावादी – विरोधी परिकल्पना को आगे बढ़ाते हैं, जहाँ मानवों की दाता के रूप में सम्मानित होने की इच्छा का अर्थ है कि हमारे सम्बन्ध सिर्फ हितों पर आधारित नहीं हैं बल्कि खुशी, नैतिक दायित्व ओर सहजता में है।

कोरोना–पश्चात् समाजशास्त्र तब ही सार्थक होगा जब यह एक यूटोपिया से लैस हो जो, भले ही पूर्ण रूप से साकार न हो, हमारे कार्यों को निर्देशित करेगा। यूटोपिया के बिना कोई नैतिक जीवन नहीं है ओर एक पादरी के उपदेश ओर समाजशास्त्री के यूटोपिया के मध्य अंतर है कि परवर्ती आवश्यक रूप से अन्य के यूटोपिया–विरोधी दृष्टि की निंदा नहीं करता है और यह उन लोगों के साथ कार्य करने की चाह रख सकता है जो इसमें विश्वास रखते हैं। इस तरह के समाजशास्त्र को मॉस के उपहार सम्बन्ध, सामाजिक विज्ञानं को नैतिक दर्शनशास्त्र से जोड़ने वाले नैतिक दायित्व की सराहना करनी चाहिए एवं उसे आगे बढ़ाना चाहिए।

इस वैश्विक संकट ने शोषण, बेदखली, ओर नवउदार पूंजीवाद को मजबूत करने के लिए नवीन रणनीतियों को प्रोत्साहित किया हो सकता है और हमारे लालच और स्वार्थ की पहुँच को बढ़ाया हो सकता है, लेकिन इसने हमे अपने सामाजिक न्याय ओर मानवता को पुनः प्राप्त करने ओर समझने के नए तरीकों का पता लगाने ओर प्रदान करने का एक अवसर भी दिया है। ■

सभी पत्राचार साडी हनाफी को
<sh41@aub.edu.lb> पर प्रेषित करें।

> बांग्लादेश में लैंगिक नगरीय स्थान

लुटफन नाहर लाटा, क्वींसलैंड विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया एवं आई.एस.ए. की शहरी एवं प्रादेशिक विकास (आरसी 21) पर शोध समिति के सदय

सत्तोला मलिन बस्ती की महिलाएं मलिन बस्ती में सब्जी बेचते हुए। श्रेयः लुतफन नाहर लाटा।

विश्व में तेजी से बढते हुए महानगर, शहरी निर्धन वर्ग को आजीविका प्रदान करने में विफल हो रहे है। इसके फलस्वरूप, अनौपचारिकता, जिसका अर्थ है वो गतिविधियां, जो मोटे तौर पर ''औपचारिक'' व्यवस्था द्वारा अमान्य रहती हैं एवं जिसमें आवास एवं आजीविका कार्य प्रणाली दोनों सम्मिलत हैं, दक्षिण शहरों की अर्थव्यवस्था का एक अहम भाग है। निर्धन, अधिकतर अस्पष्ट वैधानिक प्रस्थिति के साथ, आय के लिये अनौपचारिक सेक्टर पर निर्भर रहते हैं। अनौपचारिक अर्थ–व्यवस्था, शहरी नौकरियों का 60 प्रतिशत से 80 प्रतिशत तक का हिस्सा हैं एवं अनेक शहरों में नयी नौकरियों का लगभग 90 प्रतिशत तक हैं। एक दक्षिणी महानगर, ढाका, इसका अपवाद नहीं है। सिर्फ कपड़ा व्यवसाय अथवा अन्य कम आय वाली नौकरियो में सलंग्न लोगों को छोड़ कर, ढाका के अधिकांश कच्ची बस्ती निवासियों के पास, औचारिक अर्थव्यवस्था अवसरों तक पहुँच नहीं है। वर्तमान शोध बताता है, कि ढाका की अधिकतर सरकारी योजनायें एवं विकास की व्यूह रचनाओं ने बुनियादी ढांचे एवं रियल एस्टेट के विकास पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया है ताकि आपैचारिक अर्थव्यवस्था एवं उच्च वर्ग आवासीय आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। उन्होंने शहरी गरीब की आवासीय एवं रोजगार आवश्यकताओं के मुद्दे पर कम ध्यान दिया है। इस तरह अनौपचारिक क्षेत्र गरीबों के लिए आजीविका का सबसे महत्वपूर्ण विकल्प बन गया है। यद्यपि, ढाका में आजीविका के लिए सार्वजनिक स्थानों को प्रयोग करने के लिए अनौपचारिक व्यापारियों को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

अनौपचारिकता द्वारा आय अर्जन अवसरों पर लगाई गई अनेक बाधाओं में एक, व्यापार करने के लिए सार्वजनिक स्थानों तक पहुँच है जिसमें गरीब के आवास के करीबी स्थान सम्मिलित हैं। विश्व भर के अनेक अध्ययनों ने बेचने वाली क्रियाओं के लिये सार्वजनिक स्थान कितना महत्वपूर्ण है पर शोध किया है एवं यह उजागर किया है कि दक्षिण विश्व में शहरी गरीब वर्ग की आजीविका हेतु सार्वजनिक स्थानों तक पहुँच बहुत आवश्यक है। तब भी, दक्षिण विश्व के अधिकांश शहरों में शहरी नियोजन एवं शासन नीतियों में शहरी गरीब की बढती संख्या के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ा है। इसके अतिरिक्त, निरंतर जनसंख्या वृद्वि, जिसका अहम कारण गांवों से शहरों की तरफ प्रवास है, एवं स्थावर संपत्ति के विकास के लिए भूमि की बढती मांग, ने भूमि पर दबाव को काफी बढा दिया है। परिणास्वरूप, महानगरों में आजीविका पर भावी शोध की अहम चुनौतियों में से एक सार्वजनिक स्थानों पर पहुंच है।

>>

शहरी स्थान सामाजिक रूप से निर्मित हैंः– विभिन्न कर्त्ताओं के अलग हित, आवश्यकताएं और इच्छाएं हैं एवं स्थान पर प्रभुत्व जमाने के लिए अन्तरीय शक्तियां हैं। चूँकि ढाका में उत्पादों को सार्वजनिक स्थानों पर बेचना औपचारिक रूप से अवैधानिक है, शहरी निर्धन को नियमित रूप से सार्वजनिक स्थानों से बेदखल किया जाता है। यह उनके आजीविका की सुरक्षा एवं उनके शहर के अधिकार का हनन है। दूसरी अनवरत समस्या स्थानों का लैंगिक उपयोग है। 1970 के दशक के बाद से महिलाओं की नगरीय सार्वजनिक स्थानों तक अधिक पहुँच और बहुधा उपयोग के कारण सार्वजनिक पुरुष एवं निजी महिला के पुरातन प्रारूप ध्वस्त हुए हैं जिसने स्थान और लिंग आधारित विमर्श को काफी परिवर्तित किया है। फिर भी, आय अर्जन हेतु महिलाओं की सार्वजनिक स्थानों तक पहुँच अभी भी एक मुद्दा बना हुआ है। महिलाओं की सार्वजनिक स्थानों पर पहुंच सामाजिक मानकों, मूल्यों, धार्मिक रीतियों एवं सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से निर्धारित लैंगिक व्यवसायों पर निर्भर करती है। मलिन बस्तीयों में रह रहे गरीब परिवारों के निर्वाह के लिए ढाका की अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में गरीब महिलाओं की सहभागिता काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि परिवार चलाने के लिए सिर्फ एक इंसान की आमदनी सामान्यतः काफी नहीं होती है। इसके बावजूद, गरीब महिलाओं की सार्वजनिक स्थानों पर पहुंच अधिकतर बाधित रहती है क्योंकि प्रभुत्व लैंगिक विचारधारा अभी भी महिलाओं का स्थान घर में ही मानती है।

हालांकि दक्षिण एशियाई शहरों पर अधिकांश अध्ययन गरीब महिलाओं की गृह कार्यों में व्यस्तता का खुलासा करते हैं, कुछ अध्ययनों ने आजीविका के लिए महिलाओं द्वारा सार्वजनिक स्थानों के प्रयोग, पर शोध किया है। मैंने ढाका के सत्तोला कच्ची बस्ती में आजीविका के लिए शहरी सार्वजनिक स्थानों के विनियोग के लैंगिक आयामों का पता लगाने हेतु एक नृवंशविज्ञानी अध्ययन किया था। मैंने नवम्बर 2015 से फरवरी 2016, तक चार महीने क्षेत्रीय कार्य किया किया एवं 94 अनौपचारिक श्रमिकों (18 महिलाये एवं 76 पुरुष) का साक्षात्कार किया। मेरे निष्कर्ष दिखते हैं कि कैसे महिलाएं आय अर्जन के लिये सार्वजनिक स्थानों तक पहुँचने में सामाजिक कलंक, धार्मिक बाधाओं एवं पितृसत्ता का तिगुना भार सहती हैं।

मेरे शोध ने पाया कि सटोला में अधिकतर महिलाएं किसी भी आय अर्जन वाली गतिविधियों में संलग्न नहीं थीं। इन्हें ''पुरदाह''–एक मुस्लिम प्रथा जो महिलाओं के आवागमन, कपड़ों की पसंद एवं कार्य गतिविधियों को प्रतिबंधित करती है, के धार्मिक मानदंडों द्वारा हतोत्साहित किया जाता है। बाहरी आय अर्जन गतिविधियों में संलग्न होने को अत्यधिक निर्धनता का संकेत माना जाता है। परिणामस्वरूप, 24 प्रतिशत ग्रामीण पुरूष की तुलना में केवल 3 प्रतिशत महिलाएं ही वैतनिक कार्य में संलग्न हैं, एवं गैर–कृषि क्षेत्र में महिलाओं की वैतनिक, भागीदारी 18 प्रतिशत हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि महिलाओं के वैतनिक श्रम का उतना महत्व नहीं है जितना कि देखभाल प्रदान करने में उनकी प्रजनन भूमिका और अन्य घरेलू कर्तव्यों में उनकी भूमिका का है। महिलाएं यहां तक कि बुजुर्ग महिलाएं भी, जिन्होंने इन लैंगिक सीमाओं को तोडा एवं अपने घर के बाहर जाकर आय अर्जन किया है, को यौन एवं शाब्दिक उत्पीड़न एवं अन्य प्रकार के उत्पीड़न एवं दुराचार का सामना करना पड़ा है। सामाजिक मानदडों को तोड़ने के कारण पुरुष उनके चरित्र पर लांछन लगते हैं। अधिकांश प्रतिभागी, जो अनौपचारिक व्यवसायों में संलग्न थी, ने इसे अनुभव किया, भले ही वे दैनिक आधार पर अपने घर के समीप ही बैठ कर वस्तु और सब्जियां बेच रही थीं। उदाहरण के लिए, एक बार मेरी एक शोध प्रतिभागी ने कहा, *''चूँकि मैं एक महिला हूँ जो व्यवसाय कर रही है, कई लोग मेरे बारे में गलत बोलते हैं। तब भी मुझे अपने बच्चों को पढाने के लिये यह दुकान चलानी है।''* एक अन्य प्रतिभागी ने कहा *''जब मैं चाय बेचती हूँ, कुछ पुरूष मुझे परेशान करते है। वे मुझे परेशान करने के लिये कई बार मेरे शरीर को भी छूते हैं।''* कई महिलाओं ने दूसरे लोगों की राय को नजरअंदाज कर दिया, क्योंकि वे अत्यंत निर्धन एवं संकटकालीन स्थिति में थीं, कि वे लोगों कि राय पर ध्यान नहीं दे सकती थीं। जैसा कि एक उबले अंडे विक्रेता ने कहा, *''अलग–अलग लोगों की अलग–अलग मानसिकता होती है एवं मैं उसकी परवाह नहीं करती हूँ।''* कई बार गरीब महिलाओं ने सड़कों पर व्यवसाय संचालित किया क्योंकि उनके पास आजीविका कमाने का अन्य कोई विकल्प नहीं था। उदाहरण के लिए, मोयना का पति बीमार था एवं कोई भी कार्य करने में अक्षम था एवं उसका बेटा एक ड्रग एडिक्ट था एवं उनके साथ नही रहता था, इसलिये उसको व्यवसाय करना पड़ा। जब बांग्लादेश मेडीकल रिसर्च काउंसिल के सदस्यों (बी.एम.आर.सी.) ने उन्हें बी.एम.आर.सी. के निकटवर्ती फुटपाथ से बेदखल किया, तो उसने ढाका की सत्तोला कच्ची बस्ती की मुख्य सड़क पर बेचना शुरू कर दिया।

मेरे अध्ययन ने यह भी पता लगाया कि कई महिलाओं को पुरुषों से अत्यधिक यौन उत्पीड़न का सामना करना पडता है। यदि महिलाएं किसी विशेष स्थान पर अपनी वस्तुएं या खाद्य सामग्री बेचने हेतु फेरी लगाती हैं तो कभी कभी पुरूष उनसे 'सेक्स वर्कर्स'' की तरह व्यवहार करते हैं। परिणामस्वरूप, ज्यादातर महिला प्रतिभागी जो मलिन बस्ती के बाहर कार्य करती हैं, अपने साथ बड़े भाई, पडोसी, पति या बच्चों को ले जाती हैं। उदाहरण के लिए, जब ताहेरा ने फूलों का कारोबार प्रारम्भ किया, उसकी नोखाली पड़ोसन उसके साथ जाती थीं याकि उसे अन्य पुरुषों द्वारा शाब्दिक और यौन उत्पीड़न का अनुभव न करना पड़े। यह अक्सर तर्क दिया जाता है कि रोजगार एवं आय महिलाओं को सशक्त बनाते हैं। तथापि यह ढाका की अत्यंत गरीब महिलाओं के लिए मिथ्यक प्रतीत होता है क्योंकि उनकी शारीरिक सुरक्षा पुरूष साथी पर निर्भर है।

बांग्लादेश सरकार 2017 की ग्लोबल जैंडर गैप रिपोर्ट में, 144 देशों में से, 47 वें स्थान पर आने में गौरवांवित महसूस कर रही है। फिर भी, सरकार ने अधिकतर ग्रामीण निर्धन महिलाओं के जीवन एवं आजीविका को सुधारने पर ध्यान केंद्रित किया है और सरकार ने ग्रामीण एवं छोटे कस्बाई महिलाओं के लिए आय–उत्पन्न प्रशिक्षण प्रदान करने की ओर कदम उठाये है। आज की तारीख तक, सरकार एवं स्वयं सेवी संस्थाओं ने महिलाओं के ''लैंगिक हित व्यूहरचना'' पर बल दिया है, जो पुरूषों की तुलना में महिलाओं की निम्न स्थिति की पहचान के कारण उत्पन्न हुई है। सरकार एवं स्वयं सेवी संस्थान भी महिलाओं की कार्य में भागीदारी में मदद प्रदान करने लिए काम कर रहे हैं एवं उनके ''व्यवहारिक लैंगिक हितों'' को पूरा करने के लिए लघु ऋण उपलब्ध करा रहे हैं। ''व्यहारिक लैंगिक हित'' एक विशेष सन्दर्भ में, महिलाओं द्वारा अचानक महसूस की गई तात्कालिक कथित आवश्यकताओं के प्रत्युत्तर में उभरे। यह महिलाओं की मुक्ति जैसे दीर्घकालिक रणनीतिक लक्ष्य को बनाने कि बजाय समाज में उनकी सामाजिक रूप से स्वीकृत भूमिकाओं के अनुरूप था। हालांकि, शहरी महिलाओं की कार्य परिस्थितियों को सुधारा जाना एवं उन्हें अन्य सुविधाये प्रदान किया जाना आवश्यक है जैसे डे केयर सेंटर, जो महिला श्रम शक्ति में भागीदारी को सक्षम बना सकते हैं। अधिक आवश्यक रूप से, सरकार को ऐसे कदम उठाये कि महिलाओं की शारीरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने एवं एक सुरक्षित शहर बनाने के लिए पहले कदम उठाने चाहिए। यदि सरकार एवं स्वयं सेवी संगठन सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं की शारीरिक सुरक्षा को सुनिश्चित करने में विफल रहते हैं तो, उनके सभी प्रयास – सभी नियम और कानून जो सरकार ने अभी तक महिला सशक्तिकरण के लिये शुरू किये – सार्थक परिणाम उत्पन्न करने में विफल रहेंगे।■

सभी पत्राचार लुटफन नाहर लाटा को <l.lata@uq.edu.au> पर प्रेषित करें।

> श्रम का अंतराष्ट्रीयकरण एवं पूँजी का मुक्त संचरण

रैक्चेल वरेला, नई यूनिवर्सिटी ऑफ लिस्बन, पुर्तगाल द्वारा

निक बस्तियान द्वारा फोटो। फ्लिकर.कॉम। कुछ अधिकार सुरक्षित।

वर्ष 2016, की गर्मियो में, यू.एस. की बहुराष्ट्रीय कंपनी डूरा आटोमोटिव – विभिन्न देशों में कार्य करने वाली मोटर वाहन के पुर्जों की आपूर्ति करने वाली एक वैश्विक पूर्तिकर्ता, ने क्रिसलर, ऑडी, एवं बी.एम.डब्लू को पुर्जे देने को संकल्प किया। माँग बढ़ रही थी एवं यदि श्रमिको ने माँगों की पूर्ति हेतु सप्ताहांत अतिरिक्त कार्य के लिए स्वीकृति नही दी तो 'डूरा' उच्च जुर्माना भरने के जोखिम से जूझ रही थी। 'डूरा' प्लीहेनबर्ग, में कार्यरत जर्मन श्रमिकों ने तय किया कि वो ऐसा तब ही करेंगे, यदि डूरा, आई .जी. मेटाल–एक जर्मन मेटल श्रमिक संघ, के साथ सामूहिक संधि को स्वीकार करती है। कारखाने को जर्मनी से पुर्तगाल एवं अन्य देशो मे ले जाने की एवं नौकरीयो को 1000 से 700 करने की धमकी दी गयी। 'डूरा' के व्यवस्थापकों ने डंपिंग के उग्र स्वरुप से प्रतिकिया दी। उन्होने जुलाई 2016 में 'डूरा कैरीगाडो' से 260 पूर्तगाली श्रमिकों को जर्मनी जा कर कार्य करने को कहा। प्रारम्भ शुरूआत में इस को यात्रा स्थानीय दबाव से बाधित किया गयाः जर्मन श्रमिकों ने कारखाने को बन्द करने की धमकी दी। परन्तु अक्टूबर 2016 में, अनेक वार्ताओं के उपरान्त, लगभग 300 पुर्तगाली श्रमिक तकरीबन दो महीनो के लिये शनिवार एवं रविवार को माँगो की पूर्ति हेतु उत्पादन कार्य करने के लिए, जर्मनी पहुँचे।

कई श्रमिको ने विरोध के साथ उनका स्वागत किया। इसी बीच आई.जी. मेटाल इस मुद्दे को कोर्ट मे ले गई। कोर्ट ने अभूतपूर्व निर्णय दियाः यह कार्यविधि वैद्य थी क्योकि सप्ताह के दौरान, जर्मनी में 'डूरा' जर्मन थी एवं सप्ताहंत में पुर्तगाली! एक साक्षात्कार में एक पुर्तगाली श्रमिक ने कहा, कि उनके आगमन के समय माहौल काफी तनावपूर्ण था एवं स्थानीय श्रमिकों ने मशीनों को आंशिक नुकसान भी पहुँचाया था।

> यूरोपियन श्रम पुर्नसंरचना के मूल में श्रमिक प्रवास

बाजारी समाज में – जहाँ श्रम बल स्वयं एक वस्तु है– श्रमिक न केवल एक सेक्टर में प्रतिस्पर्धा करते है, अपितु बल्कि ये अपनी श्रम शक्ति को बेचने हेतु राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय बाजार मे भी करते है। श्रमिक प्रवास एक वस्तुनिष्ट कारक से संबद्ध है य मजदूरी का मूल्य एवं एक नौकरी पाने का हक। अंतराष्ट्रीय श्रमिक–वर्ग के हितो का प्रतिनिधित्व करने वाले शक्तिशाली राजनीतिक दलों की अनुपस्थिति के कारण यह मुद्दा राष्ट्रवादी नीतियों के दो रूपांतरो का बंधक बन कर रह गया हैः एक नस्लीय/निषेधक प्रवृति (अत्यन्त दक्षिण पंथी) एवं दूसरी, जो श्रम–शक्ति के मुक्त आवागमन को प्रोत्साहित करती है (उदारवादी, रूढ़िवादी एवं सामाजिक प्रजातांत्रिक पार्टियाँ), कई बार कुछ सामाजिक हकों को भी आत्मसात कर लेती है (सामाजिक प्रजातांत्रिक दलो के संबंध मे)। वर्तमान मे यूरोपियन समाजों में समाजो मे इस मुद्दें पर प्रभाव डालने वाली कोई अंतराष्ट्रीय उग्र राजनीति नही है। यूरोपियन राज्यो की प्रवासी नीतियों ने प्राथमिक रूप से श्रम शक्ति के प्रबंधन के आदेशों का प्रत्युत्तर दिया है लेकिन मानवतावादी एवं बहुसांस्कृतिक विचारों को बुनियादी रूप से महत्व नही दिया है। अधिक कमाने वालों में एवं कम आय वालों में सौहार्द के प्रभावी बंधनों की अनुपस्थिति के कारण, नस्लवाद एवं अज्ञातजनमीति को उत्पन्न करने के लिए सामाजिक आधार मिलता रहेगा।

वैश्वीकरण ने वैश्विक रूप से उनकी मजदूरी में कटौती कर के, श्रमिकों के मध्य प्रतिस्पर्धा विकसित कर दी है परन्तु इसने इसके विपरीत – अंतराष्ट्रीयकरण के लिये भी परिस्थितियाँ विकसित कर दी है। डूरा करेंगाड़ो का एक समूह यदि जर्मनी मे हडताल को खत्म कर सकता है, तो पूर्ण यूरोप मे गोदी मजदूर भी, न्यूत्नम लागत मे,

>>

पुर्तगाल के गोदी मजदूरो के लिये हडताल कर सकते है एवं इस प्रकार उन्हे विजयी होने मे मदद कर सकते है।

> सरहद पार हडताल को समर्थन

अंतराष्ट्रीय गोदी मजदूर संघ (आई.डी.एफ.), जिसके अब 1,40,000 सदस्य है, बीस वर्ष पूर्व, इंग्लैंड में स्थापित हुआ था। 29 सितम्बर, 1995 को, लिवरपुल में स्थायी अनुबंध वाले 500 गोदी मजदूरो ने 50 अस्थिर श्रमिको की धरना रेखा को पार करने से मना कर दिया। मरसी डोक्स एवं हारबर कंपनी (एम.डी.एच.सी.) ने सबको निकाल दिया जिसने एक विवाद की शुरूआत की जो 1995 एवं 1998 के मध्य वैश्विक स्तर पर पहुँच गया।

लिवरपुल विवाद को नव–उदारवाद के खिलाफ, यूरोप मे श्रमिकों का प्रथम अंतराष्ट्रीय आन्दोलन कहा जा सकता है – और ऐसे संघर्ष विरले ही हैं। यह एक ऐसा संघर्ष भी था, जिसने अस्थायी एवं लचीले श्रमिकों को सरंक्षित श्रमिकों के साथ समान संघर्ष में एकीकृत किया। सामूहिक कार्यो द्वारा दोनो समूहो मे क्रियाशील एकता उत्पन्न हुयी। इस प्रकार की व्यूहरचना एवं सिद्धांत इस तथ्य की ओर ले जाते है, कि 2013 मे, एंटोनो मैरिनो, जो एक पुर्तगाली गोदी मजदूर थे और जिन्होने लिवरपुल के समर्थक आंदोलन मे अपनी सक्रिय सहभागिता निभायी थी, के नेतृत्व वाली सूची ने लिसबन मे यूनियन नेतृत्व का चुनाव जीता। शरूआत से ही, अंतराष्ट्रीय गोदी मजदूर संघ की पहचान राजनयिक शब्दो के परे अंतराष्ट्रीय एकता प्रतीक की सच्ची चेष्टा के रूप मे रही है, वह जो अन्य संघो में काफी आम है– जिसमे अंतराष्ट्रीय एवं स्थायी सक्रिय एकता हड़तालें, बैठकों के समान व्यूहरचना एवं स्थानीय और वैश्विक सम्मेलन सम्मलित हैं।

2013 एवं 2016 के मध्य, संघ ने एक के बाद एक कई हडतालो एवं संघर्षो को विकसित किया, जिसके कारण लिसबन के बंदरगाह पर पूर्व में अस्थायी मजदूरो को सुरक्षित रोजगार मिला। यह उस कानून के विपरीत था, जिसने पुर्तगाली वित्तीय संकट के दौरान, ट्रोईका (द यूरोपियन कमीशन, द यूरोपियन सेन्ट्रल बैंक, एवं इंटरनेशनल मोनेट्री फंड़) के निवेदन पर, बंदरगाहो को संकुचित करने की छूट प्रदान की थी।

1 अगस्त, 2012 को, पुर्तगाली सरकार ने नवीन श्रम संहिता को स्वीकृति दी जिसने सामूहिक श्रम संधि का परित्याग किया एवं उसकी जगह नए औद्योगिक संबधो एक नया प्रस्ताव दिया जिसने आकस्मिक श्रमिको की नियुक्ति की सीमा को खत्म करना, श्रमिको की सबसे अधिक योग्य वर्ग श्रेणी को खत्म करना, कार्य के घंटो को बढाना एवं मजदूरी दर को 1700 यूरो से लगभग 550 यूरो तक कम करना, एवं पदच्युति के प्रस्ताव सम्मलित हैं। संघ नेतृत्व ने स्पष्ट रणनीति के द्वारा प्रत्युत्तर दिया – उन्होने पदच्युत अस्थायी श्रमिको को स्थायी श्रमिको के हडताल कोष के द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान की एवं अंतराष्ट्रीय गोदी मजदूर संघ (आई.डी. सी) को फरवरी 2014 मे पूर्ण यूरोप भर मे हडताल का आयोजन करने के लिये मनाया।

4 फरवरी 2014 को, आई.डी.सी. की पहल पर, यूरोप के विभिन्न बंदरगाहों पर सभी श्रमिको को जानकारी देने के लिए कि लिस्बन मे क्या हो रहा था सभाओं का आयोजन हुआ। इन सभाओं के दौरान, सभी बंदरगाहो पर एकजुटता को प्रदर्शित करने के लिए कार्य को रोक दिया गया। लिस्बन बंदरगाह पर दो घंटे की हडताल का गोदी मजदूरो की विजय के साथ अंत हुआ। इस वादे के साथ के 47 अस्थायी श्रमिको को पुनर्नियुक्त किया जायेगा कुछ को पूर्व की स्थिति से बेहतर स्थिति में। अंतराष्ट्रीय एकजुटता की यह हड़ताल एवं जून 2018 में पूर्ण यूरोप मे रायनेयार हडताल, जितना हमें पता है, 2008 की विपदा के उपरान्त पूर्ण यूरोप मे एकता का प्रदर्शन करने वाली अंतर्राष्ट्रीय हड़तालें रही हैं। अन्य मामलों में, उनके देशो के संघो की राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रभुत्व रहा है।

मेरे विचार मे, 'डूरा' की हार मे, लिसबन गोदी श्रमिको की सफलता में, जो निर्णायक रहा, वह श्रम संघो एवं उनके राजनीतिक एवं श्रम संघो के नेतृत्व का उद्‌भव है। परन्तु यह निष्कर्ष स्वयं समझाने वाला नही है। प्रश्न यह है : कौन सी ऐतिहासिक परिस्थितियो ने एक स्थान पर अंतराष्ट्रीय कार्यक्रम एवं दूसरे स्थान पर राष्ट्रीय विचारधारा का निर्माण किया? इसका उत्तर देने के लिए, हमे हर विशिष्ट कारक की मामला दर मामला, विश्लेषण करने की आवश्यकता है।

> एकजुटता : सिर्फ शब्द नही

वैश्वीकरण ने विश्वव्यापी उत्पादन प्रारूप का निर्माण किया है – हम कभी भी एक दूसरे पर इतने निर्भर नही थे। उन्नीसवीं सदी मे, अगर एक कारखाने मे हडताल होती थी एवं मालिक उसे बन्द करना चाहता था, वो अपनी स्वयं की पुलिस – कुछ स्थानीय गुंडे को पैसे देता था। परन्तु उन्नीसवी सदी मे दमन न सिर्फ स्थानीयय था अपितु रोज का उत्पादनय कच्चा माल, श्रमिक, पुर्जे, रख रखाव, सभी या तो उसी कारखाने मे होते थे या आस पास होते थे। अब ऐसा नही होता है। कंटेनर वाहक का निर्माण दक्षिण कोरिया मे हो सकता है, जिसमे स्पेन की स्टील हो, फिनलैंड का इंजन, जर्मनी की स्याही एवं जिसे यू.एस. के विश्वविद्यालयो डिजाइन ने किया गया हो।

समय के साथ गोदी मजदूरो ने समझा कि युवा आकस्मिक श्रमिको का अस्थायी होना उनके लिये अल्पकालिक विस्फोटक हो सकता है एवं वे अपनी ताकत से अवगत हो गये। चूँकि जटिल समाज एक श्रंखला प्रारूप की तरह चलते हैं, कुछ समय के लिए इस श्रंखला को रोकना हो तो उच्च लागत के साथ सारा उत्पादन बाधित हो जाता है। इस प्रकार, पूर्ण देश को रोका जा सकता है एवं समस्त उत्पादन को उसके मूल पर लाया जा सकता है। यह सामर्थ्य सिर्फ परिवहन श्रमिको मे नही होती है। यह डॉक्टर, शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी एवं मजिस्ट्रेट मे भी समान प्रकार की होती है।

विश्व भर मे श्रमिकों के आत्म निश्चय के बढ़ते दायरे का संबंध, "समग्र रूप में" सामाजिक आंदोलनो मे अंतरीय आवश्यकता एवं संभावनाओं को पहचानने से है। पूँजीवादी संचय की गतिकी का विश्लेषण एवं वैश्विक बाजारों मे सरहदो का सामरिक प्रयोग को, हमे सच्ची अंतराष्ट्रीय कार्यप्रणाली की तरफ ले जाना चाहिए। इस प्रकार के अंतराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य, को पूंजी से स्वतंत्र, श्रम आयोजन के आधार पर निर्माण करने की आवश्यकता है। *Verba non sufficient ubi opus est factum.* सिर्फ शब्द काफी नही है ; उनके साथ ठोस कदम भी होने चाहिये। ■

सभी पत्राचार रैक्वेल वरेला को <raquel_cardeira_varela@yahoo.co.uk> पर प्रेषित करें।

> चरम दक्षिण पंथ का सामना करता हुआ पुर्तगाल

ईलीसीयो इसतानक्यू, कोइम्ब्रा विश्वविद्यालय, पुर्तगााल एवं सामाजिक वर्ग एवं सामाजिक आंदोलन (आरसी 41) पर आई.एस.ए. की शोध समिति के सदस्य द्वारा

लिस्बन में ट्रोइका काल में प्रदर्शन, 2012। एलीसिओ इस्तान्कयू द्वारा फोटो।

वर्ष 2017 की अपनी पुस्तक 'ऑन एक्सट्रीमिसम एंड डेमोक्रेसी इन यूरोप' में केस मुडे ने तर्क दिया कि लोकलुभावन उग्र दक्षिण पंथी दलो का मुख्य संघर्ष बिन्दु अपने ''मुद्दे जैसे भ्रष्टाचार, आप्रवासन एवं सुरक्षा की प्रक्षेपिता को बढ़ाना है। किसी आबादी में विशिष्ट हितों के अस्तित्व को नकारकर और एक भ्रष्ट ''अभिजन वर्ग'' के खिलाफ ''लोगों'' का एक अखंडनीय और पदार्थवादी धारणा को लागू कर चरम दक्षिणपंथी लोकलुभावनवाद राजनैतिक संस्कृति का एक समन्वयात्मक और ध्रुवीकृत दृष्टिकोण का नेतृत्व करता है। राजनीतिक अभिजात वर्ग पर यह आरोप लगाते हुये कि वो ''अन्य'', ''अजनबी'', ''अश्वेत'', ''जिप्सी'', या ''आप्रवासी'' का प्रतिनिधित्व करने वाले बाहरी ''खतरों'' को नहीं रोकते है, यह मतदाताओं को उनके खिलाफ संघटित करती है। घटती औद्योगिक श्रम शक्ति के संदर्भ में, श्रमिक वर्ग द्वारा अनुभव की जाने वाली पहचान में कटौती की जाती है, जिसके फलस्वरूप वे आर्थिक रूप से विशिष्ट हितों का दावा करने में सक्षम नहीं होते हैं, वह क्रोधित मनोवाद को उत्पन्न करते है। जैसा कि क्लाउस डोरे (2019) ने उल्लेख किया, यह वर्ग–विशिष्ट अनुभव, ''दक्षिण पंथी लोकलुभावनवादी खंड के गठन की सामग्री'' बन सकता है।

पुर्तगाल अभी तक भी यूरोप में एक विरल मामला माना जाता था क्योंकि वहां कोई फासीवादी दल या आंदोलन नहीं थे, परंतु अब यह शायद परिवर्तित हो सकता है। मैं तीन महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय आयामों की तरफ इंगित करूंगा, जो इस परिवर्तन की प्रकृति की व्याख्या कर सकते हैंः तानाशाही का लम्बा इतिहासय अप्रेल 1974 में कट्टरपंथी लोकतान्त्रिक आंदोलन एवं सामाजिक असमानताओ की जड़ता के साथ वर्ग ढांचे को निरंतर पुर्नसंरचित करना।

> ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

''एस्टाडो नोवो'' शासन, जो आधिकारिक रूप से 1933 में स्थापित हुआ था लेकिन जिसका उद्‌भव 1926 के सैन्य तख्ता पलट के दौरान हुआ था, के एकीकृत रूढ़िवादिता के तहत जमीनी श्रमिक वर्ग आंदोलन, 1910 में राजतंत्रीय शासन के गिरने साथ शुरू हुआ था, आक्रमण का मुख्य लक्ष्य था। 1920 के दशक के दौरान रिपब्लिकनों, समाजवादीयों एवं अराजकतावादीयो द्वारा उनके पुराने विशेषाधिकारों पर हमलों का बदला लेने के लिए कैथलिक चर्च के साये में, सालाजार की नैतिकतावादी धारणा ने लगभग चार दशक तक विपक्ष को उत्पीड़ित, गिरफ्तार एवं कष्ट पहुंचाते हुये एवं लोकप्रिय वर्गों को सजा देते हुये देश को शैक्षिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं औद्योगिक रूप से पिछड़ा रखा। दमनकारी उपकरण एवं सेंसरशिप के बावजूद, यद्यपि, 70 के दशक के प्रारम्भ में मुख्यतः पुर्तगाली कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रभाव में एवं कुछ प्रगतिशील सेक्टर के चर्च से जुड़ जाने के कारण कुछ हड़ताल की कार्यवाहियां उभरी एवं गुप्त यूनियन संरचनाए समेकित हुई। अफ्रीका में औपनिवेशिक युद्व एवं 1960 के दशक में लिसबन, कोइम्ब्रा एवं पोर्टो में छात्र प्रतिरोध, जिस पर विदेशी प्रभाव भी था, ने अंसतोष (विशेषतः युवाओं में जो

>>

युद्व के प्रथम शिकार थे) को बढाया, जिसने देश में लोकतंत्र के आने की आशा की किरण को फैलाया।

कप्तानों के एक समूह जिन्होंने युद्व करने से इंकार कर दिया था एवं जो लोकतंत्र एवं अधिक विकसित देश के लिए लड़ते रहे, द्वारा अप्रेल 25, 1974 का सैन्य तख्तापलट, महत्वपूर्ण था, परंतु यह लोकप्रिय लामबंदी (हड़ताल एवं व्यवसाय, विचारधारा बहस एवं गहरी राजनीतिक दरारें) का अगला चरण था जो लोकतंत्र का एक महान ''स्कूल'' बना। यद्यपि लोकतंत्र एवं नागरिक गठन वाला यह स्कूल विरोधाभासों भ्रमों एवं खुले संघर्षों से पूर्ण था जिसमें ''समाजवाद'' विवाद के केंद्र में था एवं ''फासीदवाद'' की नामंजूरी मुख्य एकीकृत कारक था। फांसीवाद विरोधी एकता, ने वामपंथियों एवं समाजवादियों के मध्य संरचनात्मक नफरत को नहीं रोका, ऐसी नफरत जो 2015 तक रही एवं जरइनगोनका (यंत्र) नाम की संधि के आगमन से जिसका अंत हुआ।

> लोकतंत्र का अपक्षरण

लोकतंत्र के 46 वर्ष एवं इ.यू. (1986 में) से जुड़ने के 35 वर्ष पश्चात, देश ने महत्वपूर्ण सामाजिक एवं संस्थागत प्रगति दर्शायी है। राजनीतिक क्षेत्र में, सरकारें सदैव संसदीय एवं केंद्र–दक्षिण पंथ (पीएसडी एवं सीडीएस) एवं केंद्र–वामपंथी (पीएस) दलों के मध्य झूलती रही हैं। सी.डी.एस. (सामाजिक एवं प्रजातांत्रिक केंद्र, जिसे ईसाई लोकतंत्र ने प्रेरित किया है) मुख्यतः संसदीय दक्षिणपंथी दल का प्रतिनिधित्व करता है। उसकी चुनावी अभिव्यक्ति 1976 में 16 प्रतिशत तक पहुंच गयी थी (दल के संस्थापक, उदारवादी नेता फ्रीटास डो ऐमारल, जिन्होंने अपने अंतिम वर्षों में समाजवादी दल से निकटता की, के नेतृत्व में) परन्तु इस दल ने अब अपना वजन खो दिया है एवं आज वो 4.25 प्रतिशत पर है।

सालाजारीवाद एवं अज्ञानजनभीत के संदर्भ में, सबसे उग्र विमर्श, अब तक कुछ लघु समूहों तक ही सीमित कर दिया गया था –2000 में स्थापित (लघु उग्र समूहों का विलय करके) पी.एन.आर. (नेशनल रिनीवल पार्टी), जो कभी भी 0.2 प्रतिशत से आगे नहीं बढी और जिसे हिंसा, अज्ञानजनभीत और अवैध रूप से हथियारों को रखने के कारण अदालत में भी ले जाना पड़ा, और मारियो मचाडो, पी.एन.आर. असंतुष्ट, जो पूर्व में अज्ञानजनभीति का आरोपी था, की अगुआई में 2014 में स्थापित न्यू सोरल आर्डर। अगस्त 2019 में एक सभा, जिसे पूर्व में ''पुर्तगाल की सबसे बड़ा राष्ट्रीय घटना'' के रूप में घोषित किया गया था, ने कुछ दर्जन लोगों को एक साथ लायी, जिसमें यूरोपियन नव–फासीवादी दलो के प्रतिनिधी भी सम्मलित थे। जिस होटल में बैठक हो रही थी, उसके दरवाजे के सामने हजारों की संख्या में कार्यकर्ताओं द्वारा किये जा रहे जवाबी प्रदर्शन का विषय वह बैठक थी।

जैसा कि हम जानते है कि, ई.यू. के राजनीतिक कार्यक्रमों ने, पुर्तगाल में अपने सकारात्मक प्रभाव के बावजूद, वक्त के साथ अपने आप को नव उदारवादी पूंजीवाद एवं मौद्रिक संघ के अधिक सामान्य अभिविन्यास के आगे समर्पित कर दिया। इसने देश की अर्थव्यवस्था में काफी गंभीर गड़बड़ पैदा की हैं। हाल की विपदा में, सामाजिक असमानताएं बढ गयी और उनके साथ अनिश्चितता, निर्धनता एवं सामान्य मजदूरी की दृढ़ता (2018 में औसत वेतन 2008 के स्तर पर आ गया) बढ़ गयी। मध्यम वर्ग एवं कामकाजी वर्ग के बड़े तबके की अपेक्षाओं में भारी गिरावट के आने से, पुर्तगाली समाज परित्याग एवं मूक नाराजगी से भर गया एवं वो धीमे धीमे राजनीतिक क्रिया एवं समितियों से विलग होने लगे। इसे संसदीय चुनावों में चुनावी अनुपस्थिति के बढते स्तर में देखा जा सकता है जो 1976 में 8.3 प्रतिशत से 2019 में 51.4 प्रतिशत हो गया। असुरक्षा, अरक्षितता एवं भय ने, सामाजिक शक्ति एवं अवसरवादी नेताओं के प्रति सम्मान की पूर्ववृति को अग्रेषित किया जिसने दक्षिणपंथी लोकप्रियता के फलने फूलने के लिए सबसे ऊपजाऊ जमीन प्रदान की।

> लोकलुभावन खतरें

इस प्रकार, पुर्तगाली लोकतान्त्रिक जीवन लोकलुभावन कथानक से बचा नहीं है। राजनीति का मीडिया कवरेज, सनसनीखेज पत्रकारिता, एवं टेलीविजन हस्तियों की बढती हुयी लोकप्रियता (कुछ की मनोरंजन क्षेत्र में व्यवस्थित उपस्थिति के कारण और/या जैसे कि फुटबाल विमर्श कार्यक्रमों में) ने इन में से कुछ नायकों को पहले ही राजनीतिक लाभांश प्रदान किया है। राष्ट्रपति मार्सेलो रेबेलो दे सोसा एक अच्छा उदहारण है – जिनका दस वर्षों से अधिक समय तक एक टेलीविजन शो था और उन्होंने पूरे देश में व्यापक लोकप्रियता हासिल की। आज चरम दक्षिणपंथी लोकलुभावनवाद के सबसे अधिक विवादास्पद समर्थक में से एक, आंद्रे वेंचुरा (यूरोपीय संसद के उदारवादीयों से सम्बद्ध पीएसडी, द सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के पूर्व सदस्य) प्राधान्य राजनैतिक स्पेक्ट्रम के केंद्र से उभरे हैं।

लिसबन के बाहरी क्षेत्रो में नगरपालिका के पार्टी उम्मीदवार के रूप में, जब उन्होंने पुलिस हिंसा के साथ रोमां समुदाय से लड़ने का प्रस्ताव रखा और यह दावा करते हुये कि समुदाय आवश्यक रूप से हिंसक है, अनैतिक क्रियाओं पर जीवनयापन करता है और सार्वजनिक संसाधनों के खर्चे पर सामाजिक नीतियों से लाभ पाता है, उन्होंने रोमा महिलाओं की नसबंदी कराने का वादा किया, तब उन्होंने दृश्यता पाई। तत्पश्चात, उन्होंने पी.एस.डी. छोड़ दी एवं पिछले चुनावों में उन्होंने एक नवीन पार्टी जिसका नाम ''चीगा'' (''एनफ'' जिसका 2019 में वैद्यीकरण हुआ) था, की स्थापना की एवं जिसने संसद के लिए चुनाव लड़ाय एवं वे 1.3 प्रतिशत वोट मत प्राप्त कर एकल डिप्टी चुने गए। वेंचुरा की पार्टी को पुराने कैडर एवं विचारकों, जो सालाजार के लिए आतुर हिंसक नव– फासीवादी ताकतों एवं समूहों के समर्थन के लिए जाने जाते हैं, का समर्थन भी प्राप्त था।

राष्ट्रवादी, अज्ञानजनभीति एवं आप्रवास–विरोधी विमर्श, अब उग्र हो गये है एवं राज्य के विरूद्व उग्र एवं नैतिक भाषा ने लोकतान्त्रिक नियम एवं संसद की गरिमा का बारम्बार अपमान किया है। ''चीगा'' शाब्दिक गुरिला जंग को बढावा देता हैं एवं राजनीतिक अभिजात वर्ग के विरूद्व निरंतर जुल्म के रवैये को बढावा देता है। ससंद में उपस्थिति के कारण मीडिया कवरेज में वृद्धि के साथ, के साथ ही, सबसे नवीनतम जनमत सर्वेक्षण (एक्सप्रेसो/एस.आई.सी.पूल, 14 फरवरी 2020) अभी से ही 6 प्रतिशत तक वोट देने के इरादे की तरफ इशारा कर रहे हैं। वास्तव में कुछ चिंता में डालने वाले ऐसे संकेत हैं, जो इशारा करते हैं कि पुर्तगाल को नव–फासीवादी दलों की उपस्थिति के संदर्भ में एक अपवाद माना जाना अब बंद होना चाहिए। ■

सभी पत्राचार एलीसिओ एस्टानक्यू को <elisio.estanque@gmail.com> पर प्रेषित करें।